॥अथ॥
॥भावनाप्रकास॥
॥द्वितियविश्राम॥
॥प्रारंभः॥

सीताराम रहस्य चन्द्रिका (भावना प्रकाश)

॥श्रीरामचंद्रायनमः॥ अथश्रीसीतारामरहस्यचंद्रिकांतर्गतभावनाप्रकाशप्रारभ्यते॥ छंदमंदाक्रांता॥ सेवेमांसीतां
१ कमलवदनांसुस्मितांसौरसांगी। तेजोरूपांनयनसुभगांभूषणानस्रषयंती। रामंस्यामंबुजदलरुचिंकोटिबालार्क
नासं। सीताकांतंनिखिलसुखदंप्राणनाथंनमामी॥१॥ छंदआर्या॥ श्रीसर्वेश्वरीसुखदां। सहानुजाम्बचारुशीलांवे। ली
लावद्धामिनित्या। तदाज्ञयासीतापतेश्च॥२॥ छप्पै॥ श्रीसीतापियपरमनचरनपदुमनसिरनांई॥ सकलअमंगलमू
लनासकरतोजसगाऊं॥ श्रीसर्वेश्वरी। चारुशीलपदजलजपरागा। वंदतनारदअजगणेशशिहिपुतअनुरागा॥ सुचिसोमसरू
परिसिकसिकरियुरुअंघ्रिनधरिसीसधर। तवअष्टयामवर्ननकरौंमभवरप्याप्रदेसवर॥३॥ अथयथाज्ञा॥ कुंडलिया॥ श्रीमतरुरुआ
युसदईकरहुभावनारीति। पदनिबंधसंदेपतैजामैंबाढैप्रीति॥२॥ कहौऐसीविधिगाई॥ सोआज्ञासिरधारिहारिहियकीजुमिटाई॥
ममभगतिअतिसपअरसरहसिकीरीतिजु। उल्लतपैतिहिपरिहैपारनईवानीसोहिश्रीमत॥४॥ ऐसीविधिहियमेसमुझिमनअवलं
वनदेपकरूरीतिसंक्षेपकरुसुरनरमुनिजनधेय॥२॥ श्रेयमंत्रहारतपामेंकाकजुसंडहईज्ञवरुणसुरगुरुजजामैंमुनिअासस
लेआदिवादिजाननतपाविनसिधिरूपसरसकिंपुरषपुरषा ऐसीविधि॥५॥ छप्पै॥ जवनचतुर्दसदिव्यलोकजेब्रंहृविशार
द॥ नेईहिंरसमैमग्नआदिलेसंकरनारद॥ ऐसोअनंतध्यानकहैसोसुनुमनलाई। धामरीतिसोप्रथमप्रकरणेहिकहीबु
झाई॥ सोमूलमात्रअवरुकहुंचित्तरहनकेकाजअलि। अरुरूपसरसपुनिभावनांवरनंसहितसमाजअलि॥६॥

वरय

॥ ६ ॥ चौपई ॥ प्रथमसकलचौसठिअलिमानहु दुतियमांझबत्तीसप्रमानहु । कोटनीमैंरैसोड़सभ्रा
जेचौथेअष्टमुख्यसोराजैं ॥ सोरठा ॥ रितुओरितुअनुकूलकहांपांचवैषैरुदषण ॥ आठकुंजसुषमूलछट
येमैंमध्यान्हतक ॥ ७ ॥ चौपई ॥ मध्यअनंतमहलअरुकुंजैं ॥ बागअनंतपक्षिगणगुंजैं ताकरअंतनपांवहि
वेदानेतिनेतिकहित्यागतपेद ॥ ८ ॥ सिरसहस्रलुतुरीअरुवाला नयनसहस्रकरोषासगला । पदस
हस्रतिहिथंलअनंता निसदिनइहिविधिवहतनंत । ९ ताकोपारकवकुनहिपायो ध निरासिकहियमांझ
वसायो । स्निग्धसिस्पलपिकरहिप्रकासा ॥ नितिप्रतिविहरनमात्रसमासा । १० ॥ दोहा ॥ चंद्रअलीजूजिमि
कहीकुंजकेलिवत्तीस । आठचाह्यपुनिआठमहिषोडसमिरिजाठिसरसिकअलीस । ११ गुरुआसुसवसु
कंजकीकेलिकहौंअवगाय । सियासिवावरलोवनोंरहैमदानरछाय । १२ ॥ मंगलस्नानसिंगारओसत्नाम्र
सनविश्राम । राससयनयेजानियेअष्टकुंजकेनाम । १३ ॥ चौपई । रंगजवनइहिविधिमेकहैजजिहिंविधिर
हसुषनेरोगहेउ ॥ अवकहौंरीतिजाववंजेसीहृदयधारनामैंरैतैमी । १४ ॥ दोहा ॥ कंदचतथैपूर्वदिशिरचन
अमितप्रकारचारुपीलकीकुंजसोतांहिमकुंजअपार । १५ ॥ कुंडलिया ॥ कुंजैसवकीलसेदंपतिकु

वसु

सिं॰र॰ चं॰ २ जसमान। चारुसील अनअजामकलसिपवर जिन के प्रान। सियवर जिन के प्रानजगी निसिघटिकाछै लषि
ह्लानमाजसो आइकरणवतमोचन निजमाषि। नवटनादि अँगकरत [illegible] अनुचरिपुंजैं मध्यवा
गमरसो ह चतुर्दिपूर्णै वपुकुंजै १७ परिकर दइनहाई कै वस्त्र विलषन धारि। नषनें लेसिपतकनी।
सियजू के अनुहारि। सियजू के अनुहारि रूपगुनमाऊ सषी सो अपनी सों जमुषधारि। सों जसवपासल
कै रु षी सो रूपसरम [illegible] वनि रूपलतनिकमाँगर। चारु शील पदवंदि सवेहमीजुतपरिकर। १८। दो॰ सजि मे
सिंगार आइ सवे श्री सदैंखरि पासि जिन लषि सो मुषपाल वटि चली रूपरसरासि। १९ निज २ सिवकाचढि
[illegible] चली ताकी अनुजा हंद सयनकूं जपकु श्री सदै नयोपमें आनंद। २०। सवैया। मध्यसिया पार [illegible] राजमोव ध
नरतिमन्मथ जपी वाहर सषी समाजनू पुरगतिपुनि वाद्यधुनि। २१ गावत:नेरवराग जेगावन वित्सह
चरी। चारु सील संगला गगइ मांऊ सजानि कट। २२ राग भैरव चौताला गावत अली जन परदनवाछ
र। केन जावत दंपति डिग मंद २ गति चलत नाग वत जानै हो पन जाहर। २० मदुल करनतैं वरन छुवत है
नाथ तनैनन उरजन माटय। रूपसरस लषि [illegible] की है सषी सव मेटत निसि विरहादर। २३ ता॰र वो लततंगागा
ख

जो

नमधुरीबानी। रत्नजटितपिंजरनमैं। उठकूलाल जागादुमिपवलननागारवरमुषदांनी। २३। कोटिन्हनंतम
षीजुरिन्हआडंदरमनहित अकुलानी। रूपसरसमुखदेखोचाहतनाहितु जीव। निहांनी। २४। नालदादरो
कालिंगडो। वना जीयेजागो छैल विहारी। मंदमंदमुस्कायसवनदिपिचितचोनेकनिहारी। टे। अलसानें
अरुनारेनैनालपिवद्दां वलिहारी। रूपसरसमुनिवचनपतकपियकछुकपुलीरसकारी। २५। सिया
रूपोनतौनिपिया। लछिमधसुमकरतअनूपमपीनमछविछकिया। टे। चिवुकनतरेकरदिपैंहियेलगि
अधरहेतुढरिया। रूपसरसरंगान [illegible] री प्रियासेकहतवचनर [illegible] या। नेना किनसो प्रांनपियारी। दषि
चंदमुखमंददीपनगवैनदहे [illegible] मारी। टे। अमितनवलिनफूलननचाहतमनु लषिअलसानितुम्हारी
कहिकहिवचनअनेकजुगतिनपीवतअक्षरसुधारी। पहिरावतताटंकश्रवनमें अलकसवारतकारी।
रूपसरससियाजागिपरीलपिलाल [illegible] हेतवलिहारी। २६। जगेदोउ आलसवसरसलीनें। नैनकेनरमें।
ध्यानलालकोलालहियेसियलीनें। टे। प्रीतमहैं [illegible] मकहतसियाजू प्रियाकहोमैंपानैं। अरस्परसमसिं
गारकियोमवनी [illegible] सुषिवुषिनेकरहीनैं। नघामघसियकेपियकेसोनितपि यकेधारेतीनें। दगल

रवा

बाहु मसंधि जु कै पहरू पसरस छवि कीनें ।२८। राग ललित तिताला । करत सषी हास्य सरस रस नि । आजु नये पिंतु ष
२ मवाई जू । सिपजू पीत मठानि । दर्पन में निरषत वैइन कूं । नैन छवि इन चित चानि । निज छवि लषत आतन हि
मन मैं गरस नेह अधिकानि । कोनत छटा वनाई ऐसी आरस परसक हलानि । रूपसरस प्रिया अधर पीत चषसी
चिकह्यो करो कांनि ।२९। वोलनि अलिनी की जनक ललीकी । अवलोकरत पियमन चित दीनें । महि त्व तुरना
नीको ।टे। निसंक तकहत छिपात कुल न कलु तुतरां वनिस कुची की । रूपसरस लली लाल चंद्र मुष पेषनि वो
रनि हा की । मुषधु पायमं गा लदि षा पद धि दुवां कु रहर दाकी । रूपसरस नी रंजन करि छवि दिदेषि कह नमवजी ।
की ।३०। दोहा । नारद चित्र अलिजनन की कर जोरे इक वाल । नहिं दंपति गावने तुरत संग सहचरी माल ।३१। आ
षे मंगल कुंज मैं रद मंजन के काज । चोकी आ जे मुष मुष करत सषी लिये साज ।३२। राग भैरव ताल जत्र । सीता
राम करत रदमंजन । सुर नित हरि तदाह कोमल मुखि मुष मुषमद दुषकार नगंजन ।टे। दान देत सषी मुनिज
वतिन कूं मंगल घट साजत मन रंजन । रूपसरस जी नीहार कमषष्ट । गंडूष वरि कर कंजन ।३३। इकताल आ हु
च नंत मधुपर्क लोगापीत मन अरु प्यारी । [illegible]
मुरवसो धन मात्र पहै जान हुदु चिकारी ।टे। दधि चीरफल कप्रा दिक २

पूरि तद्दरसं ही। अर्पत कृत यथा सरवी जन पट पर सांही।

ई, प्रात पाह

[illegible] वीरी पुनि अत्तर लेद र्पन मुष देषेत। सजि समाज त्राजत तनये कु सम
सेन पेषेत। सहचरि गन [illegible] आई रूप सरस आरती सजि परदा वंध वाई ३४। रागपट। मंगल आ ।
रती सिये रघुवर की। करत सषी जे निज परिकर की। कनक थार सजि अष्टकोण सषि वस्तुक पूर वाती नाकुर
की। टे०। जगमगजोति होत नगगन की सो नावारि पात्र छवि धर की। समगि श्च्व सरात च्यारि पद दैक टिसिर
इक मुनि अंगवर की। तन आनध घन सुषि रवाद्य वक्र वाजत सु नि नपरत निज परकी। रूप सरस जागो सुनिवा
ना आई सदन कुंज पुर धर की ३५। मंगल कूजत पी तमणि मय सो मंगल आरती की नी अलियां। मंगसाजस
जे वकु विधि संस्वस्तिक धूप दीप ऊ लस लियां। टे०। मोतिन चोक वारि पूरित घट पत्र रसाल दुरसड लियां।
वंदन मालि पीत चूर णसषि मंगल गावत रोपि कदलियां। मंगल रूप अवधि सर जू निज धाम रीति साहि।
सम्यक लियां। मंगल मैं मंगल निधि जोरी रूप सरस नृप लाल सलिलियां ३६। दोहा। मंगल कुंज विपुल नवि चि
त्रे दिशा निकुं जै सोहि। महिन चार दयछ तलगी पीत मणि न कृत जो हि ३७। भमन परस्पर जानिये स वकुंज
न के माहि। पुलिक पाटन वज्रा न है। चलें न्नान की नाहि ३८। उपरि नीचे चढन कूं नालि वी विस वकेरडहि वि
षि कुंजें जानिये वसु संख्या चढ़ फेर ३९। निजरि वाग मध्य जानिये परत नडंश्शेत्ति हि पांच पुनि विहार नाकोल

सि॰ र॰ बे॰ पंकज उदय समय अरु सांझ। ४०। राग बिलावल चौतालो। मंगल मदन सनातन ईहरी नागरि जु रिमुजरा हिता।
आवत। मानुम करि कै चौवदा रजे अपने रथ लै ढावत। लषि रूप अनूप जुगल को सषियां मंद २ मुसकाव
त। रूप सरस रस माते दोउ रति मनमथ सत कोटि लजावत। ४१। ताल। आज सिय राम मंगल सदन आजि कै
अंग अंगन सानि वक्र नारि मोही। जासु को चित्त अंग अंगनि सै नगि गयो रहि गयो लौं नसें डिग न सोही। ज्यों नगों अं
कम सि के मन कु पत्र पै॥ टरत हैं नहि पथा तथ्य सोही। जान कौ आर्त्त वधे सनंदन जसो रूप सर सतन पो
हे न होही। ४२। राग पावता। जानकि वल्लन ध्यान हमारे जानकि वल्लभ प्रान पियारे॥ जानकि वल्लभ मानत
ठानत जानकि वल्लभ विन न चारे। टे। जानकी वल्लभ जीवन धन मम मन क्रम वाणी होत न न्यारे। जान
की वल्लभ जी जानत हैं रूप सरस नहि आन निहारे। ४३। अकताल। नकत कपिंजर न माधि नव घागानत [illegible]
राजत सुरक्त आगे ठवि पावत। दंपति देषि २ पुलकत हैं सो निज पतिन लषि वैन सुनावत। टे। सषि जन हास्य क
रत पुनि तिन से पिय प्यारी सुनि हसत हसावत। रूप सरस इहि विधि ब्राजे न तहां सषि गावत बाद्य बजावत ज र
स ४४। दोहा। ध्यान कुंज की बेर लषि सजि हैं बरि सुषपाल। ब्राजमान दंपति कियें संग सषिन की माल। ४५।
निज रिवास विहरत सुघर पूछत रंग सुगंध। पकुचे मंजन समालन दोउ दीने नत वनु जन कंध। ४६। कुंजरीति सो जान ४

र हूंईवि चिलसत हमांस। सीतल जल मनु पतरे कुंड मध्य अभिराम। ४१। नतरदछ्वि नपरस्परस्नानकुं जैहें देषि
त्ति मिसि गारहू जानिये लली लालके लेषि। ४५। स्नेहा धिक प्रजावसे स्नानदेस कंठ रस लका लजतरआ
ढि पुनि सीतजढ षितन्ध्योर। ४८। मध्यतिकुं जलमें लसे नवरस माजन्यनूप। मेला द्वैज्जलिकरतहे लषिमन
ऊ मोहनरूप। ५०। सरपरदा तानाल अ नवटनूं लगावें दंपतिके। रत्नजटित चौकी परिबैठे लषिरकैं मुसकावें
टे। अरसपरस चूरनका सुगंधी लावे। रूपसरस अंगमीडत सषियां नरन मंजन हिमावें। ५१। स्ना
र नकुंड मधि आये सुघर दोउ। नाति प्रजंत नरोजल सुनित विच चौकी परछाये। टे। सषी नहात अंग लषि
मोदित करत चाव मनतापे। रूपसरस अंगोछि पट कोमलक छुकवसन पहराये। ५२। वारसनी सर होत दोहा॥
हे मल्लकन्जारि लौं स्नानश्रम विलोकिश्रहू वारयन तातें कीनवषांन। ५३। चौपई। तापन पजरवितेलग
मसि ये सोना ... पैति पहिन जाये। मंगल मत्य बुध बुधि दाता। पैनहिलावत ... नितजगातो। ... दुपसुक्र
हिमौं तें। मंदद दुकुल कूं सुषप्रद जानौं। तातें मल्लक ... हिदिन षोले। नर तमसाले धौ पअमोलैं। ५४। अगार
धूपकी नरी अजी ठीकं धलौं चौकी परि धरि पीढी। पोस धवेताताप रमयजाली। चिकुर सुखाये तापरडाली। ५६ दोहा॥
अतरताप मगा मदहंये नपिपके निजकर सी प। मांग काढि नाधे नयथा तथ्यारहा ... । ५७। रागभैरवी

श्रीपचौरी

॥ अलन काल मैं जानि पैठ डाई व्हालत ॥
॥ रूप सरस रितु सीत तो मोद करी तिस हेत ॥ ८ ॥

सो०२० बे० ५ तिनालों भूषत वेनी राजदुलारो ॥ श्री नृपनन्द को प्राण पियारो ॥ लेक कही पुरसी पर राजत तो की राज
ली हू निहारो ॥ ८० ॥ अंतर लगावत मगदद केपार रचि सिंदूर मांग मे ॥ मोतिन लर वक्र तानि सवारी लसी
कुंभ की लोर ताग मैं ॥ विचिर मुक्त कुसमन की रचना करत अतो पीहितन आवे ॥ रूप सरस गुणासी लप्रि क
या लपिला डलडावे अगम नावे ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ अर्द्ध चंद्र समसि विंदु घोरि केसरी ठानि दुकूल लिलाट सो चितक श्री
ढुक वसन विलखन जानि ॥ ५९ ॥ [illegible] ती पिय प्यारी ॥ [illegible] मदहारी वकु त
[illegible] ॥ ८० ॥ [illegible] हतीक पनि
[illegible] ॥ वेस कुंज की नागरी परी जो रिक
ल आइ देषत ही दंपति चलै संग सषी समुदाइ ॥ ६१ ॥ वर्णन सोहत पादुका अलके रत्न कतन अमगल वे पांद
वल निपे मोहितकुं जरहंस ॥ ६२ ॥ नैरवीर घना तालहूपक ॥ करती सिंगार रहे ॥ सिय सां वरे विहारी दा ॥ पुरसी
विछाके सामने ॥ निर्षत नदा रहे ॥ ८० ॥ सषियां षडी लिये वे स की घूमें अपार है ॥ गहि हाथ पीतम को पन्हा
वति जो विचार है ॥ पायजामन लला मन आगर षी बहार है ॥ सिर पे लगी गति छैल की पगाडी सुठार है ॥ २ ॥ डुपटा
छटा मन मोहनी मो नीकना रहै ॥ सवचसन मैं तनि का समसा है जरी तार है ॥ ३ ॥ पद पल्लव निछ वाद पेप

कृ

गपानन्पारहै।झंझरमरैटीकसाकिंकनिहणल्कारहै।४।कंठाभरणावकुलेतीतिकेमणिजडितवारहै।नासी
ग्रपंतसुहाववेनेलगिपदिकहारहै।५। यज्ञोपवीततनुजांनमेंनुजवंधजारहै।पहुंचीकउभदरीजरीअगुरि
नमकारहै।६।वुहनाकुंकुंडलकेकिवनै।कडिकेलदारहै।किणिपेचंनैकपंसिरपेचमारहै।७।फतेचांदल
गाडनुरीठरकतारहै।।मोतीजडजजरिनकीकिलगीझुकारहै।८।सीसदुकूंदिपुफविरहीलरमोतिना
रहै।अत्तरजरीन्मलेकपोलननसप्पोकारहै।९।वीरीविहसिमुखमेंदईदरपनधुलारहै।लखिरूपसरस
मुजंनकरिवलिवारवारहै।६३।प्रियकेवनावते।सिंगारअपनेहाथपिय।वुरखीलसेनिजसाम्हनैना
पेवढावते।१।मखिपांघडीमवसांतलेमुनमेंजोचावते।पाटछुटअल्हादसांजेहगापन्हावते।१।कंचु
कीकुरतीअसितसारीउढावते।मणिजरीकेकांमतेमवफककाचते।२।अंगुरिनलसैंविछियानप
रिपगपानछावते।पाजेवपायलमरैटीकडिपांमजावते।३।छुद्रघंटीकटिनमेंजेपमद्गावते।कंठाजड
नहामरेवटाझिलझिलावते।४।दुलरीतिलरीपंचलरमुनिलरीलावते।चंद्रहारसुवंडमणिमेपसोलाप ।
वते।५।वछिकामोतीनकीचिचिशलावते।अन्नगोणादुकूदिशणतमहिझुकावते।नवरत्नगजमणिरबा
मालनिरचरावते।वाजूवटन्मोडालवंगडीमणिकुरावते।७।हरीचुरियांवंधपुतकंकनीअगावते।नौ

करत दृह तसिंगार, प्रादि कै सोवा सकल सवि
यहां नेहकम नपार ता तें वरन्यो परस्पर ॥

सी०र० चं० गारी मोतीनकी मणिपूंछि छिढांवते। हथफूल मुंदरी नाक नथ्या सरवं जिका वते फूल झुंमक मध्य विंदा मागा
६ जावते। ६१। वेनी लौं कुसम सतरावके वङ्क विधि गुंथावते ~~[illegible]~~ मार पटा दुकुरि एणा कल्लाकुचावते पटीउ
अग्रसो कूनपै [illegible] निसावते मचवी चिपि पुत छिद्र [illegible] मो लैर फूलना [illegible] वते ६२ ना छिङ्ग मे अनुसार हा
रविसधि चि [illegible] कवकुक लगावते। जाल मोतिनको कुलहि इव कंचठ कावते। ६३। श्रवनमै झा लरो झल्कन अतर
नावते वारीह ईआनन विहद दर्पन लखावते। ६३। जंत्र मंत्र अनेक करि द्रष्टी वचावते रूप सार समुदे धिनि
जनना गहि मनावते। ६४। दोहा या विधि ते सिंगार नयो परस्पर नेहतें। लखि सपित नमन वारजे प्रवीण उ
हि रीति मैं। ६५। [illegible] सबु जिनपे पानि
[illegible] ६६ चोपाई। वल्लरी ति अवक होंव पानी। निति संकेत हेत सुपदानी। कंचे आरुन नानु दिन मानो मंगल
पकेरज कवषानों ६७ हरित वसन बुध दि[illegible] मनहारी। पीत अहनि गुरु केरु चिकारी। सुक्र [illegible] मन मो गुलह
हे पुनि कृचित न सपन श्वेत बनो है ६८ मंदवार कूल रंग मुदेसी। नील वसन वा चीर कुके शी अवसुनु चंद्रवार जो वांसी
रहे नति हि दिन मन मानी रुचिक हेत ६९ धरि कौ प्रेप अहन रंग लहंगा। आगि यां गुलह वांसि रंगा महं गाकु
रती हरित रंग मय आजे। साढी नील घरा जनु छाजे। ७०। नूपन विविध जटित मनि हीरा। पीतांबर धरि ६

श्रीरघुवीर। पंचरंगमयमस्तकचीरा। पामडुपटुरंगमसमीरा। ७१। चंद्रमणिनकेसुंदरभूषन। इहिविधि
लषिरचनांनिरदूषन। वसनरंगसोऽनुवनदेषो। सोमसुरुकेदीपवारनलेषो। ७२। दोहा। इहिविधिजोसंके
तकरितोनउलैफिरिचित्तमनमानीऽकसारकैरवे। लगोवरनिम्र। ७३। सषिजनझारीलाइकैंकरधुपाइदै
नाइ। हेतकलैवासीनमजिनिरषतसुषहरषाइ। ७४। सिंधीनरवीजननदनिताली। करनकलेवामिलि-
पियप्यारी। कुरुदिसदंपतिराजतविचमेंस्वर्णकमलछविदेवा। १०। तापरथालविपुललषस्योऽकपाय
सविविधिधरेवा। सपियनकूं निजहाथयासंदेतिनसेंआपकलेवा। १। सीताराममपरस्परजीमतलषिछविमो
दनलेवा। करिकरिआरोगेतछवीलोसमातुजनचनकेमेवा। २। नात्मत्परसञ्चयकरसीलेइहिंविषिजोजन
तेवा। रूपसरससरजलसुरजितअंचवनकीन्हेंदेवा। ७५। पुरसीराजतप्रीतमप्यारी। पदकरपलनष
धीप्रेमकरिवीरदिनमंवारी। १०। आनतरतगायकुसमपहिरावृतवोलतमुषवलिहारी। सर्वअंगदर्पणकध
रिसन्मुखमुकरमहाछविकारी। १। महत्त्वरिसोप्रमादलेआइ। सोमित[illegible]नइचतुधारी। रूपसरस। लषिमु
दितनईनीराजनकरतनपारी। ७६। आरतीसंगारकरहिं। नमगिरअमरानपरहिं। रत्नजरितनवथारकी
पावसु। वातीअष्टकपूरधरिहैं। ८। नगमगजोतिहोतितिनगगनकीजघिनारविस्मैसकानिदुरिहैं। पुनिप

सी॰र॰ नं॰ हकाचमहल है तातें। मनु नीत नि मैं दई चित्रीहैं॥ जुगपद जुगल कटी ससि मस्तक मुनि सब अंगन वाक्षा चुरी है
७ रूपसरससिंगार नवनमें रची [illegible] सुभिनारि जुरी हैं। ७७। सज्या कुंजन नागरि जुरती हैं। निज [illegible] विनि दौं र
ति मुरती है। दंपति दरसलालसा वाढी आवत छवि देषनें ती है॥ ७८ करत वात वकुल्या वों परस्पर करि रस्या दि २
जुगल मुरती हैं। रूपसरस नरनागपद जा पुन्य सुता गंध्रव सुरती है। ७५। सोरठा। सुनि के तिनको सोर पूछत
दंपति हे कहा सषी कही करजोर। सुनत तें हगति उठि चलेत। ७९। दोहा। गजवर ता ज्ञै चाल लषि जये सपांम
इहि है। ति निज कर राजत सीस रज दीनत ये धक लेत। ८०। जुजा परस्पर कंध दे लीनें सषि गन संग मनत कु साथ रि
तुराज के आये रती अनंग। ८१। इहि विधि आजे आयकें [illegible] पकें। सब कर मुजरा लेय। निजरथ
ल सिषियो लसैं गहें आपनी सेव। ८२। राग टोडी चौतालो। राजें श्री सि [illegible] रामसज्या विचर वि [illegible] अलौकिक
कुंज लषावत। हाटक मय मक्षिन वरतनन के चूंटा वेलि महा छवि पावत। टे.॥ दीरघ का चड ज्ञार न मो ति
तन सिविम्रति सव [illegible] दिषावत [illegible] गी छवि आपनें हक उपरि रूपें से सवातें उपजावत। ८३। सू लपा
पता विके [illegible] चारे समके दर पाय लगें सोमडु लनन वातें तनें वितान जरी तारन के मोतिन की झालरि।
मनभ्राते। टे. पिछवाइ मनु कों मदन नाइ निरषत छवि रविमोम लजाते परदा माई। वान अनूपम रूपसर ७

सलषिसुरसकुचाति ॥ ८४ ॥ जात्रामध्यनागसिंहासनमणिमय ॥ ताविचिंवसुदलकंजसुहायो ॥ सोमध्यअनतरविलाजतमाल
षितापरगद्दीमसंधधरायो ॥ टे॰ ॥ उपवहेनात ॥ कामकमापेकोमलतापयफेनुलजायो ॥ सीतारामकिसोरजोरसल
रूपसरसव्राजतसुषछायो ॥ ८५ ॥ इकताल ॥ सीतारामविराजततविसोरतिमनमयसतकोटिलजानें ॥ तैसीप
नागरिसिलिनचहूदिससेतातपत्रअमृतकरकानें ॥ टे॰ ॥ कोउलीयेचमरमोरछलपंखासूर्यमुखी[illegible]रवीस
जानें ॥ रूपसरसअन्तरकोउवीरीपीकदानषगाधनुगंजफानें ॥ ८६ ॥ जलदतिताला ॥ रीतिअनोषीलागेदंपतिठि
गसषियांचहूदिससो ॥ पीतमपाहचाहुपीलाजभरीरूपछकेरागें ॥ टे॰ ॥ लक्षमणाहेमाक्षेमासुनगासुलोचनांअ
गपरागंधअवरारोहनि ॥ रूपसरसपियसागे ॥ ८७ ॥ सियदिसअग्रगनोरी ॥ पियकीवसुसोकहीअनूपम ॥ सषीप्र
सादाचंद्रकलाकमलाविमलाहिगनौरी ॥ टे॰ ॥ चंपकलाअरुरूपलताउमिलानामलहेनोरी ॥ चित्रमोहनीइनकोस
गइनरूपसरसकहेनोरी ॥ ८८ ॥ दंपतिसमाविराजेसुखसुखविधिप्रअहतिनसंगकोयावतानिलाजे ॥ कोउ लि
येंभूषनवसनसुहावन ॥ मेवासंपुटझारीपाकन ॥ चोपरिगंजफादिमनभावनमगमावकिहेंसाजे ॥ लालमनीसारि
वि काचकोरीसुककोकिलामैनाजोरी ॥ पीकदानकलव्यालननलोरी ॥ रूपसरसइमिसाजे ॥ ८९ ॥ निजरसेवालावें ॥ च
हूदिसनारिअनंतकोटिजुरिजुगलछटाजियलावै ॥ किंनरयक्षदेवजामानहुगंधर्वनिविद्याधरिगानहु ॥ कुसलता

सी॰र॰
८

घमैंनत्परुगांनकु। सन्मुखखरीरिझांवे। टे॰ पुस्पसिंगारमालनीत्याई। रूपदेखिसुरनारिलजाई। दंपतिअंगंगक्षरेहर्षा
ई मोजपाइफिरजांवै। पुरखनिताअहन्आनदेसकीसत्तासमयआवतहमेसकी। छरीदारमालुमकरि। तिसकी
रूपसरसवेठादे। २० अथपूरवनाबापदराग ताल प पेछ। वेकुइतहमरेधोरहि। टिक। देखकुकसछविसियसि
यवरखा। अगत्तरनरलीजियहहिअसुखसुलनननवोधर। अवधिसहरवा। टे॰ चितवतरहतलहतकवकुनजिहि जप
करकरसुरअजसंकरवा। रूपसरसतिहितजिपनइकछिन। पंडितवाअसकरतजिकरवा। २१ अथपंजाबनावाक
वित। वोलियांअमोलियांतेडीनकलुगेलिपांडोलियांजहानपडदे। आंवदीढठालियां देखंदीजेडीइहांढवीलियांसु
ओडियां रतिकामकरोडियां। नहूंटीस। मनोलियां टे॰ कोलियांमोतीमणिंदीवारंदीसहेलियांझुगांवदाअसीदीकि
णप्रीतिगहेवोलियां। रूपसरसनेंसाडीजिंदुकीनीघोलियां। जिनपनीगरदेनालकरंदीकलोलियां। २२ ब्रजभा
षासवैया। लेहजुलालयहानिसिवासरकानिकहूकुनकानकरेगी। हेजुपहांनसहेजुविछोहजुचोजअनूठनमो
जनरेगी। पायसिपेवरआपसत्तानितिनेमलियेंउरप्रेमठरेगी। छेलरेकापसंगीतसुनापसचेंतिपत्नापछुपायप
रेगी। २३ दिल्लीकीभाषाकवित। आपसुनिपिगाजपानीघ्यालकीजियसुकंनीसियरामकुसलघांनीयेलापिजाज
हे। अकसरतवीतचाहेमगरफंदेभेआहेनदेपेंतफराहेकहिपेईलाजहे। घुदईस्कवाजओसेसावनिगावाजतेसे

नवदेसनकेमेनीवुजरकसमानहे। मंदल्कैंाजाफरान्कोम्म किञोरत्पैडालेरूपसरससहजादीचलनीनजाजहे ९४
ढुंढाहड भाषाकवितम्हारो। सुरैंगराजाधिराजकाकुमारपहलानोइसरांसहरूपजोतदेपिहरवांस्यां। निसञ्जेभ्रमा
स्यांकदेघरांवीवुलास्यांपापापांवडाविछास्यां। घरंणांसाफूलवरसास्यां ठे। अतरगुलावचोवाचंदनमेलगास्यांवडो
नांतोजएास्यांञ्जांकाम्हांकामनमिलास्यां। रूपसरसचास्यांजगमेवीसरापास्यांसवतेरसनिम्हास्यां। फेरिमोदमेंनमा
स्यां। ९५ कवितमारवाडिकीभाषा। थोंरानोपरालवदरोकेवणंईकुंईहाम्हारोवाहपरेफूरिमारवाडिकोदोहे अटे
जोअणंऊवोआपरीऊनिजिरहेंछोमलारोछटान्हालीनजनमलावमिदोहे॥ ठे। अवेतोपांनांजादराजिराकवा
डिपाहांजिणीरोविचारपंमनमेंलेकरिलीदोहे हकरातोनडातोसीतारांमजीरारूपहरहतनमनधनअर्पणकरदी
दोहे ९६ वंगालाकीभाषा दोहा हमांकाकीगोतुमीपेराञीवेसोय। वादेरेकीआणवोईवांनेयाकवोय। ९७ सर्वदे
शभाषा। सीतारामोसंप्रदोचितकानांइच्छाचित्तंहर्षितंमेतुजातं। स्तीणांपूर्थेरचितोराजरीसाध्यानेस्यातांप्रत्य
हंनिश्चलोमे ९८ दोहा। इहिविधिवातेंकहतहेदेशरकीनारि। निजनिजभाषाकोंलियेंकरतअनेकविचार ९९
सुनिसियपियप्यकोंवहीसोछविवदततअतोल। लषिरनागरिमुदितमनविकीवदतविनमोल। १०० सुलतिमाल

सी·र·
९

माइश्रासावरी सत्रा सरसीलीन्त्रा जिकीहै कोटिननारिहू पगुनलौंनी प्रगट नमोजतगीहै ८· कोसरुकाम्यपुरा
एवेद मतस्मृतिसंहितासनीहै रूपसरससियपिपरीऊतहैं लेतऊठिवक सीहै ९९ गावेपिठीतानारंगमीनीमूर
त्तिमानरागदरसावैंनत्यवाघधुनिऊनी ट० केउसंख्याजोतिषकेवलतें अनमितकीतुरकीनी रूपसरसकेउन्ना
ववतावतनागरिचित्रप्रवीनी ९८ जलदतिताली प्रगटकरतनिज२ चतुराई दंपतिलषि२ अंगतमगांई केउ
उसद्दप्रक्रियावोलैं अर्थेअनेकविभक्तीषोलैं ८· केउकाव्यरीतिकीवातें कठिन२ सोकरतविख्यातें केउजी
ततरीतिसहीसो पक्षप्रवलनिलकरनकहीसो केउकहैपुनिरीतिपयारथ प्रश्नकरैकेउवदपरमारथ तंत्र
विद्याकेउबुद्धिजमावे कऊनेकरूवैठीदरसावैं गुह्यकन्यकासबकंनग्रा दईदिषाईअंकपिपलना मापाजा
नितऊनीतोऊकोई निजवलदूरिकिपीठविमोई ३ मंत्रविद्यातिहीदईहैन्नमाई इहिविधिसौंन्नइकेलिसुहाईसु
रसुरनारिसवीवनिआवैं रूपसरसरससलषिनिनिप्रतिजावे ९३ सिव

सनकादिक सषीन नकीने । इंद्रच्छ्रजताद्धिक तिपमंगलीने । उमारमासारदासचीनैं । आवत जानकु निति विर
चीनैं । ३८ । तेलधिरस बोलत मुरझीनैं । धं निसषी परिजनरस भीनैं । ईसवेद मुख ध्यावन जीनैं । तिहि मनकरत
विनोद नवीनैं । ४ । सो मुनि सकु चावत लोलीनैं । हसत हसावत आप फतीनैं । पहमन आनंतन ई चितदीनैं
प्रकरपुनि २ हैहमहीनैं । २ । गिरिपुन्यकीनैं तितहीनैं । मिथ्यु [illegible] लाल छ्रवि सिलीचितहीनैं ज्ञानजोगजपतप ई
द्दिहीनैं करतब्रयासौ कष्ट प्रवीनैं । ३ । पहआनंदसिंधुमनमीनैं । रूपसरसकीनै आलीनैं निरषत दंपति मो
दमपीनैं आपनें करि जानत सियपीनें । ९४ । कुंडलिया । नारी भोजन कूं जकी घरी जोरि करआई । विनपक
रत गाद गाद गिरा लबि ऊ बिगई बिकाइ । लषि ऊ बिगई बिकाइ रीति मनहर नीदेखी । वीजन अनंतर बटतरी फि
रमोज बिबेषी । छिरकत सुरनी वारि पुसमाला गलडारी । चंदन लावत रूपसर्संजने बैठी नारी । ९५ । नेनाकीसे
नाउठे दंपति सखी समाज । चढि विमान सोभित नये मनुदामिनिघनराज । मनुदामिनि घनराज मेह पे लसत
कूंबीले गाजत बाजत धुनि सुनी कहिं नाचत तच टकीले । हीतन आमितआनंद मार्ग मैं बोलत बैंना । पङ्कचे ईद्दि बि
छिस पिनन बेस तवारैंनै ना । ९६ । राग मारंगतालध । तो जनन कूं तन महारस दायक रेमन के वरविछेउ लीचावी
चितगथपर दंपतिआजे गदी मंधुदिशा दोउ बीचा । चौका मध्य नागर ननवका तापर प्यार कटोरि नम । १

चारू पसरस इहि विधि अति पतके आमन चक्रु घोक डुर नीचा। ८७ आज्ञा नातरागाबर वैसारंग। आजि समि
संगसिय रामजी मनतल पै आम मुख देत हैं पर स्पर मैं ॥ नागरी चूरमा दाल पुर सत विविधि मृग आदन सरपि
खांड उत्तर मे। ९ं कढी आ पीच द्धा धरी मैं बानकी मडुलवारी लिपे आत कर मैं पार फुलका फि मीराल चांखे ।
पुवा पुरी मुनि राय ताता निपर मे। १ निकत रकारियां वक्रुरि आचार के पाते थांने मुरब्बा आम्र पर हैं विविधि लाडु
कचोरी जलेबी मडुल पुष्ट दाणा फफी णी घिवर है। २ पेठि पापाक औ कैरपु निका चरी फली तलि वा पुवा
पापडी पपरे हैं। माकस्तु जिया फ व्रजाक नुति पालबो दालि का घोल का धी वुकर है। ३ दूदर वज्रो मलाई फ
मा वो घरै नोग स्वप्न नछनी सों निजर मैं। मालधरि चापि चपनी कलीभूत वणफ पसरस। अली मोद लतर मैं। ८८
रागसारंग फु दावनी डुकताल। रत्नजटित थार मे करोरि पांसु फल मलात नहनो उपचो सुलेह पिय। पांवजा
तिये। छैरस मधुराम्ल लवणक टु कसायति क्तजानि जीमत सिय पिय सुजान सखि पन मां माति ये। अरस्प
रस आले तक हित परत जुगल हैं तल खि नई आलि यां अचेत निये पीत मन व आम देन लागो प्रिये कं जवद
नरूप सरस देखत कर थाकि तल विछका तिये। ८९ मूलपाषता। जीमत सी तारा मळवी ले मैं नक ती ले वित ववि
नाकी। वोल आमोल क बोलत दो ऊरीति अनो पीचो रनि जीकी। ९. सपिता न संग अनंग कोटि के मिलि कर न सुं ।

मगन स्नमो

तन पिसतो

जैंहद प्रीतीकी। रूपसरसकूं प्रासदेत हैं। लेत तिहीसुंखसामुपन्न प्रभीकी। २० रेपत्तो। दोउजनी मत्ते बैठे। सषि संग
मीनाराम। करिहास्य मोद देहाव तेरस रूप में भोरे। ८। केउपुरसतीकेरत्नावतीके नगावतीजे ठरूपसमैसु
नावतीको नगारियां तैं ठे। २१। सरजू नरी जलकारि पागहेनें। आलियां कोऊ। करकंज धोवत बैठि छोकी छ
चित्तरे दोऊ। ८। सषियां लसें चकूं पासमुद्राकार हैं सोऊ। चित्त नांनि पालना तासुमधि प्रचालिमुरव वोऊ। परस
यपटको मलदई बीरी विजनन्हिं होऊ। रूपसरसें सुदेप अंतर मगन मनजोऊ। २२। तितालें खुरसी कपरिवाजे। दंपा
२ तिछैलछबी लैसजनी। पानबीबावन कछु मुस्कावत तिमने जलपिला जे। ८। अंतरपुस्पमाल। अंगधारैं ठाट
तलेनसन्त्राजे। रूपसरससुखवढ्यो अनूपमडगान माकूं नरवाजे। २३। कछुअलसांनि गई। दंपति आगारमां लेस
जनी। नागरिसा प्रमादलै आई सेवा। नहाथ लई। ८। सरजू जलसुगंध मिश्रितसुचि वीरी। विरचि दई। रूपसरसअ
नरारि तुलाय कदेकरिमुदितलई। २४। जैनदंति नालो। नारी विश्रामकुंजकी आई। विनय करत गदगद बानी
तें अंगरही पुलकाई। ८। पानखवानि मुस्कानि सवन दिशचिनवन नैनं अघाई। रूपसरस आराम कुंजमै सेज
सजी सुखदाई। २५। मियप्ति पवरन ठिचालें सुनिकें। करिनाकरिमनुत केनमरोवर रतिमनो उनरसालें। ८।
अमनअंनसोपेउगामन बाघ टिकाछ पसयनालें। बामकटीनो जनपच पहगुनसछेहोरे वलवाले। २६

सी०रू०चं०
११

हिविधि वातैं करतसखी गनगाति नखिहंसननीलै रूपसरसुखसमुज्ञाव्राज्ञै वनीवनाहरियालै ।१६। तालदादरो
राघोजीरीसेजफूलांरचीसहे लिया ।। डुंडीविनावद्वांगकेसोतावूटांवेलिपचीहो टे० ।नापेंकोमत्नपेनुतेसि
नवस्तरवंधजचीहो ।रूपसरससिपेनामुपेलपिलाजीरतीमचीहै ।१७। पोटेदोमेजसुहावणे ।सियरामरी अं
कनरेप्रीतम्प्रियाप्तिहीं ।कोमलचीरनढावणे ।टे० ।केनकुलावनदोलकू ।केनलाणीसासेगावणे ।रूपसरससेवा
रैचैकोनसोतीकुंजैमावणे ।१८। दोहा । इहिविधिसीतारामदोउसयनकीन्हतिंधामजागेपुनिआलसभरेदि
वसरहालरिजाम ।१९। रागकरवेसारंगख्याल ।सखियनकूंविरहाछायो ।विनदेषेंराजकुमारवे ।वोलतेवन
प्रेमरससांभेवे ।छविविवजिपन्याकुलापो ।टे० ।हेसियरामललामसीलत्तवसोकेसेंविसरायो ।रूपसरससेमि
लोनेहकरिमनराअतितरसायो ।२०। अलवेलीराजदुलारी ।पियप्यारेराजकुमार ।दरसनदेनछवीलेहमकूं
आजिकहांरखधारी ।टे० ।हेघनस्यामसियासोहामिनि ।अनलविरहममजारी ।रूपसरससिमिलिकेंवुझाइयेव
रसिरूपसपवारी ।२१। दोहा । पाविधिकेवैनासुनेप्रीतमप्यारिआपजगेपगेआलस[illegible]रअंगसखिनसंताप
।२२। गाइमुदितसजानिकस्वर्णलागावतहीयमनकूंविरंदरपरिगयोनाहिननरतकमनाय ।२३। नैननलाव
प्रेमजलअश्रयोजानि ।इहिहेत ।देसमंधवेठारिकेलखिदृविनडेमचेत ।२४। रागधनाश्रीताल ।३। जागेसीताराम

श्री रू ति ना० लौ० नी० ग्रहो ॥

११

मछवी ले । अह नारे आलस के वस मैं मोह त नैन कती ले ॥ टे॰ ॥ गलवै यादे कुक त परस्पर अंग अनंगी तढी ले । तेत
कुमाई प्रिया पालन लके नि कसत बनवट की ले । पाग पे चसु धरावत बिथुरे नव रस चिन्ह रसीले । रूपसर मछवि
देषि सखी गन वो लत वाह नवी ले ॥ २५ ॥ दंपति प्रेम मगन अलसावनि । इग्या ना की अनुराग दुवन को अन
वोलनि गुमरावनि ॥ टे॰ ॥ कुंडल अलक हार नर झाने सो ना अनुतपावनि । मन कुसिय पिया चित परस्पर हार
हील लितनगु पावनि । ले न कमाई प्रीति प्रगर सो चुटकी देत मुलावनि । दिगल वै यां वै न कहत मनु कुकनि
मो ही मुख छावनि । नूखन बसन विकार न है सो प्राप्ति दरसावनि । पेखत अलि जन छटा इसी ली रूपसर रसम
न जावनि ॥ २६ ॥ सोरठा ॥ आलस गनन मजि साज मुख प्रछालि परस्पर पर । तासकु न रिमै वाज अली पवावत
दुवन को ॥ २७ ॥ कर धोवारी देपच्छ नरलगा पे अंगपे । सोप सादपु मिले पनाम कामक्राजे दुवन ॥ २८ ॥ ताल घ ध
ना धी । चाजि तो मखारी सी ताराम छवि धाम दोउ वैठे ना मझाम निज रिवाग में पधारे । संग सखि माल लिये
चवर के नमो रछल तारे उ कु सो सब लीजन न प्रचुरे ॥ ॥ गावती ब लतहैं वो पदार नारी वोलती न की वतीर
दृत न तटारे । रूप सर रस मन मोहन छवी ले लाल पी है बिहाल वाल न न पन जव नि हारे ॥ २९ ॥ ताल नाना । वाग
मे विहरते आजि सिपरा मदो नंद पिन ववत । तरर हत ठाडे एक तेजाति पुनि रंग रस गंध को मालनी कह

इसा

को

कितेक

कहैं

सी०र० वे० तहियप्रेमवाडै ॥ २ ॥ रावरेअंगकेध्यानतैंहरितयेपुस्पअनुरागतैंनखरंगमाडै नामवसुलीनजउत्ताउखतयाहि
१२ तैंपायसुखहलनतवनेहमांडै ॥ ४ ॥ धामरजसेपसरजनुसरितवारिपारसिकइहिजातिमगआंनछांडै रूपसरसीहि
दइमीजलखिचातुरीसीपपियलायितिजअंकमाडै ॥ ३० ॥ इकताल ॥ विधिहोतअमितरसकौतुकविहरतविविधि पा.
विहारनवीले ॥ [illegible] गोदकंद [illegible] कहूंआपदुपैद [illegible] लेकहूं [illegible] धैठा [illegible] तम्प्ररीझ्वसीले ॥ २ ॥ [illegible] चोकीतगथ
विछातिकहूं [illegible] कहूंकुटिचादरिफंवाशिवरसीले ॥ नाव… सवारकहूंनागरि… जुत… कहूंकसिव…तैं
जुसलीले ॥ १ ॥ कूदनुवकीमारतछलकरिपकरतमिपकूंमदनरसीले ॥ कहूंजलफूहीकमलअवलावततछिपि
आवततकतकंचुकिढीले ॥ २ ॥ कोनकहैंपीनमकहाइहिठाईआवकुवेगिसोजातहटीले ॥ निजअमिलाखसोप
रीकरतहेअंकनरततहैछेलछबीले ॥ ३ ॥ कोनकहतकहामोहिअँचतैं आनतहिजुजनरिमोदमयाले ॥ रूपसरस
प्रियकहअवलंवनदेवकुवाकुनपीहैयकीले ॥ ३१ ॥ मलपावनतालान ॥ आतीवकुघांश्रमहितठाडीअंगआगोछे
वसनवनावेपुस्पसिंगारकियेअंगप्रतिमणिजरीतारदमकछविछावे ॥ पुस्पसिंगारनंपेसखिपनकेपुस्पन
केसाहितपसुहावे ॥ कुंजलतामेंआंतिविराजेरूपसरसकछुकहतनआवे ॥ ३२ ॥ रागधानीतालज… ॥ २ ॥ कुंज
नवनसियराम विराजेरी ॥ लताप्रतानवितानमनोहरथंवसिंवूअभिराम ॥ टे० ॥ कुसमनकेबूटाअरुवेलीका
१२

लरिन्अतिहि ललाम । सघनरहे तरवाऊ कि त्रैदि पिंके लिकारक रंभा म ।२०। वेदीमध्य विशाल । मणिनकृतनवी
ही विलसति मुललाम । रूपसरस विचित्रे लतनुगलकूं हर्षि फुलावत वाम ।२१। पुष्पसिंगार सिंगारि । फूलत हैं । पुष्प
नके सिंगार सखिन के गावत कोटिन नारि ।२२। पुष्पन के गहे छत्र चमर कर पुष्प मोरछल धारि । पांवार चे पुष्प के
टोरत पुष्प छिरकती वारि ॥ छुटत फुहारे रंग २ के दूरि निज रिमुख कारि रूपसरस मन्न विनई अनूपम करियेरि
१३ तुन्अनुसारि ।२४। दोहा । रितु रितु के अनुहारि जो जोग विहार प्रकार सो न्यारे कहिहै इहां ग्रंथ बधन डर न्यार ।२५।
गुरुआज्ञा नई अल्पकी तातें मन नर्मको चे । नित्यविहार प्रकर्ण वाछत हूं मन रोच ।२६। चिन्मय सीताराम के नि
त्यविहार अनंत यद्यपि वसु माधुर्य के दिवस प्रमाण लसंत ।२७। तातें करौ विनाग अब नित्य होन के काज पु
निफु चिहे पसु की जिये नाहि प्रमाण लिखिया ज्ञ ।२८। रवि दिन रवि के ज्ञान तें जनमगुन वय वेग । अब सज्ञापे
नागरि न जिनको है यह है लेगा ।२९। दंपति हा चिलरि खिलाय कै रवरीकि येदो नवा जि सुंदर तां रिव कै मदन गहड वेग
पुष्पसिंगार गये लाजि ।३०। पायजामा सिपरामके अगारखा दक्के रपगियां पचरंगी धरी लखि मुलके चकुं फेर ।३१। टेढी
पगियां छैल गातिपे वकुकाये अस कि गिर्गि तासु पै वंकल सिफते चांद पर संस ।३२। सीसपेच कि लंगी विविधि तुर
रादर कतनार मोतिन की जरदु कु रिसा सो नित के प्रानमार ।३३। कुंडल पिय के जानि पे करणं पुष्प सिय पंकर छे

पुष्पसिंगार

सीरन्चं०

१६

लकरीपीतमधरीसीताश्र।वनजोर॥७४॥आणवटकर नूपणवि विधिसी सचंडिकाहार कंचुकी भेदटेवटा
कचुकी ओर सर्वईकसार॥७५॥ बांधिक मरि नीलै नुरगासिया नई हससदार मोती पर प्रीत मच्चे चावकसोना
कार॥७६॥ तमलोह पर वारिजिसिनिसियगधरतेवा जिअखसोजवडलोकमैं पक्कं चेरूपजिहाजि॥७७॥ चक्कं
धिधांधासजतंगलषितरतरवनकी पांतिकुंजननैं देखि मन नहै सादृ मालगृ टू पांति॥७८॥ पानीतान्अखा
फिरानिकली डुवनकी। वहीडुवनाचातदोनवाजीरु चिलपिसिपदसरथनंदनकी॥ ८०॥ मनुघनस्यामस्या
मधनदेषेगवरवारिधरसातातनकी धनुवैजंतीदामविराजतविद्युतसोता अहत वसनकी॥१॥ मुक्तामाल
नालवकमानकूं नूषनदमकनिछविनडगनकीपेखतहरषे नपोजनुनारी नरतकरतमोनाअंगनकी
॥२॥ अगामगजीनजरानगहनासो चित्रनिसनुसहसनपन की॥ सीसकिलंगीस्याससध्यानमते तक्षाक
तिग्रीवमुखनकी॥३॥ गवीलेकेकावतनैसैगुमरनिकीनीदूरिमदनकी॥ समरससमनके अनुहारीनीदीहनय
हे न निमदु... नसनकी॥७९॥ सुघरदोनफेरतनवलतुरंग॥ सीतारामपरस्पर मुसकतचितवनिललितकुरं
ग॥ ८०॥ सरोकरतपटीदोरा वतगहडग दोषपोनंग॥ नागरि अस्वफिरावतचक्रादिषजिमिछापातनसंग
किनिपकदे षतनहरतरसोजैकितिपकमहलनतंग॥ वाहर धुनिहोतसर्वदिशासुनि रवठतउमंग॥२॥ चक्र १६

रतीन॥

दिवातमिलात्मनुज्ञादोउकहिनहिपरतप्रसंग।कहुंडुकमारच,लावततवाजीउ।तत्र्यधरसुरंग।३।गतलैपां
देकुकतकहूं२मारेटरतईकंग।रूपसरमकेहेगीकु२लई।लओदेसिहतसंग।१५।तथाछ्यात।लरिवसवि
व।वलि२जाऊ।सीतारप्रफिरातम्नलवनव।ऊतनतफेरतकवहूंग्र्यावतसमुखदोउचलाइवे।मंदमंदमुस
कावतमननीमोहविकहीनजाईवे।८।गछलतत्र्यलेकंधनऊपरिपागपेचरलकाइवे।कहरतकटिप
टतूरवनज्ञागमगामुरतयीवनतकाइवे।५।पुनिवुलाकथहरतदोउनकेतुरराकपनिसुहाईवे।रूपसरमकु
उलकुमरगनमनरालीनचुराइवे।१५०।यहमतसोंलयलीन।लयेचलततवाजीवरदोउ।लुविगतचीजनठा
वनचाहततलिपरततदोरिप्रवीनवे।हाथनठलकेईहाथनातउठिहूंकेहहूंनहिचीनवे।१।जंघदवातदवातवा
रिधरपुचकारतचित्रीन।नकवोलतनिकुनकारनेवरीरूपसरमतनपीन।१५२।सिद्ध।असविलोकिनागरि
नतवावमाकीनठिगजाय।अरवकंधठाकुतकरनवाजीकरनफिराव।१५३।कुकिपगाकाढतपागरनसो
नातई।विसालचावकरलीनेरवैरे।।अरवफिरावतवाल।१५४।समाधानतिनकोकियोदोउठेनगतरवालवा
हकलुपिलाईडवनकुंजमताकृतगान।१५५।करिभिंगाक्ष्महतोगपुनिवीरीअतरदेपर।विदिनकीयहमो
नहेरितुहचिलारिपुनिलेप।१५६।चंडलारकूंजानियेरामचंद्रपरकाम।सवेतोपमेंहोतहे।जनचकोर

राबै

सी०र० नं० कुल्लास ८७ मतयेक कल्पसतखनमदनदछिन ओरनिहारि सखिनसंगचढिजांनदोनपकुचेतहांविचारि ८८
५ कुंडलिया। पसुपंछिनकोसोरसुनिविरहमिल्यो सियलाल आपेसनावननदेखिछविसवही नयेनिहाल वा
लसंगदु छते आपेसियजूतहांआइ अजिराजसुत चलेसुहाये मुजराकरतेंसिंहासनबैठतनिको
रा कह्योनजावतहरखेनयेसुरपसुपंछिनको। ८९ दो। रवपर सियजलसंगादीमुसंधलगायस्तुतिकीरतिनभि
लाखआगोउ वितहलछुई आप॥ मांडवितहलछुई आयपरजकीरीतिमलानेंमनानजसनहमेअववरवलागेहो
ने मोरछली कजनादिसिपेच्छनारे केनकरचिकपरद निमेकंकनी मुप्रियजूदो। खगापर ९० राग
वरवे जनदनिता लो॥ सवेतोपइहिनासमदनकोहोतसरवकुं तोपइहांतेसेवनसिसिसवकीदिसाबि
नवतपावततोपसमकलजननतातें ९१ वंदीजेपवेदजसवरनतदेखतसुरसुमननवरसातें धर्वनिसुरक
न्यानतमेंनाचतगावतवाद्यवजाते १ देस २ केनपसुतआवतसहअनूपमानिजरिकरातें पसुपच्छीसि
कारवचवादीहेतुपरिछातिनहिपातें २ विप्रनकूसनमानदानतेरीझिमोजमांगधजनपातें नाचत
नटकृतनाटकलपरचारनलाटवंसमुनवातें ३ पुरवनिताछविलखतमनोहरझांकरोखनचतुर
दिसातें सियपजूपरिजनसंगरसीलीप्रीतमपेखतचिकपरदातें ४ सेवतनरमसुहृदप्रियरघुवरसमकलक ५

प्रति

छुति नसैं वतलाते । रूपसरसई मिक्रियो सवनकों तोष सियारघुवर कुशलाते । ६५ । कहत तत्त्वरथसनुप्रानपि
यारे । मदुमुसकनि पेखत मुखपावैं । जद्यपि हमच्छातारावरहे । तउ । सेवन हितं लग्यावे । ६ । असकछुक
पट गोरी लालन मुखदेखें सुरकन्यन मित्त पावैं । रूपसरसकर सें कर गहि के सनमानित निज ढिग बैठावैं । ६२
वसिष्ठ आदि बोलत मुनिवर सो राजकवर तव रूप लुभाने । रहित जगत हम सहित नेह ते छटा विलोकत
मुधि विसरानें । ६ । नहि कोउ जंतु सादी मनु राघव जो लौं न त्व रूप बिनु जनें । कृपा रावरी तर्ई तासु पेसो । मन
ग क्रवचतें नरक्षानें । ५ । अजगिव आदि रहत छवि छाके मुनि अरु असुरन चित्त ठगाने । चिरंजी वकु दंपति सु
नि आसिष रूपसर कर जोरि प्रमानें । ६३ । सीता राम परस्पर नैना मिलत निप्रेमवस । कं ननरनारी ध
न्यजनक जामन गुन तें सव जाके र मन मन्अव धि विहारी । ६ । देषि प्रत त प्रसंसत जाको अजसिवनार
दवेना धारी । सनकादिक अरु लोकपाल वसु करजोरें लखि निज रिपसारी । ५ । सोइ आधीन दिवस निसि सिय
पलन रहू कछुकरत तन्यारी । सनमानि कर्हू चितवत इकटक चिकमधि इरमे तासु प्रनारी । ६४ । स्वर्ण सीकजरि
नार निपरछा तिनहि निंदित न तेज आपरी । प्रीतं प्यारी निज रसिक नई पेख निश्चवलसु टरत न टारी । ३ । अ
मरन कों भ्रम होत यहम नमानकु नीलकंजु की नारी । बैठत गिरत धर विपुनि उड तें कौतुक समुझि हसत

सी०र० चं० नरकारी । इहि विधि सब दंपति रस माने । गौने करन मधुर रस कारी । रूप सरस संध्या अवसर नये चोव द्वार ख १
१५ का सकहारी ९४ कुंडलिया करि कुल नम सब हो गये नर्म सरवादिक जो नि अनुजन कूं आज्ञा दई गर्मिला
दि कूं मानि नर्म लादि कूं मानि नवन गाव नी सुख पाई सजि सिंदन स विलाइ तिये पिय कूं वैठाई अव सव चकव
सुजासु मो ... सो ध्वज सीस धरि कुंज मध्य आये सु चहुदिस अली ... सीख करि ९५ सासि वार २
व२ की के लिपहु अब सुनु मंगलवार या दिन कछुक विशेष है मैं ... तंत्र प्रचार मंत्र ३ तंत्र प्रचार ताहि तें न
ढवा दी गरिमा अवत महल न नमाय म घ पिक हूं आजि तु वाह रि राज डगर के माहि ... सि खल
न२ तरस्त्रा रोपित दंड की देखन प्रभु मुख ससि ९६ बोलि पठु निसि परा म कूं देखन को नु कहे न महारानी पत्री
दई पकु ची सखी नि के न पकु ची सावी नि के न सुन त रघुपति निठि धाये आदर मात तासा या की न लोचन जल छ ।
वै ठि ये सिय पद वंदन कीन्हु ... रि महल ... रघुपति पत्री लैं गये कहि चालकु ... बोलि य ९७ गज स्पंद य
न सजि साज दो अचाले सी नाराम कहा सात वै आप के रचि म्हाडोल ललाम रचि म्हाडोल ललाम वाम सिय
गई लवा सो ई सु न के पद वंदि आसि का ल ह्म न नाई पिता पास वैठे जु जै पक रि के पद वंदन रूप सरस आ
यूं क वैर तजि ... के गज स्पंदन ९८ वाजत नख्त झरोखनि मे कौसल्यादिक रानि सु न वधु पुर वधु जा नि ये चिक प
१५

दनदरशानि। चिकपरदनदरसौं निसभाकिपनपदपार यज। पुत्रबंधुसचिवनसमेतनप्रजनके नृथजुरा
मचंडसुखलखेनआजनटकोतुकलाजनत। महलांगमें आयरनृपानिहिगाजाजत। ६९। कोतुकनटकरनें
लग्योम्हाराजिपदवंदि। तीनकुंजमिरपेधरेकरदोगलेआसिढंदि। करदोउलेअसिढिदिपगानेमेंबांधेघू
घरकूदिन्नमितेंटंडचढ्यातहविविधिनत्यकर। नाचतिगावतिनामुतियानवजिनदूठोतुकमांही
विविकरिवाहुचढीजिमिक नृपतिकोतुक। ७०। नतिकरेदोवुविविधिविधिपेरनततसवनपन्माहिनीर
नटवकुजननकीअनुरागवजावतवादि। अनुरागवजायतवादिन्नमिनततरीनाकीतिय। सोवोल्योकरिकचहर
थदंडोपरिऊलियचुनूस्नानासवकानदेयपूछोता कोप्रति। नतरहोरानम्पार्थदेउंपिनचलोतजिननि। ७१ ६
आदरसतपुरुषनकहो काकोजोकनभाय। थितितिनकीहोयकाहिमेपूछतहोंहरखाय। पूछतहोंहर
खायकहोमोहिअतरपाको। औसेनदवारमाऊकोनकह्योनजाको। नारियपजनिवो [illegible] सो सुनि ग्वात जनो
ॐ सादरमल्यमाऊथितिजानि [illegible] सत्य दो की हू आदर। ७२। करैंआश्रयअसतें तोसत्य [illegible] नसा ता
य। पूछतहूंकछुऔरहूकहि मोजोहरखाय। नहीजोमैंमतिलायमैं। चिंतसेकाबनहेतुक दृगोत
[illegible] घणरवाणजगकाण थोडे ले [illegible] नि वै नाबातबकु अल्पमें संतोष [illegible] करे
जाति ने

प्री०रू नं
१६

७३ कह्यो एक पुनि फेर कह्यो किं पचीस इक माय। इस्वर इक कह्यो सो अमर विपंचवीस तत्त माय। पंचवीस तत्त
माय कह्यो लघु महत्त कह्यो है। तिह्नकुं लघुतर ज्ञानि बड़ो दातार महा है। आगत सब कों कौंन रस बयहू न क
रुवहा जे सब तें वैराग्य [illegible] सो आंहै नहिं सो कह्यो। ७४ को पुनि अंध बधिर है। नेत्र श्रोत्र धरें कोन है धनाढ्य
अंध रू बधिर। तस्कर धर चक्षु श्रोत्र न तस्कर धर चक्षु श्रोत्र न कों न मित्र अमित्र कह्यो है कीरति मित्र अति ज्ञानि अ
मित्र आपकी निंद्य है। तेजस्वी छय कों न कोन धनुधारी दोग्ध नि। राम अर्क पुनि राम काम इन सर्कें [illegible] कों
पुनि। ७५ ऐसें राम प्रसंस नी गिरा सुनी सब लोग। नट नृप रिझ पंचन लगी रत्नमाल नृप जो ग रत्नमाल नृप
जोग। चंड पदे खें नंन निसचर इक कह्यो बिदे यरा मम मुख पसदू सत्तनि मात। ताइक पुनि पिता ये कह्यो देख कुवे
मैं के पुत्र माच अबधि पुत्राय सम आरनत्रैसे। ७६ इत्थं वानी मैं सुनं पिता मात [illegible] सुनत स्वर्ण कों गि
रिनपो नट आगो च [illegible] छपवी रज्जत तिमें ब्राह्मण समूह धन सम प्रति नट
इहि दाक्षिणे सब्द माल के अर्थ कों जानत है। तित्थं पार वेत्ता नरत [illegible] मुने दिखे इत्थं। ७७ वो नट इ
मि वाणी सुनो जन्मा ताकी निप्रका सि [illegible] राम चित्त वारिधि हरख बाढो वीचि कुलासि [illegible] बाढो वीचि कुलासि
के नत्पकी नन रवकुत तांति गुनि आयो सन्मुख नृपति दी नक्षन वक्कुत पायध नट इहि वतडो लतत गायो चरणं
१ रुइनतें हीमा ही कडुतैं आकें सिंह परेो नट अयल खाही। नाहि पारि निय मधिह नासु जन तां नत डोलत। हतें सबन इहि तां तिगये

१६

पाव प्प

रजनी सधा रिपुखनजयजयबोलत ।७७। रा पितु पद वंदिकै आयेमाता पास कृत प्रणाम गोद लये चख ज
लरूप पियास चखजल रूप पियाश वकुरि ओजन करवायो वीरा अंतरदेय सी सपुनि संधि सुहायो दरजां
निआनुदैन चा नेन विजेष नमतिन संग सुख जांन वैठिआये सि यरां व ।७८। मंगल की पहके लि
नइ सुन आवे वुधवार चतुर चतेरी आयकै सनमुख करी जुहार । सनमुख करी जुहार लाई चित्र अनंत निज कै
निज कलम हि वात ले खवे सुखवाढं तो वारा सीलखायो नि वेठनूठनठ दंगालदे पादे पा कीरीति
हर धामयाम अंतयमंगल ।७९। पियमन आई मैं लिखूं प्यारी कीतसवीर मोर न तौ जा न वनाव लई क
लमरघुवीर लई कलमरघुवीर लिखन लागे अंकु तछवि पिया कहो तवकहा करा हितु मरो नहो यठ वि
जो नहो पतो दास होयतो दे चाहहिय अंकलाय मोहिले हु मोजयह जा चुप्पपिय ।८०। लि छि
खनचहै करतें करत लखन चाहहो यनेन चित्त चाह दोनूं नई ताने लिखत वेनन तातेलिखत वेनन सोव
मनवेनकहे को समुकत मनन यो हर खेता मुको पारलहे को पद्य पिकरि के युक्त वनाई चातुरि परिखन स
आतसियके करी कहो आई वानलिखन ।८१। नई असलपुनि पद्य पिक छु सिपाग ई छवि पेकि रिहास्य हि
तपुनि कहत नइ सुनरी चतुर चितेरि सुनरी चतुर चितेरि पहे मोतेकदां मिलत तासवन कहा प्रत्य

सी० र० चं० नेद मा मे यदि विलती। करन लगे पिय वक्करि वक्करि मन हर विन कुई न इक हत मिलावत सम मय सवे पे
१२ ह ति मन नाम नई। ८३ बोली सिय जू बेठे पे ह मकरि हें अब आप ना हि दिखावें भव निकों कोन करें अथ्या
प कोन करें अथ्या पन्न आपके मांहि मिलावे। जो न मिले तो तुम सम मान मिल मो जमु पावे। या विधि कहि स
बरी तिकीं प्यारी तई रवोली मन्मुख इक ट करहो अदक लम ते पूंबोली। ८४ लिखन लगी नसवीर पु
ति मन मे कीन्ह विचार कोटि काम लावण्य निधि करिहूं कौन प्रकार। कोरिहों नैं ... कारप ...
... करिहैं कोंन प्रकार यहे बडे सोच न्यो मन मुस्कनि चितवनि वकुरि अंग २ चितन्या कर्षन अकुल
वकरन हिये नु ... हसनि। विव सम मन वचन इन सम पे हा जानि ताहितें चाहियन लिखन। ८५ चातुरता
अति ही प्रवल जन कलली के माय स विन तु फाई सैन तें जातें पिय न लखाय। जातें पिय न लखे पता
हि विधि का च मगायो यहे पत्रक हिद यो अलिन सिपे कर मन ना यो व्यथा कल मद शूपांच ... फेरि
सांच हित लाल न र मन्मुख करि कहि ... लखो रूप सरसें पिय चातुर। ८६ पीत मन खते मिवत लकटे रवी
बी कहूं नचूक विविधि कुरातन की करी यदपि लखी अनुरूप पंदि पिली अनुरूप विचारी नव यह मन
में। ऐसी चातुरता न मुनी दशा चारि तवन में प्रगट कहे क छु मोजन्अवे मांग कुं तुम जीत महूप सरस १७

द्वि ति

वकसी ससंगरहूं प्यारी पीतम ।८७। पुनि लै अंक विराजिया सियजू कूं अवलैले । लाड लडाये वकु

रि निज प्रगटी प्यारी फेल । प्रगटी प्यारी फैलन तवै पिय ताहि मगाई दर्पन लखि निजरूप स्वरूप पियामतो

मुकुचाई कहो लाडुली ... लिखी याको कारन कहुं नै मैरि हातन ... लि खिहिं पल खिहैं नैन नपु

नि ।८८। हम मसा तुम कूं नवउ तहे तुम से हम कूं राक । मन क्रम वचतें मोरपह ... निवाहो टेक । रंग निवाहो

टेक नैनन हि देखि ... कान सुने महिकत कूं वेद मुनि जाहि कू ... सूर्य प्रकाश निहारिकें जनी के

नहि विगासी रविकुल नवर विरूप सम सै कमलनि वकु हमसी ।८९। सुनत तेई सीता के वचन जनि श्री आये पि

यतैं न अंक लाय पुलकित नये गदगद हो ... वैन गदगद हो मे वेन ... नलागे कहत तव

नतनहि कछू प्रेम मे अति अनुराग मेघ पिधार खरिवार ... प्रियावन ... मन गुनत तई बोले वानी ललित

... रूप सरसैं मसखि सुनतई ।९०। राघवर छाया जानि ये सियजू संतत मोहि । मन क्रम वचतें सत्य लखु भ्रा

ए जाम अनु तोहि । अष्टजाम अनु तोहि चालें तैं संग चलत हो बैठत बैठो जो जानि मान लखि पाय मलत हो

वकु विधि तुम हि मनाय पाय सुखे यों न वछावर रूप सरस इमि हाई तक तर कूं नित दिन राघवर ।९१। चा

हत मोहि प्रसन्न जो आप विना को ... अनु कोटि जतनन पचि मरे ताता सो सदा अलख ताम सदा अलख

सी०र० चं० संगातवन्प्रदनापावै। नामदेकेलि इमोरमन वरवसजातै अनुचरिहै तेरहहिसंगममने हनिदाहत

१८ रूपसरसजे आंनन्तोंति पावत नहिं अहत। ९४ राजनेगामु आ पविन अथालगातमोहि प्यारि। तोन हुकम

र पानपहरान आछा मया मआसवारि। धामयाम असवारिओं परिजनकुं मन परा नीलि आदि हु॥

नर्केसम स्वगों [illegible] पवरीडनहि अथमगानिओरवसुतुम विनवे का जेरूपसम [illegible] वचमंगनिसंगा

तव प्यारोराज। ९३ स्पामसुवचसुनतहि सियामोदवढोमनमांय। कह्योकोंनपेजायमोलखिसहचरिह

रखांय। लखिसहचरिहरखायं वृसनन्रूखनमगवाये। वारि २ वहदीनवकुरि आतिलाउलडायेन। स्पा

सु॥ नकरखाय [illegible] वटतकु ममनकदामरूपसरसवाडा अंतर पावैमि। नई स्पाम। ९४। सारंग। वुठवार सु॥

पहकेलि नई मनोहर रघुवरकरनगुरुवारकीरे लिगुजनसंगनई। मोमनकुं। ९५। इहिदिनकोरंगपीत

पिंगरंगावाल्मीत्यको। नातैं वांधीरीत। मातताल पैं गवनकी। ९६। रागवरवैखाल। मातुनवनंकू चाले

दंपतिवगगीपैं विराजि कैं। संगसखीमोजरी तिलसतहे। कहसातदेनाले। टेक। रघुवरननरिगाये

पुनिवाहरवंधुसखानिजलाले। जोवतसगानेखडे पलकतजितिनहिंजायप्रतिपाले। जेतलामगान

चढे अनूपमहाकतमारुतवाले रूपसरसप छिमलछिनदुकृतरफ नरतरि पुकाले। ९७। मियसासम

७

मीपपधारी।महाडोलचढिसखीअमितसंग।भगजीवतआगेत्रयपअनुजातिनपुलवठिअगारी।टेक।कै
पूत्याटेआदिसवनपटवेदेप्रेमअपारी।लेआशिकामुदितमनभईसुखसिंधुवढोनहिंधारी।आअव
धेशसमयतिहिआयेसवधूप्रणामीमारीरूपसरसवेठेभगचितवतनयननिमिषनटारी।।१९७।।मतनगपं
दविराजेरघुवरत्रयअनुजनजुतआवत।संगमखावयअनुहरअनमितवाजिवठेअंगसाजे।।दो।।वं
धमोरछलतलियेअडालीकेननकीवपुरुगाजे।वस्त्रमदारछरीकरकेगमालुभक्तमजराजे।।१९८।।हिवि
क्षिमातुभवनआनतरेचालतलखिगजलाजे।दूतवचनसुनि।२।भगचितवतदेखतमोदवढाजे।।२।।
ठिजननीनीराजनकरिकेपायपरेनटवाजे।रूपसरसअगपुलकितैनजलनपतिहिनपडे।।मना
जे।।१९९।।नपवरलाडलडावेजोरीआरिअनपअंकधरि।लखिमुखसुखनपजननतत्छिन।२।वाकावि
विधिवतरावे।दोहा।हिपेलायगहिचिवुकसं।घिसिरनेननेहजलछावे।पुलकतअंगसराहनाजकरिसु
खकुसमनझरलावें।।रावलनयाप्रेममेंवावलमाकहिकोंनसिरावें।रूपसरसतालनलालनकुअरनहिं
मोदसमावें।।२००।।लालदीपचंदी।मातुदुलारतपतपतारुजोरअधिरिअंककधरिधरिकैं।झलावतमुख
तसिरछिन२।सिरकरदेपुचकारीनरिकें।टेक।रूपअनूपनिहारतवोलतवलिहारीनेननजलढारि।

कैं। लालाकहोरेहकहाअवतकआवनकियो। देरवककरिकैं। १। अवजनिकरकअदेरवछममव
दतपयदयपश्चलतनिमरिकैं। रूपसरससंगभ्रोजनकीजेदीजेमुरवश्मनमितचितहरिकै २·१। जो
री व्यारिजिमादेमेपाराकथारमेमणिवाकीपे।। परूसतविविधिमिठाई। मवापेयअनेककटोरिन
दीपे। टेक।। लेकुलेऊवलि२ महतारावषिहेचोटीपीवतहीपैं। लालनकहूतवकृतमेपायोमदिपिउार
तेहे महीपे। नरतादिकनदरुवरजीमतबी लेतग्रासलघुलघुडुलहीपे। १। मुनिम्हारानीहमतह
सावतरावलमादतनहिनमगीपे। जनकनगरकीनारिकैनदेषतगावनगारिलगीपैं। २। लषिह
षीतारिदैकोउजननीकोसहचरिवजीपे। रूपसरसम्श्चवनकरिदीरी अनतरलाथम्मकमालगा
हीपैं। २·२। सुरगानननविमानसजिन्झायेकरतवडाईअवधिनपतिकी। वरषावनलकुकुसममनोह
रसोभाजैजैमचवदतकी। टेक। धंन्यमहारानीकोशल्यालिहारीदपारथनृपतिकी। धंन्यअवलिष
न्य२। गुरुदासीमहिमाकहिमककोंनसारितकी। १। जिहिहमध्यानकरतनहिपावेमोडहरमतदे
तसुवेनितकी। रूपसरसधनिसवीसरतागानजानिप्रवलतायेहेनगनिकी। २·३। महारानीजूविविधि
नानिनैंडुलरापेनिजपूतपतोऊ। घुमडिरह्योवात्सल्यरावलेमानानंदननिजपरजोऊ। टेक। देरजानि

दैत्य गुरु के वार कौं दैत्य सी लजै
जंत्रा तिनकौं सिद्ध करन कौं घेटक
मोजर-चंतर॰ २॰७ हरि दस्व हि के वसमेह
रि [illegible] स्व
चढि वाल
हरि संग है
रि घेटक कर

आयुसपुनि दीनी गाद २ कंठ नेन जल मोहू । पथ पथन आवत ऽवत हिय लखि मुख मसहि नस कत जिय सुवन विछो
हू ५ । आवन समय दे रज निकर हू जाकू लाल चिरजीवी होहू । रूप सरस सिय अचल रहो आहि वात ते सकहे क
रिसवछोह २॰४ । दोहा । समन यात्र आसी सलेग ये सबे निज धाम गाडी मेज विराजि कैं आये सीताराम २॰५ । के
लि वृहस्पति दिन नई यहे कहत सं को च्व सांझ सवैरे होत सो आठवें दिन कहि पोच । २॰६ । [illegible]
[illegible]
[illegible] न [illegible] सजे साज हरिपाल । २॰८ । आपर खरे अंगार वन जो बनत वारि अनंत यहे ज्ञाप मालुम करी नी
तन सखिन तुरंत । २॰९ । सिये कही हम हून रखि वैठी मदन न तंग । तुरत आये पेला लजमिलि हे छके अनंग । २०॰ राग
वरवे इताल । सियाजी ने कि नू पियसिंगार । हरित पाय जामा सलवट जुत अगर खीहरियार । वीरा धर सोह
सिर [illegible] अद्भुत कटि पट हरित सम्हार । सवज दुपट्टा सव वसन तमेर चितमणी जरितार । १ । हरित मणि नके
रंचे विन्न खन अंगन प्रति मनहार । हरित म्यान तरवारि कटारी हरित धनुष कर धार । २ । रंग समीर तुनीर वि
राजत वावक सजन मुहार वीरी हरी दैय पुनि सिय जू नुज नरिवी सुप्यार । ३ । अनर हरित लगाये अंगन
रूप सरस तिहि वार । सिय आयु सखिन आये सखि पुत जहां अमित अपवार । ४ । सोरठा । सखी कहा घट सगान

सी०रा० वं
२०

मिसखासत्तपेंलपेनेषसिकारीअंग। कियेपधारेमदनवहि ॥ ५२ ॥ नर्मसखनकेनाम चौपई। नर्मसखाप्रिय
ज्ञानहुजेते। पतिमानसरघुवरमैंनेते। रघुपतिदविनोदहि॥ ततिनमेंकर पर्मोदिककरतें॥ जिनसैंतस्मा
नवैंतिनसंगआपे। तिनमेंभेदसुवारिगनाये। पीठमर्दविटचेटकमानहु। वहुरिविदूषककयेचहुजानहु ॥ ५३ ॥
नदहु॥ पीठमर्दतियरोसछुड़ावै। विटचतुराईनिपुनकहावै। दुहुनमिलावैकरिचतुराई। सोईचेटसखाकहल
ई। स्वांगवनायजोदियहसाई। ताहिविदूषकरेवकविराई। तिनकेनामकहोंअवगाई। कछुकसकलकोसकैगा
नाई ॥ ५४ ॥ मोहनअंगमयंकास्योमानि। मृदुलमोहनस्वरनम्रास्यगनि। शीलनेत्रशुभीनादसुधाधर। सकुचेद
एनअमताधरमनहर। सुंदरादन्तीहकरंगनेतर। कामतंत्रनवलांग। नवलनर। तावशीलनवकोन्नीरुनेत
नवशीलोंनवांगस्मिताधर। मृदुस्मेरलजितताद लोलकर। चपलसुचुंबनप्रियसु। सनेहकर। चित्रदइहे
मांमृत्ऋमतवद। प्रेमशीलप्रेमवशिप्रियोमुवद। प्रियाकारमृदुशीलोंअञ्जनाद्ला। कंजनेत्रस्मितवदसुम
गादो। प्रेमपालनवांगअमंकर। सुमकेलिनदनानकसुकेशुरु। न्रुषणांगविदनाश्चवपःश्री। रामाशुभी
नप्रियालकविंवस्ही। संकेतरुवणिधरप्रेमनिसिलिरंग। नामदहुजानियाहिविधि। ग्रंथवढेनहिंकहे
याहितें। कछुककहेहेनवदेंनाहितें। तेत्रयेसंगसोंजलेपियके। विदानडसरिखगाइठिगसिपके। ॥ ५५ ॥ दोहा

३

क
रा
२०

ड्रुअ और निकुंड्द्ध बरबर पद्धरि नीक से आइ सुजरा लेवत सब न दिपा चित ये चित हरषाई ॥ ५६ ॥ चौपई ॥ वीर
रसाढेषणी जे आना ॥ तिन के नाम न करुं बखाना ॥ सल्यन की विद्या मे चातुर ॥ मगया दिक क्रीडा हित आतुर ॥ ५७
छंद ॥ लोकवीर रघुवीर नामसु और लषण खरवीर नै ॥ पुनि पषो त्तम कीर्ति बाहु सुकुल षण कै बीरखैा ॥ रण केलि सुद
वदार सी दक्रमार बाहू महारथी ॥ दीर्घबाहू धीर रण महाबली वीर से नाहथी ॥ गनिय पुण्य माली महो जा: रणम
तै को असिवाकु को ॥ असि खेलि युद्ध कापी बला कर रणषीलु को ॥ पुनि युद्ध लापणी प्रान्नु पुणी दल सङ्गे यो पपरा
ज और ॥ मानपणी लोरणा की कुलमंडको रति राजजो ॥ जपपुणी ल विजपी कीर्ति हारो पषो ध्वजा कीर्ति ध्वजो मु
ष्टि दृढु सुकंधरो रणसिंह दुक्कमो ली नजो ॥ समिति ज्ञयो आरु सज्जपो वीर र्षणो कुलमो लिको ॥ कुलपालकै
अरिस्तम्भ को वीर सिंह जपपुली लिको ॥ गनि विप्र सेवक गोत्रपो कुलरत्न को कुलई द्र औ ॥ नीति गोपन मंत्र
धी अरु दीर्घबाहु कबे ॥ लाम्बुधी ॥ दानषीलक कुलषे तो बलबाकु बलराजजी गनै ॥ कालकुंल बलाग्री वोप
रअंतक सुविक्रम ठन ॥ कुलतानु कांती राज जगती पै गुदान षोडो सह ॥ जा निजन पालो लमत्त कगनि
येरणरुद्धो अह ॥ महिरत्न सी ध्रजयो रणो ध्वबर वी कुंड लेत्तानु भो ॥ वपुर त्नोदय वाहु कीर्ति षणी लबलो
धको ॥ पुनि प्रजापालक प्रताषी लसुरणो हर्षो जा निये ॥ नाम कुं तो ह समा घामु गआ दि करोड सिमा निये ॥ ५८

सी०२० चं०
२१
न

नच्याद्दिदेवकुंजानिपेवयमङसतेजस्याघुनी। रूपसमंजुहारकरतैंच्यादरेसवहिनपुनी ।दोहा। वयमकुलान
म्याम्भेवेदासनकेसुनिनाम ॥ राजनकवरसेवनसमपतकतरहनवसुजाम ॥ ५८ ॥ छंद ॥ गनिम्बंडकोनडंम न
डोसात्विकोनदकोतथा। नवनन्तवलीप्रयकोसुमसुवेसुरेषोमुरिवपथा। परमोमत्तोमधुकोसुपेषोप्रेम
कोसुगुणोतथा। हरितोवदुनायको वर्णकोविधुकोहेल्पथा। पुनिवोधकोश्रृंखलोणोरोगानमोग
लेखच्यो। पूरकोपरजुत्र्योन्नूरसोन्नानुकोदकमेनको। नवलेखनागरिनोत्तमोगोरवोच्चाजकुराजि
को। वमनोलकोश्रमरसालसचकमोन्नीमालिको। परमीमुलच्छीपारमीकलधासुधीगुलषेगह
धीरसेकीमोलकोवसुमालतोगीनेपककरु। प्रतिमानकोलीकानमधुरोमाधकोमधुमोरस्तो। वंधुको
जूपकोवागीरसिकोरजिकसुरसो। मुदकेलिकोमोदकोगुंठीमारकोरसकूतथा। पारगीनालीतरंगी
दोलकोरंगीपथा। तरलोमनीकोमुदोनवलीनर्मकुंतलनामुरो। चंदनोनंगोमदूकोपलासीरुजुपा
लुरो ॥ सुरलोच्यामजुलरूपको तेजमीन्नागीव्रतको। नावरोन्नतुकोधुनीमिनकोकिलोरुवरालको।
च्यनधूलीलपीवरमपूरोमेधोसुनीरोमुकको। मधुरोवेदारुवीणोनूपुरोरसचात्रको। कल्पाणसुरसोदे
मदोमंडनीनूषणचित्रको। वंचरीकचकोरचंपकचंदनोपुनिवंडको। गनिहंससारसगुच्छगुंफकके

त्रिकै पुरमंडलो। माधुरीव्रत हर्षरागी लस्यको आनंद दे। पुनि गोरको गंभीर सुसुधीन दूरत्नकवंदको। वं
दारदंदी विंदुको बिंदुकाबदा सुषकंठको। इन आदि दास अनंत गानि तिहि समय लखि सुजराकि पो। रघु
राजको रसंतोषकरैं तमारुती नुजन रिलियो। दोहा। दास अस्व इक ... ल्याइ केरघुपति दिये चव ढोउ
सोरन की वनको नयो नोबति घोर मुहाइ। १९। वसु मंत्री सुत लाल की सेवा पर वसु जाम कुंन समकरिकै
संग नये तिनके सुनि तनाम। २०। रसके तुकनय पुंनको सुनत इमु चंडो जानि। अंसु मील सुलोचन अनंगव
रिष्टो प्रमानि। २१। को शल्यपति के अनुज द्वै विक्रम रथ यपुरत्य द्वै द्वै तिनके सुवन हैं तेजस्वी समरत्य। २२।
नानु प्रतलघुगुण प्रत्त विक्रमरथ के दोपप पुरारथ के नड कांति वड अनु चित्र विक्रम जोय। २३। करिजु
ये हारु जुनरफ नये अलक्षमण लाल पछिम तैं रघुवीर ढिंग लखि सदन नये निहाल। २४। बरवै ताल ३
छवीलो वेरामातुजन वछैत। पाय जाम अगारखी दुपटा वेसी समदी लहरेल। कं। नखन विविधिर वे
पन्ना कितुरी किम्ति कुकेल। अस्वन नटनि छवि कहि न परत है वे वही गतिदई पेल। १। सस्त्र प्रास्त्र विद्या
वड वैतु सआतुर करने मेल। तुन्न सरासन पडग कटारी चावक कर धारे ल। २। वपन अनुहार सबाव
दुसंगमे आवत कुतवगमेल। रूपसरस सोइन वत आद रघोराम कवर लै मेल। २५। सोरठा। नरथस

कुहुनलेरि विम्म आवत दहिन नतरफतें रघुवर हृदप विसेषि हर्ष वढ्यो सो कहि न परै। २६। नरथ जू अव
चढे छवि पात। सीस पाग अनुराग भरी अति जेरो फूल क सुहात। टेक। किलगी पे वजु के अंसन पें नव
नवसन फवात। तकत। निवत निआव की नीकी नालोनलकत हात। ५। सरवा संग आवत लखि रघु
वर मिलन हेतु ललचात। रूप सरस कुनमक रिवादेह हर्ष न हृदय समात। २७। छेल नन नहो वाको सत्तुनि
कंद। हरित माउ मसजि अंग विपरिवा सिमलो मीस अमंद। टेक। तुरारा किलगी मोतिन लर सिर पे
चपविव्रो चंद। काकपदतर लकत अंसन पे छेल कडी मन फंद। ५। नक बुलाक थहरत नरकंठमाल वछि
वत छंद। वाजूवंध कूडा वारी पद छेल कडो मुख कंद। २। लंगर लाल मोचडी अंसेड सोरा सखन को व्रंद। ५। प
सर सरघुपति सेन पहिपत होा परम आनंद। २८। दोहा। दतप्राखंतपेन रथ जूलाये सत्रु निकंदप
छिमत लछिन जानिये। वाचा मुत दिसि छंद। २९। सम सतकद सर थसु वनरा सर सिक नव खेलना सक
हे न हि ग्रंथ डर करि वंदन नये गेला। ३०। कोटि नर घुवंशी कवर रघुपति वय। अनुहार करि २ कुंनसम
सेगान पे सोभा वढी अपार। ३१। पीछे सवि वनके तनय सेन लि पे संग आत। आगे हनुमत आदि दे
दास चलत तछ विपात। ३२। जनक नगर के दास गानदापजवाल अनंत सजे सिकारी साजतन महापसि

कारी जंतु। २३। हनुमदादिक्न्ग्रस्वन चढे वाजकुही करलेय सिकरावेहरी न्ग्रादिदै जरीतुरमचीझेप। २४।
चीताकुत्तादिकन्ग्रमितसी गोसनके जुथ्यन्ग्रय पयादैलैचले कोगनि सके बहुथ्य। २५। कुंडलिया। रामकु
वरकों न्ग्रश्वपैलखि सवार नवदेष। चोवदारजन हरखिमन करी गुहार विसेस। करी गुहार विसेस मु
ननजिहितो वजमूरदंगे जयो न्ग्रतिसोर मदन्ग्रवननन्तरए। घनजिमिनोवतिघुरहे। चहूदिसतेनि
जपरकों। ससुझि परतनहिकाकुचलनलखिरामकंवरकों। २६। दोहा। चलीसवन्नी जोनिकही विविधिसे
रमन्ग्रो न्ग्रति वाजा। वकुविधिवजेघंटगजसिंदनचिक्क। तिवाजी नृरदन विविधिनेवरी पायनकुण
कति। पादरु कंठान्ग्रमितकंठवषननके रुणकति। चोवदारवल्लुमछरी न्ग्रोनकी ववोलतजेयेजूक्र
पमरमन्ग्रवधेप्रामुलन्ग्रनतन्ग्रजपरिपुनुरजपेत। २७। कर्नेल गे सुरपुस्पवद्यिन तते जपर ननि
धानेद्धिगातिकुं प्रोप्त छिरदगह सोप्रनामगनि पर्नेल गेखुरवाजि चढीरजरही गगनमनि हर्नेल गेसु
न्न्रनकेर मनगर्व रहे जनि। महाराज दपु रत्यजूस नानपनकी महलकारिं लखतपुन्पफलन्ग्रापने
चरवजलठरिहिपप्रमुदनरि। २८। निजमेहलनकी लगि मुरंगमहाराणी न्ग्राई। रहा झरोखेछाइचि
करुपरदादुरवाई। जालरंघनें निरखिनेन सुरवलेनन्ग्रघाई। नवछाविरिवक्रदेनहे, तुमनमें मगा

तिहिं

कहुं

सी०र०नं ई। प्रेम भाव मिलि नंद श्याम सुकुमार तमुन मुख लखत ँ रूप सरस कै निअरि जनि लगोरंग राकु सुठोः बदत ।४८

२५ महलछ तनै तेसिपाल रवे पियमोज सुहाई। जलकंस विकपरदाउराइ नहनेनलगाई। नागरि छु दिमप्रगाट छ

कऊकार हि समुदाई। फिरि रचित्र वत लाल मोरि योवा छ विछाई। परस्पर सदो नमिलि रहे पिय प्यारी के

सखि बद्दुमन ँरूप सरस पहरी तिलखि वारत नवतन घनदमन ॥४९॥ दोहा ॥ रामकं वरवा जारमे आये मधुनि

स निकान जिमि के निमिनठिच लत हें वाल वृद्ध आज्वान ॥५०॥ मुजरामा लुमकरत है वे बदारसु निकान चि

तवत निहि छिमिलाल लखि तस्मानंद अधिकान ॥५१॥ वाम काम नजिधाम परस्य ठनी आमि नन्दअधीर

पगालच्छक नन्न खन गिरत सिरतें खस कतचीर ॥५२॥ अटाक रोखन में घटा जिमि छाई तिय वृंद वाक्य

परस्पर मै कहै देखि छैलरघुनंद ॥५३॥ राग बरवै ताल दादरो ॥ छैल नवहो राम विहारी री। मृगयामिस तिय

जे रन आपोस जिके मानसिकारी। टेक। नेह धनुष धर नैन तीर तर। मृगी मृगा द्दी मारी। रूपसरस च्छव नो॥

गिसा वरे ना हितु काहे प्रचारी ॥५४॥ सिकारा हो नो खो राजकुमार धनुष बानमृगराज कहिं हित तियहित

चखसर धार। टेक। मृदु मुस्कानि कृपान वाल ढि गजंतुन हिगक्रत मार दं रूप मणमाकर कटाखखव

चिहे को संमार ॥५५॥ घ लावी सखी हो अद्भुत रचना आजि ॥ दोयकमल कै मुनि मुक्तजुत विवचपसुकछ

२२

जि। टे॰। ज्यां विहीन धनु। स सिमैं ये सव मो संपूर्ण किला जा वेहि अस्व चाल न देखो। हम अ और कंत किति माज
। नु विगत वेद कमल न अ नमित लखि प्रकास फूल्यो ज। पहइ चरजपु नि और समु कि पे अमरी।
तिसु खसा ज। ४ एक कमल वकुल भमर लुनाने अमित कं जपें प्राज। रहें न नयन अलि कौतुक अन नव रू
प मर रस पे प्याज। ४७। मुनू सखी मेवा त मना की हो। पा की अंक रह नि नि पि ग लमें है कि लि रख नि विध
ना की। टेक। मै फे कीर घुवर छिया माला मणि मोतिगु यना की। सखि मन हधारी तिन दासी न हही नई।
व ना की। १। ये कनियां पें छाया आई सुंदर स्याम घना की। सुरल समान लह्यो मुखता नें नु ज नरि नर लग ना
की। २। इहि विधि वदन वर सनी मुक्ता अक धरी ति लल ना की। रूप मर रस तें। धंनि श्आ ति इ रुव कसि पर
मनां की। ४८। चललि विरवे दूसस्पंदन नंदन सुनि मन जनी इन वृंदन में इक चोर मना। वर वस अैचत हि
पा सवन को वचीन को उपुर की ललना। टेक। मदु मुसकनि अैडा देखो सत चितवि नतकरन पना हि
प सरस पाकी पुकार न हि विन सी ताको कि लवयना। ४९। दे मि सखीन व छैल छवीलो मन राखे वत
अंग लुवीतैं। अरवन व नि संग अक्षक न छुलती सो आ कहि न जा न सुकवी तें। टेक। धनु सवान इ पटा
सम्हार सो प्रिया तर फ अंक तमिस इ तें। वाति पें ड अति पट पट वंते अरि गनमें कोर दचढ़ाते। १।

सु
र्य

चि
ना

 पुरपहुँ छिनन्नकरतदेवगानपुरवाहिरनिकसेजपरीतैं। बजतदुंदभीध्वजाफरहरे। नभ्भमवरनकीवधुनिक १
तें। २ वनप्रमोदकेपारपहूंचे। हेरतमृगराजेरतके। नजीतें। रूपसरसमृगपावकुविधितैंहोनलगीमो
रीमतिन्नलीतैं। ५५। आजिमखीमृगपामेंरघुवरकरन्नश्रमितकोतुकरसदाई। लताओरमृगहेरिदा
मामनआयकहेपुनिदेदिखराई। टिक। हरितवसनतृणवनपन्नाकेहरितरम्भरंगम्पान्नहृ स्वाई। हरित
वृन्दावहरितम्रमिपरहरिनलतनमेंजातसमाई। १ अंगछटामोनन्नवतदरसैनेनकमलपुत्तन्नमर
त्रमाई। किंदूरीमेन्नअधरलगेंपुनिछिपिबेंबालन्नलेंरघुराई। २ जायभ्रंकनिःसंकनरैंतवसमाल
खेकछुपकमनुजाई। पालनप्रियाकारनैमियवरदामनकूंसूपेकहरखाई। ३ देखतजंतुनगतिनके
मगचीताकुत्ताछिपेछुडाई। रूपसरसभाना मखिपनजुतकेलितखतडुवीनलगाई। ५६। तियस्व
खेछविहरनकरिखगँकमृगरामविमुखलखिदाबोचीता। क्रोधीसुकरगहेकूकरनसर। कहातेन
गतहेयजीता। २०। सीगोसनकरसूंदिखातहीजायमगोडलमोडकजीता। सठमृगराजकहातभ्र
सनमोडवनजारिदातृतजिनीता। ५८तबेचैंताननतयेप्रजुठिगनतणपुरबासीअतिप्रीता। ल
ये विमानकहतबैठामुमडनके परसतनतयेपुनीता। २ रामकवरकरकहाकुलहिविनदेरहंसवि सिकार कारण
रवि

धिनयो चली ता ३ स्वाम कार्त्तिकी मोर मोर करि जुरी लखेन ता लखत उडी ता ३ बाज नर त्थ को देखत है १
म सिकनि धांमगा चल्यो अवलीन बहरी रिपुमर्दन की देखि जैं कुगो मृगो नर हो पल थी ता ४ ब्रह्मादि
जु क सम्मुकानवाहन नये ब्रह्म स्पर्य रहो नची ता ५ दुष्ट जंतु जे हनत आपन कूं तिनहि तदुन धारे करकु पी ता
५ इहि विधि तद्रग गयाम गाव गा तें आपकूं पठवाननतें की ता ६ कर धुनि होत सर्वदि प्राक्रसमर संपे
खत समवमी ता ५५५ रागपालू वखै दुकताल करनहे नो खो सिकारी सिकार को धी जंतु हन त
गनि २ के जिनको मास अहार टिका पापात्मा जे चक्र जन्मन के नहि जिनको निस्तार धाम आय पुनि श्री
न तजोंय नहि येर घुवर नर धार ९ पुनि ते अदत्त जीव निज वनन के ता नें छो त्र अपार लिकर धनुष
वान छोडत है काउतहे सर पार १० कोल किरात वदतल खिड्चर जजा को सिप वर मार मनु जान क्रै ग्राच्छुस
ति निक तेन सहितें नत ले जात कहार ११ नगत तनि वीच तन स्वामी से को मैत्रैस्वर्य
न फूलन कूं वरखा र केवल नत विलापनात नई खोरे कहा विचार १२ दासम त्वागन मुनि रहसते वो
ली करथित गंवार विंगमइग निरूपसर महा सिरी के रामकुमार १५३ रूप मनमोहन सीता कंत नये रूपाधि
विचस मगल तास्रोरते दीरघ नैनन लखंत टिका ये क सिंह करि छान देपि कें नरन आय त अपंत ताजि वे न ता

सी०र० सं० तर्जे गर्जे क्रूराई। आये छूंट प्रयंत। १। लाल तासु के सिर पैं पुनि श्र करधरि पुचकारंत। सर सूर ता त्या गि जंगरवंत
२५ लु विडु मिग निजाव अनंत। २। नये विवसन बढेल रूप मैं इत नतप लनडिगंत। सो विलो कि कहैं नर तलालज
चलो महल श्री मंत। ॥ ननु रस बस मदन जात क रवग मगहै ॥ हैं जे आवंत। रूप सरस ह सिअवधि सां मैं नैं आ
वन कीन तुरंत। १५४। आवत रवि लि अहेरो। छेल नव। सब बन हपजु काय लखी तो कि तिय क कूं संग लेर।
टेक। किति यक वधे कि तेयक जंतू दये पिंजर न गेर। अवधिपुरी वासिन को दरसन करि छ रिहूं फेर। १। सि
यालरवत पिपद्धटा अनूप मत्तडी। जानि मन दे रव परि चलाये आरवसरो क रिलइ अवधि आति ने। २। मा
नी गन माला पहिरावत वागन तें दौरे। ॥ आये सुनि नर नारिन के मन पेरवन हित उमगे। ३। आग नितचं
द्र जोति जू पिसजनी [illegible] अरु मुसाल चक्र मेर सुमनव छिनी मान गान जे सुनि तै पुर प्रविशेर। ४। अनान
प महत्ता पछि द्दिपुन नरना रिझरो ख खरेर। रूप सरस कर सुमनडाल तरमोहत मंद स्मेर। १५५। आतछवि
नी की राजकुमार। हसनाइ को चिमत्कार अति पुनि नवर त्नव जार। टेक। वीचि लाल को अस्व चाल च
ढु दि सको टिन हसवार। परिछन कर तन्अटनैपें बाला सजि कर कंचन थार। १। कहत आवु लगि कंठ चा
वुकर जीवन प्रान आधार। देव पुष्प बरसावत गावत सिय लखि कहि बलिहार। २। प्रविसि सिकार नतेर घार

नैतैंतिनहिंलराइपुत्रकार।पितापासगयेच्यारयूंनाईकृतधनुफेंटसम्हार।४।सुमनडाललिलियेदुहूंहाथ
नैतैकीनूंनायपनुहार।रायनउठिहियलायलयेहैं।निरखितकरिश्च्यार।रूपसरसखेटककीवानैंवदतत्रम
गिनमगार।५५।वरवैरवना।तौविलालकूंपशुकीडतैवनकेनपेजोसाथ।तरकौंकिहमतेरायहूसुत
लातहियननरिवाथ।टेक।दृष्टिदोषहिवारतेपुनिपूछिमघतमाथ।नरततुमकूंकाहाकहिकेवोलतेरघु
नाथ।६।लखनकिहिविधिलखनतुमकोंसत्रुहनकहाराथ।तचिवसुतकीकहेनालाकोंनचिषिकीमा
थतुमकूंकवहूंअनुजपनकूंदेतहोनिजहाथ।रूपसरसमहत्नगाहैंवदिमोचतेवरखपाथ।५७।तवविदा
कीनेंसुतनृपतिजूनईदेखीनार।सूतमागधवंदिजनकेकहंगुनवरनीर।टेक।वेससंसकमागधनग
निसूतपौराणीर।वंदीकहेंप्रस्तावसड्समुझजिनवुधीर।तिनहिंनृपमनिदानदैसंतोषितरवनचा
रविप्रगनवदन्यासिका।तिनमानकरिप्रणतीर।२।चलेच्यारयूंकवरवरसुखपायकेपितुकौराजालर
घ्रननैलखेसियप्र्यावेतेरघुवीर।३।चलीमासुनवंदिपदसुनव वनिकासुलहीरनैपेरघुपतितिनहि
पुनिचिरजीविहोकुकहीर।४।लाउकरतीमातपतपतीकुंकेघरिषार।नौंनराईवारतीसुजिमापपायोनी
र।५।जंत्रमंत्रसुवांधतीसिरसंघिदेवीडार।रूपसरसहिमीरवदंनीजानिकैंदेरीर।५५।लवननिजरप्र

सुत० मा
गध नाम
को अर्थी

व नति

सी०र०च०
२६

तिचलेचक्रकवरस्वढिसुखपालधामनिजप्रतिष्ठावतेसियरामसहचरिमाल।टेक।दोरिआवतमुनता
हीम्ह लीतियातत्काल।वोलतीवलिहारमुखतेंकरनकंचनथाल।१।आरतीकरतीविविधिनिजकुं
जकुंजनवाल।विश्रामसालश्रीनिप्राजेनयोमोरविशाल।२।नीरननइआलिजननकीकतनत्पगांन
रपाल।वर्निगुनपमुनेटकीनेंसियाकीनपलाल।३।अपनापवागपठायहसतेकरतवक्रविधिआल।रूप
रसजुडावतेदोउविरहहो वेपाल।४५।सियरामभ्राजतकुंजमेंमदमदनकेछके।श्रृंगारकरितनयु
तहवांसीवाररेतके।टेक।वसनरुचिक्रनकेहेमणिनूखनसपदचे।ताहितेपहंरा गेनाहीरके। रखे
१।अदततीराअतरलेकूलतमुदोलके।करतेहेरसपानदोउरदछुदअमोलके।२।जुगलरे द्व बिंद्र
रैवद्विवेनचोलके।रूपसर्ससुहावतेमधिमखीगोलके।६०।दोहा।देत्यगरुकेवारकूंकेलिनईयहजानि गच्य
रूपलता आपुसदई।सुनतग्रंथसुखमानि।६१।जनिसंकोचोग्रंथकूं।तातेकछुकविसेसमगपाश्रीउकूं
कहीहियधरियहनिदेस।६२।मंदवारकूंमंदकोसमुझतमंदजेलसियमनआपायादि हेतुकमी
चरणिकेरविले।६३।लुक मीचणिकेख्यालकूं आपसंगसुनुलाल।अकथप्रेमवर्द्धकरवें।आमितलि
येंढिगलाल।६४।लालकहीयहठीकहेसरविनमेनदइनेंनपरदाछोडतहीगईंउढि।निजरआंत।६५।दे

२६

पतिपरिजनसंगलेसखाकुंडकरिदोयअपनेंरटोलमेंमुक्तावतकीविजोप।१६६।रागगोडीचोताले।प्रीतम
प्यारेहैंलविहारीनवरसका रीचिनवकेली।।दोयजुत्थनागारीअनूकेसनये सिपापियदिशहटके
लीअपनेरटोली केमधिराजतराघवरूपनवेलीरूपसरसअप्यौचोतनरूपीपद्मप्रवलक्कनगर्वगा।
हेली।१६७।इकताल।कौचिहेंरवोलतदोनदिसतेंप्रथमकहीजे।मोडसा दिसिकरततरफडुकूवातेंलु
क मंचनी महीजे।टेक।लालहिवालमिवापखलींडगलीगलीहेलली अलीजेरूपसरससुखवरसि।
रहोहै गारवकरेरवननालिनरीजे।१६८।तिताल।सियकूंहेरनतिकसेलाल।निजरिपमारिलखीदस
हंदिशइकवयकोटिनवाल।टेक।इतनतचमततमनेनहिपायोतमेंतयोइकताल।दोरिगयेतहंओरहि
वेलीनलीपिछानतचाल।१।लालीकघोरघुपतितवनरकोआजिपिछानेहाल।सुनतचपरितहथा
ये।जनकजाचढीदूसरीनाल।२।दूरिजायसंबोधनदेकेदुराकरनपुनिरमालव।डूरिजापइकरिवरकी
धरिमुखत्पाकहिमारोकाल।३।देवीतहतसुरंगधरतपगकंतअंगपेलाललगतपिछानिअखनतुर
पकूचेरूपसरसततकाल।१६९।दंपतिमिलिअचानकआयतयोहरषगाहिलजनपरस्परमनुदासिनिष
नराम।टेक।पीतमअंगारुवसनमुकेशीजलदनीलदरमापतीताडुतिमोदामिनिसीरहीसखीमिखीम

सी०र०चं० २७

मुदाय ॥ १ ॥ अधरपानकरिकैं धनुजोदेसुकुमाति सपवरसायमनकु पवनकेचलतमेघगानगावनतहैं जिहि
नाय ॥ ३ ॥ आवतवकुरिकुंजकेमाही संगआलीरहिछायरूपसरससिपकूं मिवायकेदुरेलालजीनाय ॥
१० ॥ लालकेअष्टादिकसंगमानि ॥ सखीवकुतजहंतहंठाडीकियजानैंहोयनजांनि ॥ टेक ॥ चलीसियाज
हेरनकूं तवफेरतमगनैनानि ॥ इतनततनिरखेकरिकैंसोलविप्रीतमइगाठइआनि ॥ १ ॥ नालरखलैंकहत
मिलोतुरसोनागुणरसखानि ॥ त्रिभुवनकीसुंदरिगनकीसिमोरमोरपटरानि ॥ २ ॥ गजगामनीगामनीति
हिठाहीनहनपियेदरसांनि ॥ राजललीकहनलीनांतिनेचलोजिनीघुमडांनि ॥ ३ ॥ करिचातुरीसिंहठवन १
नहि ॥ नूपनकीजुनकांनि ॥ मगइमरहोपआईसनमुखपुरषपदनपहिचानि ॥ ४ ॥ मिलेआचानकहर्षनयो
नुजअरिकतरदछदपानि ॥ रूपसरसदोउछैलछवीलेकरतमंदमुसकानि ॥ ५ ॥ चलेआरामकुंजदोउआ
त ॥ इहिविधितेयहकेलिजांनियेलखिसहचरिनमगात ॥ ८ ॥ सज्जादइसाईतहांपियप्यारीकूंपोढातकर
पदमीडतकेअनागरिपंखाव्यजनअमात ॥ १ ॥ निजरपदप्रवलकहिरकैं करनखेलकीवातमिलनहिजुव
दिवकुरिदुरेतवछलनोआटदिखात ॥ २ ॥ कंतकहैसुकुन्पावपाहिकेजोकोउसोगनखात कूठकसांचमा
निकैंताकीफेरिनजगनअनखात ॥ ३ ॥ संजुथलीसमनलतकुचतववसनवीलकेपात ॥ अलतकनामामेलप

२७

ति।

टि रहै है कहूं न हां धरि हात ॥ ४ ॥ मैं ही सन्मुख प्रांन वल्लभ नान्आयो। देखन गात न रूप सरसपह चिंगमुनत कहे
बड़े सत्यकु प्रानात ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ इक्षि विक्षितें तके लिपह वारस नी सरके रसत दिनन की सभ क करि कहीजथा
नरमेर ॥ ७३ ॥ जैसी जाके रुचि वकरि तैसी का इप्यारी मैंमेरी हिय की रुची लिखदानी करि प्रीति ॥ ७४ ॥ नायक ॥ री
तिय है नि तिहो यनकाजे ॥ कहीवार गुन लखिजोलछाजे ॥ जिहि २ वार रीति जस चाही तस २ लिखी लखो तिय ॥
हिवांही ॥ प्रथम वार गुन पीछे केली ॥ ता मे मिलती कही नवेली ॥ मान वार प्रति सहस्प वखानी ॥ सात छि निस
करन सुखदानी ॥ सक लहे हाय पइक दिन मेंनाही ॥ तत्क्षण करि वि नागन आहीं ॥ तातेप्रथम किये हिय रा ॥
खे गुर न्हा पु सग्रंथ कुमधि लाखे ॥ पुनि प्रमाण न्आवश्यिक नहिं निति ॥ लखो अ देरस वेरयथा मति ॥ वक्र रि
दे खिरि तु काल करीजे यह रीतिया की मन कीजे ॥ बहुरि तुके पुनि छाद समा स ॥ तिन के नेण विहार हुल्लास
सो प्यारे कहिहै अनुपा के ॥ ग्रंथ वढे विचहीडर ताके ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ नित्य हो नकी केलि सो करि के स प्रवित्नाग
७६ ॥ राग पूरवी ताल मूल ॥ राजत सीता । राम वाग मधि ॥ गुल्म लतान तरु कुं मिरहे है विधि कुसमन की दा
म ॥ ट ॥ वंगला फूलन के अति नीको फूल सिंगार लतान तरू वन वसन र चित फूलन के पहरें के टिन
नाम ॥ २ ॥ फूलन ही के चवर मोरछ लछ न छरी छ विधाम फूलन ही की विछी विछाय तत जनन परकाम ॥

वनी जाम
लरीय मेंय
चारु छि मी
नु रा ग ॥

सी०रा०चं० फूलनकी गादी सुसंचन वतापैव सूसु लां म फूलिन हा अति सोभित लवै से नील कंज सम स्याम ३ चंपाके फू
२८ नकी सङ्ग सब ऊदि मन हर भाम फूलवाटिका कूं अवलोकत रूप सरस अभिराम ७१ विद्रूर नवागम का
रूपनिधि दीने तुज दो अंस परस्पर अद्भुत रूप अपार २० चरन दुवन के देखि कंज सम भ्रमत भ्रमर भ्र
मपार चलनै चलत हहरै तें हहर तनागरि दितवडार १ मुख लखि चंद समान पलक न लिग न चकोर इ
कसार वेनी पेखि मर पनी कारी दोरन मोर सुपर २ नख दुति सीप जमां निपुष्ट नव आतमराल चलार
पनाके अन वदसि पज के अतिसपति हिं हरि यार ३ लागि मगी अग्युरित मुह लेती सम त प्रकार
रूप सरस अंग देखि जिन ये इमि कोटु क अमित प्रकार ७८ सियाइक सुकी लड्म गवाय वोलत ललित वानी
विधि रकी लालन तकर वेठाय २० ताकी चंच कली सम जानी भ्रमर गंध हित आयनि हिमा न्सू ज्ञा सुनफ
लवा कूं गसि तां टुकै भाय १ ललाललि विधि देखत ताकूं ति हि छिन दियो छुड़ाय नाहि दई पुनि एक स
रा ली लि पे सदा छिग आय २ पिय के पास चकोर घ्येड़ क बैरी रही दिखराय ले कै सुक्का हंस चुगा द्वन
प्रिया दयो कर साय ३ सोन आदत नयो अरु नहा थ नैं लयो चकोर नठाय अन लक नं शनि व कूरि
२ कुह सैं त्रिया रघुराय ४ धनदामिनि दिवत देखि दुवे कों वाजे गरज निछा पना च न लागो मोर करि

तनकी छुटा मुदित ह हि नाय। ५। निकस त ल ताने रैं मुँ आगे सोभा बरनि न जाय मानहु चंद अनयन नी लि
त पयद पटल बिल गाय। ६। नि र्वित छवि बोल न नव लिहारी नागरि आति हर्षाय हूप सर सर ति काम आनी
रि तुवा गपे खि वि क साय। ७७। स्त्रा जुरी मं कारी सजनी। आगाओ निसी नल दु संख की कि त हु न लख न के
धारी ७८। दूनन तम ह ल न मखीछ ई मनु चंद र मात न धारी बिनती मुनि आये सुख दे नेक्र तमग मोद अपारी
। नैन सैन कै नारि द। ई त व सिय दि शाह से ज बिहारी आपद ई। तब का बो लत है मो हि चोट करं मारी। २। ह्रिगरा
ज तन व सिया सलोनी तय पि चा पल तारी। आव तन हा व धा हि [illegible] मारी। ३। महचरि सो
ति लि पे चढ़ दि स मे आये छै ल छ टारी। मु नरा ते ब्रा जत दा नर सिपा को। रिन रस व स कारी। [illegible] अनयसं
खक पूरं ज पै हे मनि दिपरी। रूप सर म कुन्न सकर नै को आतन तिन को धारी। ८०। [illegible]। मं फा को मुजरा क
रन आवत को दिन नारि सजा जुर त तिन की सुख दमनि प्रदन बरसकारि। ८१। करि २ कुन्न सवे छ ती आप
नी २ ठोर हि य आनंद अ पजा वती लखि [illegible] नैर सभय जोर। ८२। रागा मन चोला लो। आति नो सजा मे रोस
नाई को चिमत कार गा नै न [illegible] वार वार क त क्र नं अंधारे हे। जुपे है हे जारू फार [illegible] रंग गुलार न पार के न
नमे चित्र कारलै गते [illegible] सुप्पा रै हे। ८। महरापे [illegible] मंा क २ कन्त के करो [illegible] के सं कु कि रहे [illegible] पत्र पुस पडार

कनकुता

व

यसे ब
कुमुस
रस कुं
जपपा

सी०र०के
२९

वनसुढारहै। रूपसरसअोरहूं। अनेक जंतु तिन्हें तिनके चंद्रसूर्यभ्रमकारी। सखी रवगाकारहै। ८३ इकता
ल लगितअपनेहकपेरुसनाइकीरी तिनाकी। कारनके वीचि दीचि एकसी सुआरद्वार सोत्तिन। हंडी अप
रंगाछेजेजीकी। टे॰। समरंगचित्रितफलसज चिदिवाललगीर नीचे मन हर्नेछवी फसे झारती कीरखंभन
के अंतर मे मागे केनि रंतर मे रूपसर सदेखे ता तिहि जन्नताअफीकी। ८४। सल्लपारवनादिद्धी विछायतरंग्य
रकीमकल्नमन्तिखोमा नुसल्लवटरहिता। वीचिसिंहासन अंबुजराजत हाटकमयनवरतनखुजटिता। टे॰। तापे
गद्दीमसंधलगाईको मैं कोमकमाइसहिता। रूपसरससीतार घुनंदन राजे आरतिकरिसखिमुदिता। ८५
जात्रातालराजै। अनूपरूपसीता रघुवीर नीरेनेन मगनेनिनको तानिके कमानजोह। कसकै ते लाग
नहीं चसकै। लखिअंगलालनइ। वहातु। पेखिमैनजितनोह। टे॰। वोलै … हैसुन … प्यामर … के मोहि
अवैकौनधामढिगआयेमारे। चखदूरितै तवविछोह। रूपसर्सैजानि … रसिया … प्रमानिअके
ला… लीजै … दीजेसुखअनगिनोह। ८६। इमनतालअदा सरधनुहीकं बांधो। नाहकमानतीरङग
हैपुनि। सुरनर असुरनाग असकोनहैंइ ननलियोमनजांधो। टे॰। सापके नैननघायल करिमदुमुस्क्य
निजालीफांधो। रूपसरससुक्कोर घुनंदनचाप वानकिहिं सांधो। ८७। अथ नेत्रवर्नन। अतिहिलगोनैने २९

न । रत न रेख्यौ नियारे प्यारे ॥ जिहि हेरें जानें मोइ हियमें सुख वेतें कहत न बैनं न ॥ ८९ ॥ गुन अरु रूप लियें मग देखो
मद अंमृत विष अंजन रक्त स्वेत स्याम ता लखेंतें ॥ कुवि ॥ २ कौन तपे रैन ॥ ९ पेखें जियें सेवा धाउ अंड नैसें मर तजि
ने चितवैं न रूपसर सअंगारंस रोवर जे अवपावन मैन ॥ इति नेत्र ॥ अथ अलक वर्नन ॥ १८८ ॥ नक अलक थह
रात ॥ प्रीतम अधर मनोहर कुपर ॥ मन कुअंगान न उदित जयोक विवर जनितियन जन नात ॥ ८० ॥ इत अ
पार सिंधु मैं परि हि हो उरि हो सो ॥ मिकुलात ॥ रूपसर सपु नि निकस न पेहो नातें का हि आत ॥ १८९ ॥ इति अलक
अथ रूपसिंधु वर्नन ॥ रूप सिंधु सिय पाय ॥ वात्सल्य रस सृंगार मन कंपी तस्याम अभितिराम दोउ ननके अंगार
गकमनीय ॥ ८ ॥ श्रवण सुक्ति जुत मुक्ता देखो नेन मीन अभिनीय ॥ मान कुनाल सहित पंकज धैक एपु स्प
धृतनीय ॥ ९ ॥ कंबु कंठ कुच कलश पजात कुअति नुन्न तकठिनीय ॥ कारी नागनि सी अलकें नवतों हलहरि
रमनीय ॥ २ केस स्याम स्वनकी पर छांही मांग स्वर्ग सीढ़ी य ॥ रूपसर ससी पज वकु उड़गान मासफूलसा स्पको
य १९० ॥ इति रूपसिंधु ता ॥ अथ प्रेम वर्नन ॥ धीमतिता लोई मन ॥ राजकुवर तव प्रेम लग्यो जिन ॥ सुधि बुधि
रहत न तिनकें उकछि न ॥ मायें मदन अरु प्रेम न लगें कहु ज्ञान रहे वचनाहीं नेहिन ॥ ८ ॥ अनुतपें डायाको मान
कु नेन मिलें हें हीय घावहियेत्ति न मन न मतें गमा तार सव सिरन लोपी मैन चेद कुलकानि न ॥ ९ दहअबा

विरहागनितैंपचिचितघटजिहिटहरैनतुनाहिन।बिछुरनिअासमसंगसोफीकोदूरहुतलतिहिंआसमिलनदि
न।२ स्वारथतोयसहितजेहिवैछुसुधाकहियेसोप्रीतिनरूपमरसपेअकथकहांनीजानेजोवीनीनरआ
रिविन।९७।अथनैनप्रेमवर्नन नेननतेयहनेहलगपोमनअवढूंहैनहिसुनसुपामलधनपहलैंउनवरज्योनहि
मान्यो विजवसतेपरवसनगयेदेखत टे०।ननहटकैंतियकूंसमुफावै।चाखनहिमानतनेककूधरमननीरअरे
तोनरहतपियपासे।प्रीतमविनदेखनतनहिंपलकन।१।चित्तफसाय आपहरोदनजोवत।नहिंजवलैंपियआ
ननरूपमरसदृगारीतिअनोखीजोलागोंसोउचाहियेकाढन।९८।इतिनैन अथप्रीतिवर्नन।प्रीतिसराहियेरा
नकवरसोस्वारथरहितहोपअतितरसो।रूपलोनगुणजयतैंनतितेरनिदिवसपियचितवनचरसो।टे०।मीनदे
तजिपसंगवारिकैकैंटेंकधुपतीतिहिसरसो।वापैंअधिकपियासलगतहैमीनचारदेखौतिहिंनरसो।१।कंजप्र
फुल्लितरहैनीरमेंताविनछिनसनतुरसुतजरमैं।नेहनिवाहितहांहीसकनवैवलीकंठलागितरवरसों।२।सी
खडखकीनेहीजनकूंरसअतिदेतपीडतैंकरसों।अमरसुगंधपतंगकुसलहिनमगतननतजतीविवसहोपरसरसों
३।निमविनसखेतरहतमसिपकोको।सोहमांमविगतो।वंदरमौंठहेरेउहिविधिप्रेमहमारोरूपसरसमसियवर
मनहरसों।९९।सियपियपदकूलविकोनहेगेन।तुमसैंपनिमनअनतपगोना।लगानिलगीजाकेउरतुमरीत

इप्रीतिप्रथमः...

कूंकाकीलगनिलगौना।१८। जुगलस्वरूपरसालीलोनिरखैंफिरद्रगजीछविनैनरखौना। सीताराममनामसुमर
नकरिओरनाममैंचित्तडगौना।१। चाहतपायोदंपतिमिलिवेकोनीचविरहकीअनलदगौना। गुणअरुलीलारूप ११
ओरूपगानिध्यारिविनाकहिप्रीतिमगौना।२। सोतुममैंअतिसयहै। नातैतजिप्रदपंकजचितलगौना।रूप
सरसरसंतद्योहियेघटआननिरसहितनैकजगौना।१४। इतिप्रीति। इटना। दादरोताल। रेखतो। गुरजनव
४प्रोढनामरखेनमुजनसछायोमिपलोकनीनैतेरोकुडनहोयनोसमकोअकोटिकल्पहेरो।१८। पर्वतकैला
समनकुकारतिसुदिधोरी। तापैविरव्यातकरैतध्यानंसुगोरी। छिप्रजरदरूपाक्षनदीप्रचरूअसाडझनाग
मुकुलयोफिरतहैअकामा।२। प्रधोजातिपपनिपिजहानारांपंदखें। पायोनहिंपारजोप्रतापहैविसेखैं।३। ब्र
ह्मलोकहंसपेखिचतुराननगावैअगनितगुन। तेभिहिनवकोंनकहिसिरावै।४। वोलततुमिप्रोढगतिपपुरको
जेआईरूपसरसअवलोकतलिवनीवनाई।१५। मध्यादाकाधंतिनागनेरोमुनुसियेराजवाई। जाकेरसवस
मेरहनिसदिनरघुराई।१८। धरिगलमंकमालचित्तवैमुखबोरी। इतउतनहिंटालतपलवंध्योनेडोरी।१। नखन
विनवसकैरूपहिरावनछिनछिनरदछदकेकाजकरतकोटिनमदुविनतिन।२। धरिकपोलपंकपोलवो
लततिलखोलनअपकेहमावनकूंनावतवक्रचोलन।३। पानआमपअंगअतरपावनदम्हावरडहिवि

लखिलखिकैं जी ... कंतनछराी

लीं० र० वे० पितेत्तयोरह तपीतमक्षे विचारै ।४। जनक नृपति लाली कहे नहोय श्रैसी । नागकरनसमय आपरामअत्र
३१ कपैसी ।५। हमहूं अक्तपुन्यपुंज ली रवी यसि जोरी रूपसरसमधुराकहि हिरदै अति लहनारी ।२६। मुग्धा वाक क
है खेल असीनाश्रगारूपकीघटारी ।१। निरकुतनृपजकी पेवै रीमननाई । रखी लाड गहली डहिकुं सुनेनमाई
।२। चक्रवृत्तिसुतकूं पह्याइपुनि आई । ताकूं अति प्यारी है प्रानतें सवाई ।३। कोरि नमागकिं करीट है लमाक
रतहैंप्र रहतीक ।३। प्रातमहूजागवतहें छिनह मनपाको नागको बडप्पनकोतकहिनसकैनाको ।४। द्वाननमेंप्रीति इतिप्रो
नागरजु रीति अकथ पेखि जौ जे हूपसर समरवीहोयमनअक्रमबचरीजे ।२७। सन्नामाऊजेगुरजनपुरजनतियआ ढमुग्धा
खसोन वतरावतते निज अरु हखिहियकी ल्याई ।१। प्रौढा अरु मध्या मुग्धा मग नयनी वपके अनुहार बाकबोल मुग्धा
म कूक तपिकूवयनी ।२। सुनरकैं केन आल्लियुतेरके हरसैं इहिविधितेकुंजर होनबरस अतिबरसैं ।२। कतीवनि बाक्य।।
हती। सखिवनेहन्या वकेनिवारैकि तिपककरि प्रेमराजक पर अंकधारे ।३। एकतानदई गाडमनमेंजो छाडी विव
सजानिपीतमतिहिलानछिपादुलाई ।४। गानतापदीनसुखदजी के विदिपतआगमंगादेचकुनतलिकुनी
असिपत ।५। करनेतिहिपरसिक्किपो आनंदमननारी हूपसरसंवीपेखिलेचतवलिहारी ।२८। रागक
ल्याणताल ३ सन्नान इमनहनअलीरी । दंपतिराजतरी तिनलीरी । आवनमुजराहि तवकूनागरिवै
स

इति सिंगाररस हासरस क
३१

दे फूलनि जूं कमलकलीरी। ८। मालनिपुस्य सिंगारमुलाई धारनकी नूतानललीरी। लेकरकुसमगोंदपैके
तेहे ऊलतमखियांकु म्हाडलीरी। ९। कंदुकसुमनलागातैंकसकत चसकत चहुधा मायलुलीरी। मुस्कावत
करिसीनकारपिपमनकुंकामकी करहचलीरी। १०। रहततियनहिंगारघुबरनरमे अद्भुतहास्यसिंगार
ललीरी। रमयहतीनजानिपेमननीछपे घुमढिनातैं अटललीरी। ११। राजरीतितैं आजरहे लचिरति कंदर्पके
टिनिटललीरी। रूपसरसदोनकछेलनकुवीली भूरतिनिरखतहो विपलीरी। १२। यह सिंगाररस अथहास्य
रस। रूपतरीइकनारिलखीपिय विंगकरनकीचाहनईजिय। कत तमतुररीलेकेंताकुं दईहर्षिकैहीय
८। कहतयाहिकुं ध्यानकरो इहतुमलायककमनीय। मोअतिचपलनहीककहिसूधी अधरचिपीकठिनीय
९। तरतमोनअतारीनवनोंदेखिहसीचकुनीय। बालाकहतकोनपतियावै आपहि असकपटीय। १। मेके
हाकरूंहो रतनवमधुरेनातैंनहिंतनैनीप। तोनहोपत्तो अवहिपरिदवाचाखिलेउमुनप्रीय। २। कलगहितापि
लईनहनागारमोजजुअनकथनीय। रूपमरमसुखदरासिरद्योहैरतिपतिगतिदमनीय। १०। ३। तिहास्य
अथअद्भुत नई अतिमदनविवसतिपवोले। मदुरवानीवतंदं अमोले॥ कोनकहतकुंजमभरायघवपधा
राकरिइटकोंलैं। ८। रुकवदनमोहिगोदलेपकैंमोदवढाइयोहि। फेअतोनैनाथतअपारहा यतमरेतैंपहमाव

अथ अद्भुतकी वार्ता॥ जे सिंगारके बातमे श्रोताँ प्रद्यलतताहेकीसवसखीमदननितसहोयचौलीर

सी॰र॰चं॰
३२

ऊउघ्नाकसुऊँरोले । १ दूजीहनकऊशेरैवेकं तडकं तसुवैठिकरैं गरोले । कुसमहारनिजकरगुहिडारो मुचंतआ पर
परिकैं रुचिकोले । २ दोकजीमैड्कपनवारेवकविधिहोयरसीलीचोले । क्रीडासखीसरोवरत्नोंनीताविनसु
खनहोयतसनोलें । ३ विरहम्भनलमेरोड्मितु चरी प्यारी सोईजातेपुरुषोले । रूपसरसइकनत्तरसनवकूं कै
सें होयवारीन हिंजोले । २०१ इति ऋतुतरस । अथ अष्टदसविद्या इहि विधितैंगानि वोजरसीले । करतसखि
नमेछैलछवीले । औरकुहोतरीतिवक्रविधिकीसनातं । निमतिदंनिनलीले । ८० । अष्टादसविद्यासुनरखा
नीनामसुनकतिनकेयुथकोले । प्रथमवेदहैच्यारि । सांम १ रिग २ यजुर ३ अथर्वन ४ जानिकहीले । १ वेद
षडंगवेदतहैंपढ़ीसिद्धा १ कल्प २ व्याकरन ३ सीले । छंद ४ निरुक्त ५ जांनियेजोतिष ६ वेदउपांगचतुष्टक
थीले २ धर्मसास्त्र १ मीमांसा २ न्याय ३ पुनिठांनकपुराण ४ तरकीले । हैंउपवेदतीनइकदेखो आयु
आर्युवेद १ धनुर्वेद २ नवीले ३ गांधर्ववेद ३ अर्थसास्त्र ४ जनियेक्रमतैंलखियेनयमीले । रूपसरसंवीव स
रनतकेतीसीतारासरीकिवकसीले । २०२ रागतथ्या चोपरिरमावैसिपपिपकूंलडावैमरिवदुकनसिखा
वैनमांवैरीतिजीतनेकी । नत्यदिसानिगढीसुसंधलगानिरूढीजोडीकोवैठनिसोजुगलछविदेखन
कीटे । कोककीधांनिवीचिखेलनकीविछानितापैंसारकीजचानिसोनापासागिरनैकी । कुसिकैंऊमांके

इति १८ नि
या॰नवचो
परि॥

हात्वचलतखुलनलखिनहैं विहालवालमुखि। नहिं घरनेको। ५ मनकुंकमलकोसविजुरीविकासहो
पसहितअसनिनागरि॥ नमनदरनेको। मुरूपसरसमुखजानेजो निहारेजियवयनअनयनसोकहोत
हिवरनेको। ५०३। होवतअनेरखारातिखिलनकेमखिन्नालीपेरवतसुजानमनहोतअमसुखकर। करकं
जधरनअरुनहोयजातमारपावतवहमनवतजितकैंआनघर। ५४। कहैसखीमनुकुंचतुरापियवाज
नहोलाजतहांनहिनामहै नवनागर। पुनिमोसेंपदनई स्फटिकमयहै लातें। वकुरिगहालखिचालेचा
लहसिकर। ५। सियजकेहांतनेनरदनीलमनिकीसोगुलहवांसीसीदरसतअतिमनहर। अगुरीकेंत
कीपीठिपरतहरितवनेपीतजोरहीहीमोतीजानियेअवनबर। २ लखिकोकुंइहिविधिलालतथीसोव
दलिकेनारंगपासुहावनीजुलगातपक्षवनर। अवरजकें महलरसीले वकुजानिइमिसुरूपसरसपे
खिनारिदुवीमोदसर। ५४। लखिमुदितहोवतनागरिजनहर्षितदंपतिचोपरिसनदोउ। करनवि
चारपुनिदोवकेंसम्हारपुनिनिजर। जीतनेको बालचलेंजियजोर। ५। सखियांवतातऊपरखियांप्रव
लवातसुनतसरात्तपरिसारअापछतवो। ५। तत्तहरलपेरनकरनरदूंपेजेरततिपतमनथीवाको
दरनिहोन। ५। कुलनकेंमरगनजुपनकेलटकननामासमनिचमकमिअलकरनचकसोन। कहैवनिहा

सी०रू०के २४ रूपसरसा दिवसिकरनेंकूं त्रिभुवननहिंश्रमकोउ। २५। खेलतविविधिरमालललीनैंसंगकोग्रूढालसतरं
३३ जगंजकादिसिपसवमानेंसोइ। राजकुंवलापकन्नायकचितदंपतीकेवरापरजननगाहोरहीमुरवछविजोइ
२०। केउलियेमेनाहंसमुकीलालनवामगीधनुसवान अभिकुसमममयीजकोइ। मेवामुकेटोरदानजलऊरी
पानदानअतरगुलाबदानीसकओचंदनचोइ। ८। दरपनअंजनरुपाकदानकलधुदेखतअचंनक
रुसोनामनुकामहोइ। गनिरूपसरसनपारकवितहिसकेअमितराजसचीजवकुमोलदोईदोइ। २६। राग
हमीरध्रुपदआरतालको। विराजतसीतारामछविधाम। चमरछत्रवरहोतडुहूपिराजसरीनित
नाम २०। पंखामम जिमूरतीकेउधारेसनमुखगावतकोटिनवाम। आवतमदनुमकरनकरीधरूपसरस
अयनाम। २७। ध्रुपदचूकतालको। त्यारेआलीब्राजिरहेललीलाल। मोंजिअनंतमजेंचऊदिप्राकूछाईको
टिनवाल २०। पुरवनिता। औरदेस२कीकरतेखूंमरूयाल। रूपसरसकरिजेटमुकुन्नसबैढीफसिछविजाल
२८। ध्रुपदतितालकोधीम। लागीदेमोरीअंखिछेलतदरूप। मदुमुसकांनिछवीलेवसिकरिडारतनर
सकूप २०। कमलपत्रमेनेनसलौनेमनकूमहितअलिअरूप। रूपसरसतिरछीचितवनिकीमाडीमारअ
नूप। २९। कहोनहिपरतजुगालछविजालना। पेंपरतफसतमोइ। ज्ञाननधमतजोनिरखनताल २०। हल
३३

त्यतलततनहिपुनिसोनिसदिनपेखिजिवतकुलीलाल। मूकेजनकूंरूपसरसपेकहाजुमालुमहालाल। २१०। रूप
रूपालीलाल ३। मनहरलीतासीताराम। कुमनजालसिरडारिअलीरीतिजवमकीनीवाम २। इनविनमे
रकहावतहैअव। जोकछुवस्तुललाम। रूपसरसइकचाहयहीहै संगरहैवसुजाम। २११। नैननतेलखेवासी
ताराम। हियकैमांझकिशोरजुगलछविवमकुदलनरतिकाम। २। इनहीकोजमसमवनमसुनैनवपुलक
तअंगललाम। वरननसोहीमुखतैंनिसदिनरटैयेहीपुनिनाम। ५। गतिमतिबलधनसर्वसहमरोहैअलि
नवरसधाम। रूपसरसविनओरजगतदुःखदायकतुछनिकाम। २१२। इहिविधिवत्तरावतनवनारि। वीरा
अत्तरवदनसदनकूंपुस्पमालयालडारि २। लेपुतावदानीछिरकतहैकेजसुरमितवारि। किनियकपंखवाक
रतसीतमिरूपसरससुकुमारि। २१३। आलीसखानईमनहरनी। मतिदायकसुखकीनपजायकनवरसहि
पजरनी। २। प्रथकर सवहीकेसुखतैंगुनरुचिविस्तरनी। रूपसरसआनंदलखिमरतिरतिपतिगतिदरनी
२१४। चलति। व्यारुकुंजपधारनकारननागरिविनपकरनछैआई। देखिजलोंसीजडवैहोंसीपगीछैलपन
ठगीलुनाई २। नैनसेनतेंकहैदंपतिचोवदारवरकामकहाई। रूपसरसचितवतइतउततुजकंध्येयचाले
सुखदाई। २१५। नवनारिनकोवर्नोपेकगजतापरवैठेसपरघुराई। व्यारितियनकेवतें। व्यारिपदलह

अथ सखिनको हातो वर्नन॥

सी॰रू॰बे॰ पाउतत छतैर साई ८। नंदरज्ञ मोतिन के कर उटिर हेम धूप वा मरही अर वत छाई। करि नितं वत हुचं गा धुक
३४ रतवी चिमदं गासरंगि अगाई। पायजामधरि चरण येक की मुंड मनोहर दई बनाई। दूसर पगामुह फारजो
पें धरि समोटि सो जाअति पाई। २। नयो पीठि को मीमकरी कैतो कोस्रिरगा यो गरद नवाई। अवर सखी कुकि
तामुका खतर अंगरखि करी अपनी उगठाई। ३। हातदो नदिपे दांत दिखाई पंखी कं कणे फरकाई। ताकी नु
नआ कैपायी है रही आनस ताल वनाई। ४। गज के पूठै इफवारी नैवे नीदान पछलरका ई। रूपसर मपियम
री व्राज नकोटि कामरति गये लजाई। २८। देखि सखी गज के जु किल बैर धुवर बैठि महा छबि पाई। मध्य देश पा
छैं सिय जू मो अनगा तन लकट नाटर माई। ८। सुंदर स्याम का ममद तोरन अंकुस कर लेपहेजनाई। गुण र सखा
नि जानि अनु तपिय नये दिवस करते सिवकाई। १। चलत अयवो लतनन की वव कुके अगा वंन चलत बजाई। दकु
टिपुसीनत चंड जोति दुखंबे चिरा क अमितनु मनाई। २। भई वहार कहत नहि आवे होत चोज अरु मोज सुहाई
रूप सरस सुख सगा नि कुंज की नागरे लूटि रही मुद छाई। २७। मग आनंद होत बकु विधि मं आवत भारू कुं ज
कुंवी लै। ल खिर नागरि हटा अनोखी नई मस्त कैहै पायअनी लै। ८। इन की रीति अनूप नई २ कियेका भर
तिको रिकटी लै। लाडलडावत निस दिन सिय पकं नपे विवसन वरसरसमी लै। १। ऐसे वादिचि तई ताहि छिनकं।
३४

करा घव बैन कनी लै । नख मकरी का है नटनागर पुनि कैं जात अगारी आलै ॥ अथ हर्ष पीछेकू विरहा इहि
विधि ते करते नट का लै । अमन प्राल मे रूप सरस पकू चे नी रांजन की नम खी लै । २१८ । राधा का पान नट नाल
३) व्यारू कुंज वनी मन मोहन जो हन मे रीति हम नाइकी लाये अति नी की आजि । जु पै है अनु पकार छोर
२) मो नार्क री ज्ञा मे विवि विर २) कंडी व्यारि २ इक मार रंग मा जि । मन मित । सुख कर फनु महा लगी र नी चे फ रखी
मुकार धरे तिन की कुति न वे ब्राजि । के नखगा चं च लि पे के आव दी हात दिये रो खे रूप सर सहट के नेर विमा सन्ने
मे काजि । २१९ । रे सम केज विछुहे होली चान्ह तिम नेना वन ॥ सन दूट दजीत का सक माई सहि ना । विविसुख
दाई नय विछुडा इक । ना पर को सु पके तो गादी मुस धरिता ट । नहां पियप्यारी ब्राजमान नयेम ध्य मु
थाकी रतन की ब्राजन थार जहां सजिना । छैरस पंच प्रकार व नेसी रूप सर सरु चि कार कजुगल जिमत
हरिता । २२० । राजनरी ति अनो खी दंपति वकू दिम आली मोउ सन्मा दिक वकू वेठी दखी पास । थार सब
न के मुख आगे सोभित । पैनि जे हैत जननाय नैनदेन नवया मटै । करि २ । कं नमन गारि लै वन सुखन्म अति स
पर लोछा जिसु वेज मे कर नकू नास । रूप सर सके नन्ना दन पुरस नके उ घामी चीज नखो नन नट नसुवास
२२१ । जी मनन्द पनि रहस्यर सी लै । नवरस मपम सुखन्म नमित रहे वर सिकुंजे आली । के ग्रा वन हे री ति

अनोखी सुनि रहो वन तहां रूपके अंगसुरमटु गाली ॥८॥ केली वनावत वात विलसहित जामें ना पलु गाई ॥ चंकन
रानरमाली ॥ रूपसरस रंगरानी नैंन लखि वैकैं अनमिलकौतुककरती फमी कन्हमयजाली ॥२२२॥ रगानंगालो
धी मूर्तिताली ॥ करत व पारू श्रीसीताराघव ॥ प्रीम परस्पर लेत प्रिया पिय मोमुद अनलक थनी प वंपे लाघव
॥८॥ इत्यालखि विकरिदेत कवानरि हटवसहैं ओंप वकु न्याघव ॥ रूपसरस रसपेवत न्यानि पांति नकूं नाही छू
तनैं ककुनाघव ॥२२३॥ पेवत नागारि रूप छके दोउ पुरसतम मयक हतपहूली जे पायसव कुविधि की सेवाक्र
त को क ॥८॥ सीरा लुत्री आ रूपपुडीराय नाता ॥ तरकारी सरसोन ॥ आमित अचार अथाणा मुरबा लाडु दाणा
कचोरी घेवर जलेवी जो क ॥१॥ फीणी पेठा पाक रु कांचरी केर फली तलि वोक ॥ पापड पायडी तु जिपाउ
गुलगुलना वंता कीतु जिपादा लिकाक्षई लीको न ॥२॥ इकमाचोरवडे ओ आमतलाई दूदसु मिश्री मिलोनक
पमरसमसुर कन्या लाई अमत सुरपुरतैं नीम तदेखत तवोक ॥२२४॥ श्रीमत सीताराम तरवोन्याली नह
नो न्पुन्यरु वोस्पले हल गनि पेपसु पांच प्रकार न्यानिधरे हैं यानी ॥८॥ मधुरलवण आन्यो आम्लक सायप्त
तिक्त कटू रस षट्याली ॥ रूपसरस सखि पापरु सत है छप्पन तोग मुजा निपुनि वती मैं सानी ॥२२५॥ नोज
नकरत नासि पारघुनंदन ॥ आरसपरस मुख प्राम दे नहै छवि लखि कै वलिहार फासि मनमथ फंदन ॥८॥

॥ अथ पंच प्रकार प्रसंग ॥

अधरामृत रस सरसिया दोऊ विवस करी तिय ब्रंदन । रूप सरस कछु कहा न परत है इनकी रीति अगाध मा
न निकंदन । २२६ । अथ भोज्य दोहा । अंगुली पांच लगाय कैं जीमन जाकों होय ताकों भोजन कहत हैं ओ
दनादि वकु जोय । २२७ । अथ भक्ष हाथ कछू होय न छिपै नहि ताकों कहिये भक्ष मुख में पैंकि सु खात मो लड्डू
कचौरी लक्ष । २२८ । चोष्य । जाकूं चूसत ताहि कौं चोस्य कहत यह जानि ईख आम वकु मानिय हू पसर सर
सर वांनि । २२९ । लेह्य । लेह्य कहत अवलेह कौं चाटन मैं रस जासु पाय । प्रीतम जाकूं पेय कूरम । लाडू पां और रब
र बारवास । २३० । पेय पीवत जाकूं पेय कहि पय औ मद रस आदि पाचरी तिय हू जानि पेइन में घाटि नवा
दि । २३१ । अथ षटरस । मधुर १ आम्ल २ लवण ३ कटु ४ कसाय ५ तिक्त ६ दोहा । मधुर मिष्ट रस जानि
पेड़ा मिश्री आदि खाटो रस कहि आम्ल कौं आम आमली स्वादि । २३२ । लवण लवण मैं मानिये खारो
रस सुख खांनि कटुक कड़वो कोई होत है [illegible] यौं जानि । २३३ । रस कसाय लो सांगरी आदिक वकुत दि लग
कै होय तिक्त जानिये चिरपरो मिरचन के मधि जोय । २३४ । इति षटरस । भोजन दतिना लो । श्याम कर
तल ढंतीलाल । बीज भोजन कहूं होत परस्पर सो सुख पेख त बाल । २३ । प्रीतम प्यारी सिया कौं देत नीन्हू हात
रसाल रूप सरस लखि थकित भयो कर पकि सिर हाकू विजाल । २३५ । भोजन करत रसाल जोरी । श्याम ले

यपियअधररसनसुखदीजेअगुरिनमोरी ।२। ड्रूहिंगिधिरहस्यअनंतजनावतकहअसमतिधरकोरी
छलकनैनेदोउकोरदेनहेहोवनमपथातिहोरी ।२। वदनपरमपरजानननैहैंहमनुमरेदावठगोरी । लवि
अमविथामत्तनहैंहैंविसरीजीमनमोरी ।२। अवनसमयदेखितिनकीदिपगठननैचोजुकहोरा । नुमसन
अंहोतवकरथोहैसुनिहिपमोदलहोरी ।२। प्रेमप्रतापछकीनुअलियांआईठिगारसवोरी । रूपसरसांधि
नमरजूजललैकेंकेलीदोरी ।२३६। सबमनकरनसियापियआली । रतनजटितचौकीचकृदिसकूंसुडाक
रसुढाली ।दे। तिनपरआजेविचिवडपालासखीपासजलवाली । धोवतकरप्रछालिमुखगोंछनपटलैव ।
कुविधिलाली ।२। अथरसपुंछतसीनकारकरिहातचुमिगहिनाली । वर्णनैनेननजरजनलावतरस
पत्नावतहाली ।२। बीडादेनवनापनवीलीविविधिमुसालाघाली । रूपसरसअंगअत्तरछिरकतरिझुला
पकमुदमाली ।२३७। देखतिकुरसीआजिरहेमानरवातवततानसखिनसैसोमुवनैनलहे ।दे। अनलात
पुस्पमालागरडोरतवाटतैहासपविनोदहोतचक्रदिसिमनमोदघटानलहे ।२। किंकरिनाप्रसादलेअ
ई सेवनहाथगहे । रूपसरसनवठेनछवीलोअखियनरूपचहे ।२३८। दोहा ॥ इहिविधिसीतारामदोउजी
मतसखियनसंग । पीछैकिंकरिवर्गनिपहेरीतिद्रुवअंग ।२३९। कवकप्रथदेवतिवकरिपोडसपुनिम्मा

ब्रवणो जनवें ठकरूपन

चार्य्यैतान्अनुआपप्रमानिपेपीछेअनुगाकार्यो ।२४०। कवकुकदंपतिसोडसरुनिजजेपाइकसंगमंत्र ।
पर्मसादीहितुपुनिअनुगावकुरिनसंगा ।२४१। नाहितुदंपतिमध्यमैसोडसकुंकुदिसनंनानियेकतरफआच
येनिजदूसरआपुनमानि ।२४२। संगजीमनउछनूवकुरिकिंकरीमोयईहिविधिरीतिपिछांनिकेपुनिसु
कालजिपजोय ।२४३। जोमिसरवीआईसुनिनछईघुमडिचकुपासदंपतिनमगतमनहिमनअलियनकु
तहिनरास ।२४४। कहीचारूसीलासखीचलिहूकुंजमहाँसमुनतनठेमनमुदितकेदंपतिपरिकरखास ।
२४५। इककिनितिइककैनैमितपैकेंअनतानिहिठोरब्रह्माद रासनैमित्यमैंनित्यरवन्यौचितचोर ।२४६। त्रिति
पकद्वैनेमित्यहेजहांसर्दनिसिरासहोवतहैसौवर्निहैमधिखटरितुविलास ।२४७। सजामंगनासैनके
पीछेंचोकविशालनित्यरासकीकुंजह्हारमेंलाडलीलाल ।२४८। बोठिमखिनमयपालकीनैकैंपरिकर
संगपकुचेकुंजसुरासमेंवाठेअत्रितिरसंरंग ।२४९। कुंजरीतिलखिमुदितमनअपेललीअरुलालतीनिकुंज
समबह्दवतुर्दिपुजानकुपाकूंस्फटिकमणीकोअबकुदडकन्याअतताकूंताठिगतरुवरपांतिहसतनंद
नवननजाकूंललतानवनवकुवनिवनिसककअसकोवाकूंचोतनीचिमैंनानियेअतिविसालमणिमयरवि
इक तमैडपमधितिहिसोहससिरूपसरसमोतिनखचित ।२५०। बंडमणिनकीरहासकुंजसोवनीअनपमीसा

रुचि जहं

सीरू० नं० ३७ दीरघपांति कों तितिन की हद दुरूपमहा रापन्ना लाल लगे तिहि छवि तिजुग रूपमपे कहो प समस्ति नदपदर्सन्ने को

टि नरूपमसोमञ्अनंतनजावन निज प्रकासकरषामपहरूपसरसमोतीनकी रचनासोको कहिसकह २५१

मोतिनमय अतिकामनामुमेवन्सें अनेगेवूटावे लिअपार नारलखि विविधिमनधा खे विचि रुपचालमन

चंडमणिकर्तमचोखे दखनहीं मनहर्षपावते द्रुगवक्रपोले गुच्छामा पजके विविधिकहन दौनहितामु

जिहि छिहरूपसरससीतलप्रभानिंदतकोरिनसोमसुचि २५२ उहिविधिहीनखिनामुवेदिकावहदमनेहिरावल्ली

विछाय तिमुक्त कामंजरितारनजों हरपरदामाई वानमां निपेनवामु जगतरमोतिनकालरिताराज

छवि कुछ तनमयचांसमणिनजरतिंहासिंहासणहीरमपसितगद्दीमंसं धरूपसरसदंपतिजहांप्रजेनुजदेगर २५४

जानिपूर्णिमादिवसतहों आईसबवालाकी नंदंपति कूंजहार तनखिफ मिलकिजालानागयक्षगंधर्व

सुतापुनिदेवजमालाप्रथम २जिनरासकरनकी रीतिरसाल सिपपिपमुखअवलोकहीं जिहिविधिआ

तिहि सो पुसहो परूपसर पूवदतमनकशिदिखलावहिस मर २५५ छिटकिचादनीरहीकुंजकलन मसुहाई सिपपि

त पमनआनंदजपोसोवनिनिजाईचमरछत्रके गकरनवरवीरा तुरवदाई आनरनागरीतिनहिदेतव

लखि रिदाजनाईदंपतिवोले प्रथमतोगंधर्वनिकोरा सरूपसरसअवहोवेरजामेप मेफुलास २५६ रागकजोडी

तारु सिपपिपवचनमुनतसवहरषी गंध्रवकन्यानठी अनूपमसाजनकोसुलजरषी दि नाचीरीतिअनोखी

२ सखो ७२३॥

विधिरूपसरससदेसीम्रारम। द्रौपरषी। २५७। सुरकन्याकंतरा समझनोत्यो। वङ्कविधिजंत्रवजायन्अनूपमनांच १
तांडवचोत्यो। टी। गाईमारगगांनअनूढोकीन्हस्रवनमनपोत्योरूपसरससदंपतिसनवोलीवङ्कुरिरचेन्मवजोहि ।
२५८। रा। सकैरकन्यानागनकी। वाद्यवजायप्रथमसुरवदीनूंवडरसियारागानकी। टी। नत्यकीनवङ्कवि
धितेमूदिनरव तां ननकारूपसरसमनखेंचिलिपो मो जलसोंहि मनकी। २५९। पद्मकन्याकारासकरनजलन ।
चनरीतिअनोखीइनकादूणाचूणितुरपदचल टी। अदनुतगानकीनतिनतैसेसुरकमर जहदपलनपलरूपसर च
ससेमोनपापकरुचौ तुपअपनेथल। २६०। रागानालतथारासकरत गोपनकीक। न्या। सोत्तोरापप्रियान्कति
धन्या। प्रथमवाद्यसुरवत्तरोअवनपुनपुनिनांची दीपर जन्या। टी। कवङ्ककचतुरर संगानत्पतकवङ्कविलगाहो
पअन्या। रूपसरसचातुरवडजानकुडनमेंजेपुरांन्पा। २६१। गोपलनीकंतरासनत्लाविधि प्यारीलखिर सुंदर
नित्रनिधि रचिसंगीतरीतिक्रांतिलौंनीवजतवाद्यमनवसकिधि टी। द्रमिडगौडदगोरदकुरकुननगिन। खूरव
रवंखेंथोमिनतनताधिधि अकत्तिलेमोजपियासेंरूपसरसगईमतिसिधि। २६२। रा। सकरतनपजान्अलवेलियांसि
यपियकासुथ रसहेलियां। सजमिनायवजायप्रथमतोदां धींस्वरकारेजिपां। टी। पुनिनाची वङ्कविधितेमनह
रनघटिसंगीतीकेलियां इसविधिनत्पकहेसोमुनिपेनाट्रनृत्तां इवेलियां। ९। नत्पलास्पअरुविषमविकट

दरसा छवि ज लज

थुपे हाहिगो जो इलिखि लियो । आसिङ्गा तिके अवलि नय जानकु नाइके लक्षिण महे लियो । २ नायक पद के अर्थन
से जो रस जा वजक्क वठे तिय । नायक कहत हैं रूप सुरस तिहि सो कन आहा कै लियो । २६३ । रस जाकं न पक्ष आनि सुख
दाई । रचत रीति संगीत सुहाई । भाव विभाव समेत नि व्यभिचारी अनुभाव [illegible] गनाई । २ निर्विकार चित्त में विका
र होय पहले तो भाव कहाइ है विभाव जा तें रस जाने द्वय विधि के जो गाई । १ कहत हैं जु नायका [illegible] नायक आलंबन
इ हि ठाई । भूषन वसन आदि दे तामे उद्दीपन जु जनाई । २ प्रगट करें चित भाव को आलि सो अनुभाव बताई । थि
र कटाक्ष आदि कारस वही मानत ताकों माई । ३ सब भावन में चिन्ह सु होवे सो सात्विक दरसाई । ४ तं स्वेद रो
माञ्च कंप सुरभंग वेपथु आदिक आई । ४ विवरन आंसू आठ न नौंपे सात्विक की प्रबलाई । स्थाई में जब फिरे नाहि
विभिचारी बदल सुभाई । ५ बचन अंग आलिनयतें वाकूं तिनने दई प्रगटाई । हास्य सिंगार वीर भयक रुना रौ
द्र वित्त साह्याइ । ६ अद्भुत आदि आठ रस होवें कहत नाट्य सवताई । रति अरु हास सोक रिस उत्साह भय रु जुगुप्स
ताइ । ७ विस्मय आदि भाव यह जानू जा हि वदत है स्थाई । ८ पति परस्पर दंपति मे स्थिर भाव जो हार नि गाई
९ डग कटाक्ष कहि नस माऊ सो है प्रकाश तलाई । रूप सरस इक स्याम सहं जन चित अंजन [illegible] ताई । २६४ सवै
या । अभिनय चार प्रकार वखाने तिन की रीति सुनू मन लाई । आंगिक वाचिक आहार्य सात्विक चौथो गनि

सुखदाई। आंगिकजो अंगसौं दिखराइये सो तो तीन प्रकार कहाई। सारीरकूं मुखपुनि चेष्टाकृत। सारवाल्ये
तनपंगसुगाई। २६५। सिरकरकरनादिकसैं होवै नाहि कहै सारीर बखानी। नकटी नैनन तैं जो करिये तिहि कूं
मुखज वदत रसदानी। नक्षुभित निसवासित अनमित कटद्रग संग चेष्टा सो मानी। हाव भाव कूं सब वा
अनियेपह आंगिकके भेद प्रमानी। २६६। वचन रचै सोऊ वाचक मानकु येही भेद लखो मन लाई। सांगवनावै
लखन साजे सो आहार्य कहत सुखदाई। सात्विक भावन तैं जो प्रगटै सात्विकता को नाम धराई। अर्थन कूं दर
सावे वकु विधि अभिनय संज्ञा ताकी गाई। २६७। कहूं कहां तक ग्रंथ बढे तिनकी गुन निधि ना जा तन गाई। टीक
२। पुनि नाह वाह धुनि होत न चहूं दिसि श्रवन सुहाई। सियपिय कहीय दै रचिये अवलोकति पयपेक पुरस। वनिता
है। सो कहूं आपकु वी चित्रा जिये [illegible] नई जिमि चाई। २६८। तथा जल्पति ताले। करन लगी सिंगार वे
नागरि नव पंचखंड सिरकीट कला कलित तस पुनि जुल्फन मार दे। रे। जिमि जालन तिमि चनी अनोखी न
खसिख रूप नदार वे रूपसरसई कड्क तियमानकुं डंकय पुरषाकार वे। २६९। मध्य विराजे आय दे जुगलनव
व धरिम नहर सिंगार अनूपम कंधनु जालपटा पदे। टे। मोतिन मयी तगथ सो जानकु विचि ससि मणि नउरा
पवे रूपसरस गहीम मधसिनसो जितना पैं छाये। २७०। नाचन लगी नारि दे अमित विधि। बीच विराजे लखि
वे

प्र छै मा
रिव

सी०२० चे० कैटं पत्रि पहहियं मोद बढारि वे । २ । इकरतिका पुरषद कर सजि नई मंडल आचूरि । करजोटी करिन सत चढ्कु दिस
३९ मधि लवि विसिंधु निहारि वे । १ । कव कुक बिलगा रहो यजावे कवढ्ुक फूटी पारि क वकु र घूंटननट तीजे मरद्दा नीछ
विका रिवे । २ । आसंग दऊरी कि नप तिमु तिति नको हार्द विचारि । धन्यरसु रतनते वोलत पुस्पन ऊदवरसा रिवे । ३ ।
सखी कहत सुनुए जक वरनु मङ्गसंगीत ज्वा रि । रूपमरसमुखेधोसु निमिपड्भिक्रत्नु महोङ्कतया रिवे । २७८ ।
करन हे अरस परस सिंगार । पं चखंड सिरकी टलातके । काछतथा मलद्वार वे । २ । नटवर नेपसज्यो अंग अ
न स दनुतं [illegible] त्रुरवढ्र विवार । मुपन वसन अचनि अति लोनी मन मोहन रस कार वे । १ । वंसी शृंगार दीपक रिमि पज्यु
थु कारत करिष्यार । नेसेही पाप ना मप्पारी के चिपि वा अमल सुठार वे । २ । आर नित्य वतजान कुलह गा अ
गियां कुरती मा रिगि हना अमितखेतम णि जडि वां मुक्ता मय रवकार वे । ३ । अंजन विंदु लगा देवी डीपीत
मङ्क तवलिहार । रूपसरस अजरलाये नपुनिआये तसा विनमजार । २७२ । टमरी । दोजनचत आय सियरा
मराप्स माधि नुपमा कहि न परे सजनी । अंजत अवाजे वङ्कुचद्कु दिप्रा नमडो मुखेजल निधिर जनी । १ । तांडव
नृत्य करत बङ्कु विधि से नई नन्ज नकूलजनी । रूपसरस इहि रस के माही थेई अक्रत अभिनियां मजनी । २७२ ।
अघटत हैं संगी तसत तर्दि शना गारि प्रमुदित मुखवज नी । धुमकिरर तकिटत क्राकिटिर नकधिलांग धार

षिधिधिन२ थुंगरथातकाधौना । टे॰ नंद्यावर्त्त मूलइन आदिकनत्परीति अनमितिकीनी । लागडाट अनु
उरपतिरपगतिकहिनजाउजिननीलीनी । १ कांकतमसविधांमधिमिपपियनाच्यनकं षतुताडीनेकवडु
कफूटीकवडुविलगाहे कवकुलगातकमकेसीने । २ मयतालस्वरमांऊलयेटोनद्युंमरिजरनिवलनि
नानी रूपसरससुखवरसरस्रोकरिपानतईअलिपीपी । २१४ । रामरसिकनवळेलतालजवअधरधरी
सुंदरखंसी । अचरनलगीतरंगतानकीभरीअनंगमानचमी । टे॰ सप्तस्वरत्रयग्राममूर्छनाबीसपैकसिन
२ मंसी करनलगी करनवरागनकोअवतनपरतमवगाईफंसी । १ मोहीससिवदनीसमिनमेंदेवव
ध्येसस्त्रिनवतंसी चरकिपअचरअचरचरकीनेकहि नजापगुनगरखंसी । २ द्रुवतनउदासिरहलतन
गनकेथकिसरिपमुनगणनतुयंसी रूपसरसधुनिवडुरिश्रंगकीकानपरतमुक्षिबुधिनंसी । २१५
दूहविधिनटनरामनटनागरसिपनागरिमनमोदलहैन । अकथरीतिदंपतिसंगीतपरमनस
मजावनहेतुकहे । टे॰ अमितजानिगहिललीप्रसादा । वाहसीलजूलालगहेचडकलाजूलामांखपि
लावनमुक्ताकुंजमहे । १ करिकेखरीहिडोरसेजतवपियप्यारीपोढापनहे रूपसरसमीदुलपद
केउकरपंखाकेउवतलोनिचहे । २१६ । अथनटनागरनामको अर्थ नानादिक अनुसारजो

अं नाचै नर्तक ज्यों निनव रसआनि नपचतुर सोनटकहि ये गुणखानि ।२७७। संगीत को अर्थ नृत्यगान अरु वा
५० द्यत्रय अंग जानि सौ नमोरा चिंदपति सुख कि पोये हे रास की रीति ।२७८। सो खमांगि कै कंवली सचैनि
जरूप जवनिता । अस कोकादि तैं रास है तन्माई कुरगानि ता । विदै नेरी कि विमान नचठि सुख सानिता दिप नई
सो ति जस वकुंजा ति परस्परमा रगा ननिता । पक्कवी अपने धाम सै मैका मति पाम द द लन ठ कि चि रूप सरस सि कहै
कहहि परामर सहैं अनन्य [illegible] कहा कवि ।। २७९ । घोउ सम सेवन दंपती हिर सपानकरावत । सपन कुंज की नारि अ ।
पत तवविन पजनावत । करि सिंगार सुखपाल वै विदै ३ पोढन आवत । पाविविधि तै ये मास अपति सुख अ
यह ति छावत । वंद प्रकास निहारि कैं पूर्ण मासि कार खेन निसि । रूप सरस सै मित्या निपा कल कूपुनि निस जिहि
कहि सि २८० नृत्य परिश्रम जानिया हि नै मित्र करावेन । विनानाच को गान वाद्य सुख निति प्रति ताखे
उ । रास रहित नहि रहहि सिपपि पयस चित बाखेउ । दि नप्रति ला रविकैं खेद नायमे पुनि मन माखेन उता पुनि
तैं कीन विचारा गायक मन हर सुख कर र रहसि नबीन हू करि कै दंपती रा[illegible] स कुं जकूं आनन्द अव ।२८१। अपरा सो
सस्थान क वकु वया ह से न कुंज की कूण मध्य सोभु रूप सोधाम ता हि मैं जानि सदा मो । तहां नैं जावत सु
ख द सुखद कूरह तक ये सो कव हू जन्मा वत यहा हू रि है स्पर्दे पि अयसो गानती मैये हि कुं जो है विजग सम

देत

ऊतह रहतहैं निस्परा सकीरीतिजसरूपसरसतसक रुतहैं । २८२ इतिनीपुर्णमासी पुर्णमासीरासताकीवि
धि । अथनित्यरासकीविधिलीख्यते । कदी २ जोहोय ताहिकहतनैंमित्यसवनित्यजाहिकीं जोसदिनप्रतिहोयेवि
धकियह । २८३ इतिनित्यनैमित्यभेद । अथरास । परिकरलैसंगखासरा । सथलीआयेसुघरचढ़ूं शाधुमांडे
सुवास । विछीविछायतसुरुकनव । अथलावणी । रासदीकुंजसलूनीहै कोटिचंद्रजानतछविलखिकोउ
नहिसमदूनीहै । टेक । जड़ितनसासिमणिरंगनीनीहै । १ कुसमेटिमनकुंअनमितकुंजाकृतिकीनीहै । सत
हैंमोतिनकीनवदामसनकनउपमति २ नउगनकेजालवनेंअभिराम । २ विद्रुमपद्मरागास [illegible]
[illegible] ललाम । जानकुंकियेइकटेदमक धर्मिसुवनअभिराम । ३ रचितहेपन्नासहाअन
पमनकुंकुंदगानकलमलातहेरंगेजुगलरसरूप । ४ लगीहैंनीलमणीनीकी मंदअवलिकीमोत्ताचोर
रतकहतलगोफीकी । ५ लालनवरबीनजावतहैं हीराफबेककूंकामजनी विंसिजावतहै । ६ पीतमणि
सुरगुरुअवलीहैं स्वर्णछटासोराजनसवपेद्मामिनिअमलीहै । ७ रत्ननवजटितकामसमोहै कोटिनवय
आनिविराजेसियपियछविजोहै । ८ कहूंकहारीतिअनोखीहैं उपमाकेहेलहतकछिनघुनाचदियेचो
खीहै । ९ वनेंहैंपडदासाईवान । मनकुंपटलवारिदमितकेसोसोहत अतिछविमान । १० विछीहैंमितवि

सी०रा० बाति नीचै । बूंदौ वेलि मनहु थिर चर सो मसि वा न छि सी चै । ९९ । कहा कहु छवि प्रकासना को । रूप सरस सीत ।
४८ रघुनंदन चंद न सुचि वा को । ५५ । रोमनाइ किरीति हरहैं । कहा कहु मुनि पेरी सजनी । अप मांस वर देह । २० । म
निन की दीपा व छि सो हैं कलम लातन चढ़ि सा अनात पंद्रह वन मनमोहै । १ । हजां हं का मजु पेसजनी । सी
त प्रकाश नि हारि कतहु न हि मालुम होय रजनी । २ । डारव तडा रकर न कुल्ला सत्र लि पटिवा मध्य अंत ५
मंपुस्पा कतगिल्लास । ३ । जिनकी सप्रवाद लक ल पूल वने अमित विधि के कोक हि सकं ढोर । ४ । अतुकूल
ध । रंग तिन के नाना विधि के हरित नीला सि तपीत अरुणा । अंगरल सवयं सिधिके । ५ । तिन में चित्र का
रवक की न्ह खगा मग तरवा कैति अतिमन हरमवकु मैन । त्रिविध दान । ६ । टके हैं कुंत करन के सो । वीचि
रहै डी सो मित नवसुघट रीति तें सो । ७ । अचाये मध्य देस के मांय । विधिर केजु ढिवा लगी रकवु अपमां कहि यन
आंये । ८ । नथा हैं नीचे कर सजहार । गि पेक व नक अनत तं जाति कसो न्या वढी अपार । ९ । किंतपक पट्टिन की
मधि तुंड के उराजन पुलुवन के करसैं के उमुखे के अंगुंडे । १० । कितिपक थंतन सखी वना यतिन के हाथ नमें दी
म पावलि था लधरे छवि छाय । ११ । दुकूदि प्रूमै णिनी लसु काम अधी लवणो गिरिकें परिसो नन वत दरसै न्म
निराम । १२ । तन में रचे मोम रवि हृप । पे रिविहो य न्तम बुधि वा नम नखैसी छवि राज्य नूप । १३ । कहांत कनंनरी

तिन्हांकी रूपसरसमसी ताराघवरकी रा मरहसपवाकी ।२६। वीडीहै नवविछवति हडी ।सुक्ककामजरित
रसणिनकेतें कोरनजूडी ।टेक। वीचिमें गिल्मामिताई है मडुसपर्सकछुकहिनसकूंपयफेनुलजाई है ।१। म
धगाहीमसंषलागीत हाराजे दंपतिगलजुजदेलखिसखिन्ऋनुरागी ।२। लसत है षोडसा दिवकु नारि प्राण
प्रियादसरथनंदनदीजे निमिवंशकुमारि ।३। संगतिन सहचरिगनराजैं ।मान मारतिको दिनमारदरू
पटेखिलाजें ।४। ऋारतीकरी ऋलिननीकी ऋमराव तपुनि ।२। छविलखिर मनहर सियपीकी ।५। वरत
वीरा ऋत्तरवारी पुस्पमालगल डारिछिरकतीगंधितसुचिवारी ।६। जईहैं मोजऋनोखी सोसाजवाज
खोलेसंगीत विदनागरिचोखीसो ।७। मिजायेसवनिवंसरीमैं ।राजललीकरसोंनित चोरत्तचित्तसुर
करीमें ।राजललीकरसोंनित छेलवरलीन्हीवीणाग्नऋनूप ।वरसनलागीरीति संगीतीवांधोरागखरू
प ।८। कछुकगायेचूकि जानिकरिकैं लेउजलकनूपजाम्ब्रलवेलीदरसाईजरी के ।९। लपोऋानंद प्रीत
नमसनमायवाह ।१०। कहिर पुनिरमुखलईऋकलपटाय ।११। कहततें धंनपर वानीचाहपुलिन्ऋादिक
पुनिवाजेवजतीगुणखानी ।१२। कहूकहामुखकी सरितवही रूपसरसकरलेसत्तारसियरामरिझ
परही ।२८। सियाजूलेकेकरमेवीन वरसनलगीरंगझरिपांतवहोयरा सरमली न ।१२। कहततेहेंपीत

सी०रे० ४२

मसैं तांनी ॥ मोरी अधर धरी वंशी तुम वजि पैसुखदानी ॥ १ ॥ नयो अति मोद पियाम नमैं रद छद लाय पाय पत्र ।
नैं दहि पमोह तन चरननमें ॥ २ ॥ तथा श्री चाहमीलजू नै जलतरंगगति नरिस्मनंद रमा वत मुखदूनै ॥ ३ ॥ नयो है
सुरमंडल मुख गा ॥ त्रपस प्रकमुनिताके रं ना दिक लाजतन नगा ॥ ४ ॥ लक्षण लेसगारवैठी क्रतमु लोचन
गमक त्रपंगी मदन रंगाश्रेठी ॥ ५ ॥ पद्मगंधा मा रंगीले पं घटत सरगाम विविधि नाति केवा हवा मवर
हि देय ॥ ६ ॥ वरारोहा जलै मुहचंगा चेमाक्रतक ठताल वमक पुनि हिमालई मदंगा ॥ ७ ॥ पद्याई हिओर लय पैहै
तथा सिपाकी तरफ विराजत वमु संख्या जै हैं ॥ कछु मे वकुरि इहांहीं नै जे जे मातना लियें अलिङ्तकू ति मितत
कूरी तैं ॥ ८ ॥ विस्व मोह निजि मिहमाया सतवलै चौट रुवां पेडुक्की दिखावत मोरवाम ॥ ९ ॥ उमिला हेमांकेपु
रु है लियें मजीरा तरह निकालत सुंदरम दुसुरु है ॥ १० ॥ चंगमुकु रूपलता लीन्हैं वपक लाजु गहि मारगी मन
हरगति कीन्हे ॥ ११ ॥ त्रपंग विमला की कुलिनमैं कमलानन मतार रुनकारत मारतो चरख मरमैं ॥ १२ ॥ वजै
सुरमंडल चंद्रकला जलतरंगगति जि मिसर्वेस्वरी तिमि प्रसादन वला ॥ १३ ॥ साज दुकूतरफ एक ही रीति
अपर रूप वृत्यादिगन दरसावत नव संगीत ॥ १४ ॥ रूपमरमादिक दिग सोहैं नैत्ताक मवजावत पिय प्यारी
गुनगात जो हैं ॥ १५ ॥ दोहा ॥ वजी जिकोरी गति मध्यम राग रही अति लाप वकुरि गान करनें लगी मूर्निमान ॥

दरसाप । २८९ । सखीरूप तहरागनी मूरति मानलसैन सिप पियरिझवनहेत सोमु निमुनिकैझूलसंत । २
९ । अथ सखिन को गान । राग ऊझोटी । ध्रुपद इकताल को । अथवा तिताल को । धीमा को ॥ र सिपासी ताराम
सरमरस । । आजिर हैं न रंग नागरनागरि । सीलते जगुण धाम । टे । सिय लखि लाजनको टिनरति अति प्रिय
तें अनमित काम । रूपसरससखी धन्य २ हम सुखविलसत वसुजाम । २९० । हमारी मालिक नी सिय प्या
रि । जन्म खिलपुनि ब्याह । येक संग आई पह समुरारि । टेक । । धाम कनक अरुनामजनक जाजी चनि अव
धि बिहारि । ससुर चक्रवर्ती जपाये सासकोसल्पानारि । । देवर लखन भरत रिपुहन से बडी चारुसी
तारि । रूपसरसइ मिलेदमांनिये जिमित्त रंगमुचिचारि । २९१ । हमारी संग सिया सदरीति । बैठन उठन
असन अरु केली सयन सुखद करि प्रीति । टेक । नव प्रीतम हित चितकी बातें हास्य सरस रसनीति प्र
थ मामिलन आराम आजि लों रूपसरस इकचीति ॥ २९३ । हमारे मन मोर तिय मांनि । तियकंतप्या
रे अनूपम जिनसैं अपनी अनुजाजानि । । टे । अवधिबिहारी प्रीतिअपारी प्रानप्रिया पहिचानि रूपस
रसनर नागदेवजा लखि २ गरलगगलानि । २९४ । इति सखिन को अतिमान गान । अथ खासदासीन
को अतिमानगान । तालपिसतो । हेनको उअोरसमहमदासिकासियकीलालती जिनकूं रहै जीवन

अपाना

रूपन

जरीवियकी ॥ टेक ॥ नरनागकिंन्नर देवजनन के चाह पे जियकी ॥ सेवन दवेनै कछु पकछत ननैतें दंपतीपकी ॥ २ ॥ जा
हि मेवसु ज्ञामपर रुचि श्री ज नलीपकी ॥ देखि रहती करतैहैं वदु मोजहीपकी ॥ ४ ॥ चखपलक वत प्रीति हे पुनिख ।
मिनीपकी ॥ रूपसर ससुधन्यग न नीडूमिखकीपकी ॥ २९५ ॥ मांगी न आई कछू तें नातो लग्यो वड जांनि ॥ रहतया
ते मत्र निसि दिन प्रेम मैं मप फुलांनि ॥ टे॰ श्री सुनपना संग आई दासिका सुखदानि ॥ मातु हमरी मो पिता मिथि
लेंद्रजस मांनि ॥ १ ॥ आजन्म तोसिपज्रू विनां नहि ॥ ओरसूप हि चांनि ॥ दई श्री महाराज दायजलई इन ललचानि
॥ २ ॥ नव ना लक्ष्मैं प्रीति हमरै गेल इन की ठांनि ॥ रूपसरस हि हर्ष दाई कस्वामिनी गुण खांनि ॥ २९६ ॥ इक सि
या सिपु लें इजा विन मानती नहि काहि ॥ इन सें अधिक को अपर नांही मानि पेक छुजाहि ॥ टे॰ सुनत जां
नन संनु हरि विधि ता लके वसन्आहि ॥ सो रहत आधीन इनके जामवसु लठ विचाहि ॥ १ ॥ चक्रवर्त्ती तनप पुनि
जे इला तिलो मच मांहि ॥ रूपगुणरस खानि सो जिहि देखि जगल लचांहि ॥ २ ॥ असुर सुर गंधर्व मोन्ना देखि
ता सुक मांहि ॥ रूपसरस हि लखत मोत जिय लक ज्ञागम नांहि ॥ २९७ ॥ धनि हमरे नाग सिपसी स्वामिनीप
ई ॥ जिहि रसविवसरहत लेसदा छवि सिंधुरघुराई ॥ टेक ॥ तिपकेज मुख निरखनै न घरप ढ कियेल लचाई
नुजव त्नरीपु नि अस कामदन रूलपराई ॥ १ ॥ करत है श्रीरामअभित निहिहेतुर सदाई ना चिगापकना

पलेतरि ऊायतरलाई । २ जुगलनके नवनेहकी गति कछु नकहि जाई । रूप मरसति हारि निसिदिन मनना छाई । २९८

दोहा ॥ कहूं कहांतक नेद अवइनकी संगहे ओर चारूपी लकिसिं गवकुजनके तिनके को रि । २९९ ।नसवगाईह

ये ते विविधिराग निजनागसुनि २ पियमन में नयेगाने को अनुराग । ३०० । राग जंगलो ऊ कोटी । जलदतिता

ल । नवरस री तिपियजूगान लगो हे री ॥ सप्तस्वर जे सर गामपधनी । सो वरसां नलगे हें री । टे । ती नग्राम सवरजु

पंचमरी पगिना नलगे हे री । रूप मरसम रछना अकई श्रुति वाई सलगो हे री । ३०१ । वरनत हें नयगा वन की

गति । जो सुर आदि अलापम ध्य हे ना हि धाम कहे ये । टेक । मुर्छना स्वरके विश्राम हि वदत जे गुनिजन हें अति ॥ सति ।

२ रूपसरस एं नेद वतावत रागरा ... सहू के प्रति । ३०२ । रीतिरसी ली कहत अलारी । प्रथम गीतके स्वरकों यह

सुरवतेंहें ना ति स्वलीरी टे । जो सुर आवे अंततासु कूं न्यास जनन अमलीरी । वारंवारक है सुर ताकूं अंसव

खान वलीरी । अरपतिरपके नेद कहे सो सुरकं पने ... ल लीरी । रूपसरस मयूनि न्न २ करि वर सावत

ना रिखलीरी । ३०३ । रागन के त्रपन्ने दकहे हें री । ओडव पां च सुरनकी जोनकु षं ड्डव षट सुरहे हें री टे । स

नूं सुरखो लें जा के महि मो मंपूर्न वहे हें री । रूपसरससखि ड्डमियल खिये ओरकु कहन चहे हें री । ३०४ । ना

थान्यमा ब्यारि वर नमवराग के वरवानें हें री । रहि २ के सुरठहरे ... वक्रुरि स्थाई सोपहिचानें हें री । टेक

गाप्रहा नरहस्य

जब बाले सुर ऊरध कौं जो आरोह। कहलौं न हैं री। तैं फिर अध कौं आवै सो अवरोह लाजानैं हैं री। ९ एतनि मैं जे
मिलि कैं हो वै सो संचारी ठानै हैं री। रूपसरस पेने दवता कैं दोउ हरखां नै हैं री। २५ इति गांनरीति। अथ वाद्य
भेद। वंद्य न के अब भेद जनायै है री। टेक। ततसो जिन कैं तांति विराजै वीना दिग नायै है री। २। लगै चर्म मरदं
गादिक अनवद्य बतायै है री। छिद्र पुत मुख तें वजि वंसी मुखिर कहायै है री। ४। कांस्यताल मंजीरा दिक सो घ
न संज्ञा पायै है री। रूपसरस पेचारि तांतित हां वाद्य वजायै है री। २६ इति वाद्य व्यारव्या। अथ वा साडा ती न मंजी
रादिकां को सुर वठै उतरै को नैजो सू। अथ गायन दोष गंयन मैं दस दोष कहे है री। मुख फारै पुनि दांत घसै
कोनु गालफुलावै है री। टे। आंखि मूंदि अह वेग सहित सुर ताल न लावै है री। चायस सुरक कहुं ताल हीन विन
तान जनायै है रे। ९। सम पच्छ गावै पहर सजु गातोटगनायै है री। रूपसरस इनरहि तत हांमव वकु विधि
गायै है री। २७ इति भावैया ० दोष। गावै गुनी इन दोष न वाहर मुकु अलाव्या जावै जब ही वैठे गोडी ना पर टे
सुरठहरा कैं गाइये पहली धीमी पी छैद्रु मर। रूपसरस ई हि भांति कीजि पैनौ सो सुखद वर। २८ इति गान
रहस्य। अथ प्रीतम गान। रागऊ कोटी जलदतिताला। मेरी प्रान पियारी। अलबेली सुंदर गुण खानी। ज
नक नृपति नंदु जार समरू रनि सरति अति मनहारी। टे। नमार मार तिच्ची मार दन्ता पैं के टिन वारी। अन

रूपसरसनव

सो

नवंद विद्युतन्नि हितनकी पावतन हिममतारी ।६ कहा कहूं सोभा सुनउ सजनी ममपति अल्प महारी । धनि
भाग ते पाई ऐसी नारी ।७। अकथ रूप गुण खानी । तिरछे नैन दृग अधिपजा । वाक मधुरता सुनि के नाकी
रंना वा कलजा नी ।८। विकसित सुरद्रुम कुसुमावलि सोर ततैं सकुचानी । करपद कंज नख के कदलीत सुक
रिकुं नमित वानी ।९। कटि केहरि चक्रवा कुच श्री वादर मुखचंद मलानी । बिंब अधर रद वज्र नासतिल सुमन
खंजन नैनानी ।१०। सोह घन घन सम कर्णे मुक्ति सुदु वेनी नाग निसानी । वसन नमन कुआनंद वारिधर नूपुन नडकन
कांनी ।११। तन दुति हिम वुछिसा रद तिपरति अद्भिक मुरकांनी । हसत रमकि हिना इव उदय तेग हो मोर इनपा
नी ।१२। श्री मिथिलेंड ललीमेरी जीवनमूरी ॥ अति सुकुमारि नवल तन गोरी अद्भुत रूप ढली ।१३। जोवन म
द मांना रस रानी मम मथानी अवली । जनतरंग सवनर वासनके कोटिन संग अली ।१। वोलनि हसनि कनि सख
मोर निदो रनि चितठली । रूप सरस उमि पेखि सवली मिविकसित हृदय कली ।२॥ केसी रूप सलूनी श्री मिथुले
स्वरनंदनि । विरंचि विरचि नियो वड पर श्रम मनातें कवकुन हूनी ।१। रम्य गुण खानी जिते नपे जगमां सकल समाये
नूनी । जिन करन्नं म समे रसुता निजधर्नि वनार हि मूनी ।१। सेवन सम परीखि जनक ई दई २ लई नृपति करि ख
नी रूप सरस सोमि लमो हि जव नाग पच्छ पलपि नूनी ।३। दोहा गर्ने जपे मायक नहार मदायक चित चोर

रसी० रू० नं० ७५ रूपागा। षिसुतकी दनी। याकी मेरी जोर। ३७। सत्य दचन मन कर्म मम जीव निजन न कउ लारि। याविन मुख कत हूं
नपल न पेद्व ठले ग विचारि। ३४। इतिप्रीतमगान। चोपई। सुनत नेह मय वचन पिय के। अति कुह्लास नयो नु सिय।
के। सहित मोद ले गो दसु वीना। गान करन लागी रसलीना। ३५। सुनत सबै हो पसजग निहारै। वाह २ मुखतें जु उ
चारे। प्रा। तम नेह सिंधु अवगाहत। प्राण प्रिया की प्रीति सराहत। ३६। अथ ललीजू को गान। ३। कोटी जलद ति
ता लो। मेरो कंतसुजान। छवीलो वे। कुसुम छकी लो गुन गरवीलो मोहत लखत जिहान। टे०। सुर नर नाग पचरां
ध्रव जापाहिं देखि ललचांन। और कहा कहुं पेखत जाकूं मुनि वर धि न ध्यांन। १। जड हो य चेतन चेतन जड। जांके
करत रूपरसपांन। रूपसरस मैं मोवर या पोकें न जाइन दयान। ३७। वांको री ममस्याम। रूपसलूनूं वे। वाकी
नेन सेन रस दायक वांकी नौ हल लाम। टे०। जुल्फे कारी वांकी नागनि कु समग्यो वी छवि धाम। वांकी पाग पेच
सिर चंद्रावांकी किलंगी दाम। १। वांकी वोल निरस तरी सुनि मोहीवाम। वा [illegible] कोकुलवां
[illegible] मुलाम। २। वाकी हैरस केलि अनूपम उपजावन मन काम। रूपसरस [illegible] ह [illegible] तौ। वस कीनिजक
जाम। ३८। छैल छबीलो वे। साजन मेंडो। अति सुकुमार किशोर स्याम तन चोरन चित न रसीलो। टेक। मृदु मु रनी वाकी [illegible]
स्का नि मैन न उपजावनि वो ल नि गुन गरवीलो। रद सित जो हीरक ननसकाहोय मनु विद्युत दरसीलो। १। को [illegible]

कंजायतनैनारतनारेमदभरआरसोन्मीलो। रूपसंकहै अडगावैनकिमिअदभुतरूपनवीलो। ३१९। छंदगारोन
चकैल। राजकुवरवरहो॥ सुंदरस्यामकामभदगारनमारनचखतिपगेल टे० नवरसरसितनुमानीमनह
रसचतअनोखेफैल। रूपसरसधनिनागतासुसंगाकरतजामवसुमैल ३२० इतिगानअष्टमोनैनअपमा। दोहा। पी
नजोंनिपेमीनसेआपतडोराय स्यचंचरीकतारक असितरतनारेबविसमय। ३२१। खंजननसेकंजनसहिनचंचल
ताकेमापतीखेवानसमानहै इस्कघावकरिजाय ३२२ चौप० मेरीजीवनप्राणपहिचानूं। दसास्पंदननंदनरसदानूं।
मनवचकर्मसरसअर्धांग अनपायनीजामवसुसंगी ३२३ इहिविधिवेनसुनेंसियजीके प्रेमसिंधुउझलतपियजी
के महचरिगनमनुचित्रवनीहैं दंपतिप्रीतिनजातगनीहै। ३२४ अथसहचरीगानरागजंगलो। ऊंऊंटी। जल
दंतिनाल। नेहाकहोनहिंजाय दंपतिको॥ सियजीवनिपियपियजीवनिसियतनमनवचनउरकाय। टेक
अष्टयामचितजुगवतरहै दो नविविविधिकेलिदरसाय। रूपसरससरिनपेखिर गतिनागरिरहै विकाय ३२५
टेखेमदनमतवारे दोऊ री। निसिदिनरहतपरस्पररसवसनागरिपनअतिप्यारे। टे० नवरस्यामरतिक
मलजावनवीनावंकीधारे रूपसरसमनमोहतसबकोनीखीनानअचारे। ३२६। करतनितिरासपाही
तोंने। गावतआपगावावतसखिपनअपजावनकुल्लास। टे० रीतिसंगीतनअस्पवर्जितहोपलीनेहपरि

करावास। रूपसरस सरस वरसत अद्भुत रहस्य सिंगार प्रकास। ३२७ रहस्य अति वाकी। दंपति को। परिजन मोद
व ढावन पावन दुख गिरि सिर पवि टांकी। टे॰। नवरस मय गुन खानि अनूप म जुगल नेह की वांकी। रूपसरस
तन मन वस कारक हारक मान घनां की। ३२८। राग तान अथाकुल फरक। नई मन मोहनी गति रास। रसमय
गुन निधि जानि। सुखकरनी दुखहरनी अद्भुत दंपति प्रेम प्रकास। टेक। राजस गति तें उरसि जरति तें विभि
वा अति दुःख त्रास। रूपसरस सखियन की जीवनि सी तारा मविलास। ३२९ सीतारा मसरसरस दो उ। छाके मैन
महा न। नयन न मसती वयन न त्वसती। अरस परस रहे जोउ। टे॰। सीत कारक रिकुं मत डुहु दिसि अधर चाह अ
ति हो न। रूपसरस विपन विनय हसुख पावत अपरन कोउ। ३३०। सविगान पेखतन रफानी। सुंदर नवरसरी
ति। लाल धुलानु रमैन सि पातें रति अति मुरझानी। टे॰ दे गलवाह नाह क्रत चुंवन वंसी सिपा धरानी। दि
न कर पिय को छिडन पर वाम कोवाम सुजानी। ३३१ नई एक मूरति दंपति अध नारी सर मेमानी। रूपसरस
डन मत्य करी है नारि पुर घर अंग सखानी। ३३२ दंपति अंग गमि लानि तिलनी। अर्धनारी स्वरसी। प्रीतम अंक विरा
जत सिय नूपुलव हियां जुडली। टे॰। पिय चुंवन करते तास समपे वंसी वजी लली। दछिन कर डकर हो। ला
लकोन परिवे धुचली। ३। जवजन कजाधसो निजवास नई अति रंगार ली। रूपसरस गति ऐके अंग गादे लवि

ति

हैप्रकृत

नई मस्त ज्यों अली ॥ ३३२ दोहा ॥ वर्णन अंग गाति ये कसी करि राखी गात लाज दोउ करतें गल वाह दे दो कर वंसी वा
ज ॥ ३३३ दखिन अंग कहे पुरष को वाम वाम को मानि मो छन प्रगट दिखाइ दई त्रिय पिय सुख रस खानि ॥ ३३४
रागकौ कोटी नानदी पचंदी ॥ रीति अनोखी राजही दोउ त्रिय पिय परम सुजान ॥ लखि रतन धन वारही सख १
मन रस रूप ललचांन ॥ ८ ॥ अरस परस वनता वतीस तरा वत सुख ललचान ॥ रूप सरस मन लाव नी सो ई पावत
मोजनिदान ॥ ३३५ ॥ नई रसा लीरी तिसो सिंगारी अति अभिराम ॥ नायक पिय तहां जानकु
क्रिया वाम ॥ ८ ॥ ल अन कथनी रहस्य है जिहि जानत रसिक ललाम ॥ रूप सरस परसादि कर ओ [redacted] परनग
सकाम ॥ ३३६ मैन मजाय मुबाय ये सजनी इकरस दस जान ॥ करत मेव समाविया चहू दिस अनिर सरी है हति
स्पजमान ॥ ८ ॥ भोग धरे नाना विधी करवावत है रस पान ॥ मैन वधे तिनते तुरत इमि पुष्ट करन मधुरान ॥ ८ पी
वत आप सराहत पुनि पाव ॥ नसवीज नानरू सरस अच वाय जल पुनि दीने अत्तर पान ॥ ३३७ ॥ अथ पिय प्या ।
री के पीने का दुग्ध वर्नन ॥ लदत गौयन को पीवत है दुग्ध सी नाराम ॥ सुन तउ चरज होत है तिहि रीति सुनू लला
म ॥ ८ ॥ लदतं उनमत अति पयोदा काम धुक अभिराम दोहि तिनको पय वांवत्त दश सहस कूं वाम ॥ ८ दश स प
हस को सहस कूं पुनि सहस को शत का म ॥ शत क को दश ही दश न को एक प्रति व सुजा म ॥ ८ ॥ ना सु को अति

सी॰ र॰ चं॰ ५७

मधुर गंधित पुष्प कर गुण धाम। छीन आप क्षितिआलि ओर तत हि अतिसय नाम। ३ मिष्ट मैं पुनि मिष्ट करि कैं छा
नि चष्य सुलाम। रूपसरस पदावली दंपति हित जन काम। २३८ दोहा। इहि विधि तें पय पान करि सखियन पान
कराय मैं नव आंध सुज कें ष दै सो वन मेज सुहाय। २३९। हास्य विनोद अपार तह रीके हे नहि जाय सयन कुंज मैं
रि पुनि विनय कीन्ह तव आय २४० राग काफी धीमि तितालं। राजि नैण नींद छई जी रसियां न वरस नैं अ
ति निसि आई दूप जाम वि। ताई तन जुग जय वसन आलस के। टे॰। ताते विनय करत हम दंपति के तिलखिन चम
के रूपसरस सुनि खुर सी आजे मा जस ज नहि तदी न हमके। २४१ आली नद पिय कों करनें सिंगार नवो। नवल वसन
न सु विन वचल वि भूषन नवल अंग सजि नवल जवो। टे॰। नवल वीरि रका न वल अंतर जर नवल कुसम
रचवो। रूपसरस नवकै लक वीला खि अतिसय मन सिज सकुचि गावो। २४२ सिप गुल दे खि चले ली रसली नैन
जन हो। चटि सुख पालन वकु वाल संग लै रूप नरी गज चाल न हो। टे॰। मग आनंद करत वकु नागरि खिविद्ध
विज्ञाल न हो सयन कुंज पकु चे रघुनायक रूपसरस हित पालन हो। २४३ नागरि दे हि हाय आई सुख छवि चंद
नना वन वे। टे॰। आज सुखद कुंज मधिपत का सिय मन ना वन वे रूपसरस सखी मेव न वकु विधि दगर थला
न रि झावन वे। २४४ कवाली तिताली। सजन कुंज रच नाज नली आली वे हैं दि पाकुंज निकुंज ज जग मगै क

की

नजी

तमजापि
दआनत
वे॥ नस
तहरवि
सन्मुख

हिनपरतनवचनाजु । टे॰ । जरकसचिकपरदाचदवातनिसीवजलरखचनाजु । रूपसरसमनिजरितचित्रम्र
तितरविछातिजचनाजु । ३४५ । हाटकमयनवकुंजवनीसखी । नवरंगमनिकोकामअनूपमवेलीबूटापुं
ज । टे॰ । खगगानरचेच्रमरसुकमारिकपवनकलातेंगुंज । रूपसरसनिजरहकछविपालखिरतिचित्रम्र
मुंज । ३४६ । सुखटकेंजसुखरूपवनीआली । दीरघकाचसकलअंगदर्पकलगो । इजारअतूप । टे॰ । तापर
नईसखिनमयनीतीकरपदकंतनतजूपपंपत्रआदिनागरिमपजानूंरूपसरसरसकूप । ३४७ । कुंजम्र
नूपमजानिसखीमय । सबहिनकेकरमेमेवालखिकारफनूसजचानि । टे॰ । चारिमखिनकेहस्तकट
कवततिनमेंमेअकुलांनिरूपसरकेनचवरमोरछलगानवाद्यरमदांनि । ३४८ । रागअडाणौतालत्र । नई
जायतसखिपांसवकलकी । ब्राजमानसजालखिरघुपतिलगीकुंजावनदूलकी । टे॰ । पानदानकोअपी
कटानतिमिचवरकरतकेंजरलकी । रूपसरसकेनकारफनूसरुमेकोंवांनलियेजलकी । ३४९ । कलकीन
गरिगावनलागी । वीनतहीकपाटकलफिराइजंत्रनंत्रलेलागी । टे॰ । रीतिसंगीतरचतवकविधिसो
सुनतसकलमतिपागी । रूपसरससमूकतविमुकमांविधिकीवुधिजतिजागी । ३५० । पेखिमिपावरवोलेख
पना । सुनकुचारुपुलिसेमचविधिसोपमेसुखदयहन्नअपना । टे॰ । मोकोंअंधकूपसोदरसततविनसीतामगन

पना। रूपसरसमिथुलेशनंदनीकेश्मिलाघोरेंना ३५१ सुनतवचननागरिपियमोदन। त्याईश्रीउमा
नन्मनूपसरस्वतीन्मस्मितविनोदन। टे॰ हसिकहराजकवरसुनसुनगोदरप्रावनपरुकाकूं। रूपसरसमिथ
चिनजोमाकौंतुमचाहेप्रकताकूं ३५२ ऊ ओरानजाजिनालविमरोवाद्दारो। सियाविनमबसुखखोरेल
गतहेंसुनूकाली। समनवसनयहश्रीसुपरिकरवाहीमंगासवप्यारे। टे॰ जूजलहीनमीनकरविनकरिप
तीपद्मनपारे। रूपसरसश्रीराजकवरिविनसुसमदप्राविचारे ३५३ सुनतवचनपियजूकेवाल्पीला
मर्वेखरीतुरगामिनिछपसखीवुऊा केपटईहिगामिपजूके। टे॰ पकुवीजायप्रमादाकीन्हेमानुमवचहि
यजूके रूपसरसचवेठरनोनेहजलसुनतलेटेतियजूके ३५४ नागरितुरपियपासबैलीफिरिमोजगहन
मुटदेपनहीहियलाकाई। प्रीतमसजाखवास। टे॰ सुरनतुन्यमुखदियोवचनपुनिवोलनदेविसवास
रूपसरसनवसमपमहितदाकवनकरनकुच्चौंसजीतुरनसुनि। नूपनवसनसजेमननावनलखिरवदन
विचारि। टे॰ पटनलजावकरवोम्मुनन्मतिमोदुविमनन्ममधारि। रूपसरसलानकोनेहाऊलकनचरनम
जारि ३५५ रागरवमावचश्रुपदतालध सीतापदनूपुरमोहतश्रेमेमनकुपियामनहंसरभकजदल। चरणा
नरणावकुलागतहृडेलालचंचलचितमगहितफंदनल। टे॰ लंहंगापरकिंकनिछविछाजतलाडले केहि

सा ३५५ तहचनजेनारिसिपाकूं॥७॥

पकु

यकौ बंधन कल। रूप सरस मनाली हू दरसकौ प्रीतम जिय करि मंजत पल ॥३५७॥ इकताल श्री चंदवदन तनुदरी
सिया के रोमावली सौ नाल्सतिनी की। नाली सर तें अंमृत लै कैमान कुच हठत पियो लओनी की ॥टे॥ मदन कुल हि
वतकंचू कि जान कंच सौ हि संपुट पियजी की। रूप सरस गार हार जार सम प्रीत मन नमीन फस निधरी की ॥३५८
तालतन्त्रा। बाकुल हू चित मन कंकन पुतनालकय सामसन मधुप सरिको शुभौंहै। पौतिकी जोति मनु पिय
लुजासामता विजयबादित्रदरश्यालौ मोहै ॥टे॥ चिवुक चिन्हित मन न कुलाल कौ चित चुभौ अधर मधुर रक्तफ
लबिंब जो है। तिल कुसुम नासिका नथ प्रकासित वनीजटित सखि रूप सरस मन लोहै ॥३५९॥ लोहूं सपकीम
नकधनुष मर्कनर चित्त नैन नमोई बान अंजन सवारे। पीयकौ हीय नोई निकुलकौ नलो मदन धनुर्धी लख
बीर न्यारे ॥टेक॥ बिंदु अर्धेंदु श्री अंतर मनु विवमकरनाल समित दित श्रीवतनआरे। रूप सरस सुखकौ रघुव
नैनासु पिय पढि लिपल रहित सब करत प्यारे ॥३६०॥ तालत्रिताल। सियासिर लखि चिकुविमि लखि मानूं पुस्प
कुंभका कंककु कानमुक्ता पुतनजटित सुहान। मन कुंदकै विधि चांदिक सुंदरता औसील खिहो पञ्चनगन जानूं
टे॥ सुपंचंदकै प्रानि मौनजनसू यंबें जसे ठानूं। पियहिय कमल विकाशन कारन धरत लली गुन खान ॥
मढान। कच बैचक मैं मांग सिंदूरी सी पजान रंगु थानं। रूप सरस सो जानि त्रवेनी प्रीतम मुख चिकरवान ॥ ३

त

सी०र० जे० बसानु ॥ ३६१ ॥ सिय सोभा सो जानरजोन ॥ सीसफूल सिर मध्य विराजै मोरपटा नट दोन ॥ मनकु पिया चितवि
५९ वेश करन को जंत्र खेसु खिश्रोन ॥ मन लोन ॥ २ ॥ मृगमद आनन तें पाटी सचिगुहि वेनी छवि कोन ॥ नानकु क
नकलता पै नाग निकसा न किंचट ढोन ॥ तारु नोन ॥ रूप सरस सिर अद्भुत मानूनी लवरन सघनोन ॥ राघ
व्यातक मो ददायक का सुदोम्ह त्र रचि तिनोन ॥ मति गोन ॥ ३६२ ॥ सिय सिंगार नयो रसदानी ॥ वीर आसर दैप
नली कुं आलि बोलत बलि वानी ॥ दिपा नेह वस चली कठिनु रस खिकर पैंकर छानी ॥ घुमडानी ॥ २ ॥ गति बिले
किंग जहं सवाल सु मिनरएर प्राचूटानी ॥ सिव काई के सा जति ये नागरि चकु दिपा आति जानी ॥ मनमानी
रूप सरस प्रानमधु निसुनत मन ते मिले गुमानी ॥ चकुरि द्रष्टि ते पुनि तु जतरि कें तीन जा तिस मुकांनी ॥ चितला
नी ॥ ३६३ ॥ सिय सेव नर त्र्यलिस वजान ॥ सखी प्रमादा अंगन धारें विमला नवलर ठान ॥ विस मोहनी छरी ग
हें वदक मलाचित नव निज्ञानु ॥ सिख लानू ॥ २ ॥ विंदु वनायक आ द्रिखरा बनतन या ऊमिं लाम नु ॥ चंपक लागु
नव नैतरसम मधुंडकला नीनानु ॥ कतगानु ॥ रूप लता रूपक वांधं हिइ मिश्र लि श्र मित गिनानु ॥ रूप सरस त
आदिक ततरा वन मुख परिश्रम नडानु ॥ ठिग ज्ञानु ॥ ३६४ ॥ दोहा ॥ ऊमिश्र वन सिय कुं लखी दपार यरा जकि प्रथमा
शोर प्रथम मिले मन तें नमगि रहेउ ष्टि पुनि जोर ३६५ अं कमिल नवल लालन की चाह तई जिय प्रेम सिं लनी की

मिलनि न
ठविचि

धुंमडोहृदयदेखतसिपककछु दूरि ३६६ रागमलारसोरठिधीमतितालो । प्यारीजीरेघूघटनीकीनथझ
लके । मुसकनिमंदचवन निवारीकीतातेंकछुरलके ३ । मेन नरीमैनानेननकीमनकुविशिखपलके । मोहक
मानविंदुअधरधेदूअहिलीमसमञलके । ५ लखतविवशनयेराजकवरवरआये उठिचलके । खमा । २ कहि
पसरसमुखराहिलीनीढलके ३६७ उगामगोडोलतदोनरूपकीजहाज । मयनकुंजसुखसिंधुमध्यमानजुअन
कललीरघुराज । टे । मदमातेअधरामृतरसवसकुकिमातेगततलाज । रूपनल मनंमंककुमकेरलकतन्न
लकसमाज । १ दुपटाछोरअोरदुकूलटकतसोछविलंगरछाज । रूपसरमसेजांरसविलसततरमिकनवेलि
रताज ३६८ जानकीराघवदोनसेजविराजे । नरकिरहेछविजालपरस्परलखिरतिमन्मथलाजे टे । युथा
कारनवलिहारतहिन २ धनिरचेविधनाजे । नागफहोहमरोमुतुमजनीरूपसरसहिगछाजे ३६९ प्यारीप
रोदोनरसवसलूटतरंग । अधरामृतछकिपानकरत र ज नगहिविवसअ । नंगा । टे । भुजनरिअंकधरतपि
वप्रियकुलालतचोजनसंग । रूपसरससखियानविकुलमतमोजअसममसरअंग ३७० रागसोरठितालये
कसुघरदोनसुरतकेलिवधराजे [illegible]
[illegible] । १ कोककला
दसननवसतलगिरहजपरसरमोदसिंधुलहिछाजै टे

कुक

सी० र० वं० ५०

मन्मतिप्रवीणाकें हिंनजात । प्रतिलाजें रूपसरसहारकलतिकालपटीतमालद्रुमनाजे ॥ ३७१ ॥ मसमसरससरस
रसदाउदीर कौकलामैकुफूलनप्रवेलनसुखमारलताकिरती टेक ॥ कुलवलअकथकरतनागरकौन्नावनदु
दुनिसीर ॥ रदलदसदनै नपलरहेचढिसतसिजाजन्मसीर ॥ [illegible] रूपस
रसदासिनिजनुघनमैछिपीजमंकनथीर ॥ ३७२ ॥ सेवतसखिपंखादिकलियेसाज ॥ [illegible]
[illegible] सिवनपहेअंगअंगकीस
जानकुवसुसंखाज ॥ २ ॥ सजाउपरिलायविराजेसजोमंतरिनसाज ॥ रूपसरससखिपापपावतरसवजवाढन
काज ॥ ३७३ ॥ सखीपपपावतप्रियपियकौं ॥ ताकेमधसुगंधससानेऔछिमिश्रीयकौं ॥ टेक ॥ विविधिनातिके
मेवाउरेलेवनहोछिहिकौं ॥ कांतिवधेरसरूपवीर्यतुरपीवनहोतिहिकौ ॥ ॥ पावतआपपवादनसखिपनतर
थ्योकैंअंग ॥ रूपसरसन्मावमनकरिवारीअंतरलेनसुरंग ॥ ३७४ ॥ तिताल ॥ नूटतसखिपाइहिविधिरंग ॥
टरननहोछिनपेककतकुतजिरहतसियेपिपेसंग ॥ टि ॥ सपनकिपटंपतिसजापरिचितवनिजरीअनंग
रूपसरसनागरिचकुटि [illegible] चितनिज २ सेवतअंग ॥ ३७५ ॥ सपनतैसेवतन्मालिडुजिंताति सज्जैतिकटरहतहै
केतीकेनमावंतकेउंजाति ॥ टिक ॥ केनपरदनकेनथंतनीतिकेनजानरघटसों ॥ तिकेनिजकुजनमन

ता ताग
घलखि
नकीरह
जिवनेन

नकरतहै हृगण २ केसुखपाति । कि उवतलाल लगावती सोइ रस के अस नार वरसाति । रूपसरस के रूप की करत नके उप
न्का ठिगहरषांति । ३७६ । षोडस सेवत हैं चंद्रकूं पास । वाह पुनी तन्म्रति मिष्टनी लखि रगावत है रस रास । टेक ।
हे माता नलेत चित्र २ भेस खिप्रसाद सह तार । चंदकला दीना करली न्हीवा ध्या कुरस सुखकार । १ । वजत म
दंगरसीली गति मडु तैसु लोचना वाल । चंपकला सखि दूरिन त्रूणि मेका ढतनूपुर चाल । २ । सी तारा मअव
वनरि दोउ वतरावत मृदु वात । रमा पंतरी अन्तर रसमाती मुरलीका अमरखडात । ३ । सिंधु वरन पलो टत विमला
कमला करस हलात । वाजनावती विरद मोहनारूप ललार सघात । ४ । नांचत पद्यांग सुरव अगोल रनमरए
जुसरा है । वरै रोहन्नालापत मधुरी सुनत चित्रकूं याहै । ५ । दंपति चित पीक हर्मिलाउ ले क नकल ना दि कपान
रूपसरस आन्क्तरत्ना वतलाति । जुगल सुजान । ३७७ । सिय पिय वतरावत रस वात । रूप छवी लोनि रखि प
रस्पर करत अनोखे घात । टे । अधर पान के समय परसीली वेसरि अधिक कंपात प्रीतम पातेजु कुंडावनरद छ अधर गा छवि तकं
द मानकू हाहा खात । १ । नासा मनि मुक्ता परि होरहि गुंजा सी छवि वांनि नयन ओर की अमितजोंन कूंहोए अ
रुन तामांनि । २ । अवनन मे मोती डोलत हैं ताकी असछवि जेनी प । रूप सरस आवत निरखे दृग मति कछु वेषे मोय
३७८ । ठूमरी । सियप्रीतम वतरावे । वकृ विषि के चोजन लावे । अरस्पर मनु जन्त रिदोन चित्त वत छवि वदि कि

सी-र०चं०
५१

कसोवै। टे-। प्राणपियारीवाक्यमधुरतवसमअनुपमानहिंपावै।नाकनटिनमेंअद्भुतरंगसोनवँजावै।
ताकेकोमल्लकरतेअतरअतिमीठेदरसावै।तेऊजगतकठोरअवनमेंतुमरेवचमुखछावे। २ गंधितअमसमु
रतकुसमनकीनवलसुगंधलजावै।रूपसरसवानीमहिमाजियजावतकहतनआवै। २७५ ।सुनियेसियनी
तिकहानी।जहलखेमानकीहानी। [illegible] ।वेठुपतकैंनहमरणकहोकीरहैजायधरठानी
टे-।नवनेनातलखिकैंकुरंगवनजायरहेअरगानी।करितेनजिहरिसम्पाकंदरापापमानकीग्लानी। १ करि
कुंभनगतिहनीनितंबनतेचक्रदिपाविद्यानी।मानसरोवरहंसरहतनहिंआवतनवगतिकानी। २ मुल्पहा
नमुखछविकंजजलअमरमालअज्ञानी।रूपसरसवेलीनितुअगाथिपतनठकेपासपानी। २८० ।सुनिपेमम
प्राणपियारी।चलअंगछटाअतिनारी।सुबरणखरणेनउपावकभेदहतयहेनसमतारी।टे-।लखिकेंदंतपं
क्तिदाडिमकोहृदयफट्योनजितारी।सुविशालवज्जवारिसुताडुरिअसरदकौंतिअपारी। १ ।तुम्हरेमु
खकोंपेखिविधाताससिपयासिधुनिहारी।तोलननगपोत्रहृदलखुजाननखरिकैंपचनतलनारी। २ ।अहहडे
तारापरवेंडरतऊँनचारी।रूपसरसमुखगौरवतातेदतीरहोचतिजेरी। २८१ ।सियकहसुनुप्राणपियारे।रस
रसिकलालवेनहिंवारे।विधिमुखकीनहपदपैयाकोगुननागरतुमतिधारे।टेक। [illegible]

पोहल
कनर्ने

श्रीमद्राउ

...ता...पना

जोर पुनि मंडल वंद्र निहारे मीरवावे ... सिरोमनि ... नारे । त । वसुंदर नाम मन्मथ तो लीमम
द्रग धरि पलरावे कुटिल नई नकुटी मोड डारु सहित मकी गुहताने । २ । बोलैतसु निज भिलई लाय हियनिजसु
खबीरी धारे । वदन नये पुनि याहि लाडली गाहो अधर अरुनारे । ३ । मीलतादहो पलई ताहि सिपच्या रिझा
ए करिया रे रूप सरस मनु अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष मिलि यारे । ३८२ । दोहा । सीताराम विहार अति कह्यो कौं नये
जाएँ [illegible] आप सुस कलुक वरनं हियहुलसाय । ८३ । रसिक नकैहियमें वसे कहिवे मनहि आतमे अति अ
ल्प वनाय कै आषी जनमुदद्रात । ३८४ । [illegible] सीय लिताली रागानुज किरतर सो ले रसमय वात । ६ हि वि
क्षि सुनि अलि वलि जात । आलस अंगनि छोटी नन अंग गाताते कछु तुतलात । ८ । कपर पलक लगत पलक मे
पेख त नहीं अघात । लाडलडावत लाल ललनी कौ लखि नागरि हुलसात । ५ । लै तक मोड प्रिया लालन के अ
टपट वैन सुहात । नये सनिंद वदन सिय राघव रूप मर समि लि गात । ३८५ । मोचन क्षु वीलै रंग अरे । अरस प
रस अंग अरे । होय अरु नारी खर सेज़ुरि विलासन रंच करे । ६ । नील पीत अंग रंग मिले लखि कह सखा हे र
रूप सरस तन किये दिवस है निसि पुनि येक सरे । ३८६ । करत मधुर मुसकि वात । निज रहसि अधिक जनात । के
नकहै नेन अनूप मद नके जो ढेरै वसु विकात । ८ । वदन अपर मारत वे मरि है । हा नन सवत हलात । वाला पेक

सी०र०जे०
५२

नागरी कारी अलकैं चितउ सिंजात । ७ । जु कि उरत नंबोलनत दे उक नापत चिंनफसात । रूपसरसदिपिग्रिमुम-
किवचनमड्ठ किपोकरेजाहात । ३८७ । मकलसखाजनइहि ग्रंगति । निजरचितुचिवतलां ति । वाकपालक-
हधोरैबोलड्ठस्पानकसवहकाति । टी० । सोवतहैं सियपियजियप्रमुकोपहैं कुंजयेकां ति । रूपसरसग्रई चु-
ष्पहरखिहिपसमयजानिकुलसों ति । ३८८ । रागविहाग ताल ५ । पंखननना गरिछ विरस माती । दरशतनिति-
न ऋतरसतेउरल्यातिपरसतऋंगनहरसवठाती । टी० । पहल्मदलुनगतिर निकिन२ प्रति । देखन्न हुलसति-
मादचठाती । रूपसरस पारीटरै० न ... टारीनगी ... नु पारी विलगान-नाती । ३८९ । श्रैसैं विलसतरंगस-
रतीसद्व । जीवनजरीसिपरा ... मरसनरितिहि ज्ञानधरिचहतनकलुकव । टी० । जुगलविपेगासुहातनक्कि न-
श्ररजनविनग्नलचरवत पहमुतलव । रूपसरस ... । कहि पेक हंत कवरित अतिग्नति कहलयकितन-
व । ३९० । ऋटेतितालं० । लालनकौंनवमुपनजपो । सपाविन ... विरहल्यो । चिप किउठे अकुलायपतिहा-
ल्लिनदेवतड्ःखपायो । टी० । कीनसुरनवीनादिकवंजनमुखनहिजानतवेयो । रूपसरसप्यारीति ऋंकभुजु-
कि मुखलेश्व ... लीयो । ३९१ । मगंट श्रादिकचंदनजानि । सियकरसोनितमानि । प्रथमविहारसमपप्रीतमनेचर-
चितकेयेमवांनि । टी० । तहांग्रमरइक श्रांतिविराज्यो गं सहैनरसदांनि । लालरविपियजू । श्रससमतमांनीकांमदपो

५२

सरतां नि । १ पंखमात्रअवसेषरही मनु सव प्रचिस्पो हियढा नि । रूपसरसराकत्वसमुझि दुमिलीन्हीनुरतज
गानि । २९४ । सियहि जगावत पियकरि कैलि । अधर निअधर न मेलि । मुखलखि र नपजावत सुखअतिनरि ।
अंकन हियजे लि । टेक । पयधर कर धरि धरत हरत पट रंजंघ जु रुकेलि । रूपसरस सियचौंकि परी अरसानी गवे
गहेलि । २९४ । करत दोउ रषिकरषी नीचात अलसानी सियप्रातु । कोक विद्या अरु कोक विदु सवररचत अनो
खघात । टेक । सुरतकेलि तजि रति मन्म थल जिसखि पनमनदु सा त । रूपसरसरस अकथ महा है वरनू का पैंजा
तु । २९४ । रागपरजाति तालेआदो विविधे तंतिरसमाणतदोउ । सेवत है चतुरु द्रिपुणमवीजिन विनजानततन
हीकोन । सकल प्रवीन नवीन प्रीति गति जुगलअकथ रति जोउ । रूपसरस निसि डरी वकुत मन नमयन नचाह
तोउ । २९५ । छुई अलसानि सिपाके तनमें । टेगरवांह नाह द्रिपुणकु कि रही नैना भिचत खुलन छिन छिन में । टे
क हत नकहू कहि जातकहू ही मो न आधी निकसत वचनन में । मानकुमंत्र पढत मोहनि केनपे विवसा पिय परस
अवनमें । १ । कंतद छिनकरि चिवुकगही तिपद्र ष्टि ठई है प्रिया वदनमें । रूपसरसर सिपासोवत तनहि नीदनरी देख
नकी मनमें । २९६ । गानसुनत मातेदो उरसमें । वीन मृदंग कीन मधुरबाजन नावत कोनतननतसरचसमें । टेक को
तलेगात अनूठ प्रभु तरतानवनावत दंपति जसमें । कौक शिअवन मगन होवत है कोक चोजनि का सतितमें । १

सी०र० चे० ५३

करतवातप्रीतमप्यारीकेनैननयेआरसकेवसमैं। रूपसरसदो उछैलछवीलेंआंकरतरेपोठेआपसमें। ३९७। स
खियननरसखिलापतिरसके। तेहवयारिऊकोरितनिसदिनउछतआनंतलहरितटवसके। टेक। विहरतविहर
वनवसुयामनतनछिनभ्रतिटेखनचसके। ताहूमेंआतिसुखप्रदनाषतमिलिविपवतननगरऊनिसि
आंगनपोढनआलसके। १ ऐसेंबोलतसोछविपवतननगरऊनिसियपियआयसके। रूपसरसहोयम
त्तपरस्परवर्ननकरतीदंपतियसको। ३९८। पद्य जानकूप्रहिविधिरहनिसदावसुयामसखिनकीछिनअर
हूनहिकरतओटसियरामआखिनकी। तिनकीमहिमाकहैंकौनआसकविजगमांही। सेषशारदाआजा
जह नेसमगुसादितजाही। मेरीमतिअतिअल्पहैसोगुणसागरिजानि। सियरामप्राणप्रियातिनविनधकजिय पे०-प्रति
मानि। ३९९। श्रीसर्वेश्वरीचारुशीलविनकमेंछिनछिन। महलनमिलैनहिकाकृतामुकीकृपाद्रष्टिविन। आम
तको टि सियरामसखीदासीगुणसागरि। तिहिअनुकूलसवैवर्नहिआतिनागरि। सोकरिदयाकटाछ कैं
स्वकियकरि जस मोहिराखोनिजठौंआप। रूपसरसवसुंदरि दुकलेपानविद्युलितान। ४००। ताकेचरणसरोजगंधपागनम पामसम उत्पालरम
सं नजिननके। विविधिकरसुकनारदादिगामतजसतिनके। निंदतजोगविरागज्ञानयेव्रह्मविषणारद। ४०१। पाम हिकरकर
रसरहत। संभ्रनकेपारद। मोरसरसिकनकेसंगातेमुविमिपावेको। ४। रूपसरसजापैंकृपासियारामकीहैमै तिजरि॥

छके सु नि नलकप्रति टल

न जिहि

४-२ सीतारामस्वरूपअनूपमवेदकथितसो। मेरेहियद्रगवचनरहोनिश्चलहोयथितिसो। तिनकेसंगासंग
रहेछिनटरैनयेक। जनकललीअवधेशसुवंकोतत्वविवेकाँश्रुतिअरूस्मतिवर्ननकरतचाहतपर्मप्रवीन।
[illegible] रविलता ४-३ सीतारामविहारवेदतेपारखवामें। नेतिकहियकितेसकलनके
ऊनहिगामें। किरजाँनैरघुवीरकृपातेनिजमतिपावन। वर्ननकीन्हेप्रथक२ हितबोधसुहावन। मुँकजुसंडिता
रदगणपद्मासनअगस्थरुसंजु। रूपमरसबनैसादिछुहिरसमेरतनिरदेसु। ४-४ इनकीहूमतिथाकितजहांसो
कहितसकांही। ताहिअल्पमतिकैहूकहापहमसपनाही। परमोहिकोंनईरूपलताआपुसरसदानी। कछुक
जावनारीतिकहोपदबंधसुहानी। सोसिखरिवर्ननकरीअष्टयामरसकोलें। रूपसरसहियमेजथाततथावदी।
सुखवेलिं ४-४ सीतारामरहस्यचंद्रिकानामयाहिको। नवनप्रथमजोकह्योजानिआधारज्ञाहिको। कनक
रचितसोसुघरतासुमेंविचवरखानं। वकुदिशालघुरहेचंद्रिकावतपहिचानं। हाटकमयअसेवनीप्रथम
चंद्रिकाँरूप। सरसतामेजरेअवसुनिरतअनूपं ४-५ रवामावडजोरहोकद्योइकताकेमाही। जामेजरिये
व्रहद्रतलपहनवलसुहाही। करतजावनांकोप्रकासपहरतअरूपम। ताहिनामजावनाप्रकासपाकोसुख
रूपम। चक्रदिशाकेलघुरतनमो। विवादिहूंओर। रूपसरसवर्ननकियोयहैललितचितचोर। ४-६ बेहा स्र

अर पुष्टिवित्ति गुनि॥

सि॰रा॰वं॰ ५८

पलता आयुस दई अल्प नावनागा अंक तसुनि हर्खे सुमि कहीं कछु यकग्रंथ वढान॥ ५७ ना हीतैं दोष हरकी
के [illegible] ॥ सयननलकलघु जानि। वक्ररि कीन्ह कछु ग्रह हदसा मम यादि कपहिचानि॥ ५·८ त्रि
वपुनि आप मगायेउ कनक नवन निजकुंज। तातैं सो प्रसमा भक्ति पसुनं रसिक मतिपुंज॥ ५·९ मीतन्पारके
रसरसिक तेसुनि हे मन नाय सूक्ष्म चूक कछु पाय। सो सब लेहि वनाय॥ ५१०॥ वहजी चके करन मे परत हि नर्के
न रवाहि। तातैं विनसंबंध केवाचि न सकैं जु याहि॥ ५११॥ दिव्य स्वरूप विहार यह यहां न संभ्रम तेसरूप सर सम
त्प वजिहि ताहि विमल आवेस॥ ५१२॥ इति श्री सुताराम रहस्य पंचं डिकायां रूपलता आज्ञा रूपसरस विरचितायां
नावनां प्रकास वर्णनो नाम मध्य गत रत्नो [illegible]॥ सुभं भवतु॥ मिति पोस सुक्ल ८ रविवासरे। संवत् १९२२ के

द्वितीयो विश्रामः समाप्तः॥२॥ श्रीरस्तु॰ कल्याणमस्तु॰

रूपद्वितिय प्रकाश सी॥